

SPS

891.2 M 26 S



6543

76

H

Net
No 10

~~Stai-dur-pama~~

Stai dur pama
y

Madevi prasad

N.K.P. Licknow

1879

144

6543

S 891.2
M26S

Stridurpana

Barda Hasti

No. 76



21

C. No. 28945
273-13

DA
31.01.23

5

6543.



जिसमें विद्यानुरागी लड़कियों और स्त्रियों का
 परमार्थ साधन और गृह कार्य की प्रवी-
 राता और निपुणता और उन्नत वात्ता
 लाय का चर्चन अति सरलता और
 सुगमता सहित किया गया है

काश्मीर परिदृत माधव प्रसाद एक स्टूडेंट्स कमिश्नर
 जिल्ला मुल्तापुर मुल्क अवध प्रणीत

लखनऊ
 दूधरी चार
 मुन्शी नवलकिशोर साहब के यन्त्रालय में
 मुद्रित हुआ ॥

अक्टूबर सन् १९७६ ई०

विशेष

दूसरी महीने प्रत्येक वर्ष मनु १८७८ ई० पर्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिए तैयार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफायत से देकर नियत हुआ है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह अपने खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर कीमत का निर्णय कर लें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
व्याकरण और ज्योतिष। सिद्धान्त चन्द्रिका लघुकोश मुदी मुहूर्तचिन्ता मरिग सारिणी श्रीप्रबोध पाराशरी सटीक मुहूर्तगणपति सङ्ग्रह शिरोमणि जातक चन्द्रिका लघुजातक भाषाटीका सहित भाषाजातक लङ्कार संस्कृत जातक लङ्कार जातक भरण मुहूर्तदीपक होरा मकरन्द मुहूर्तचिन्ता मणि मुहूर्तमार्तण्ड वैद्यक शार्ङ्गधर सटीक वैद्यजीवन वैद्यमनोत्सव अमृतसार बड़ी	अमरविनोद जगदविनोद श्रीषधिसङ्ग्रह कल्पवल्ली निघण्टु भाषा वैद्यदर्पण रामविनोद कोष और इतिहास ॥ शिवसिंह सरोज सामुद्रिक गणित कामधेन कमीशान बड़ोदा शब्दार्थकोष अमरकोषतीनों काराडु- भाषाटीका सहित अमरकोष प्रथम काराडु अनेकार्थकोष अजयित्वास दुर्गाष्ट सटीक दुर्गाष्ट मूल अपराध भञ्जन स्तोत्र महिम्न स्तोत्र श्रीगोपाल सहस्रनाम शिवाचन गङ्गालहरी	भगवद्गीता भगवती गीता श्रीमद्भागवत सटीक तथा अष्टम स्कन्ध हनुमान वाहक सारव्यतत्त्वकोश मुदी सुरसागर टेपका ब्रह्मसार परमार्थ सार प्रेमसागर सूरसागर राग प्रकाश भक्तमाल अवध व्याज कथा गंगाजी रामायण टेपकी रामायण जिल्हानदी रामायण तुलसीकृत प- त्थरके छापे की सतसई रामायण कवितावली रामायण गीतावली रामायण रामायण दोहवली मुन्दरी चरित्र

6543.

Price R. 1/4/-

स्त्री दर्पण ॥

— * —

जिसमें विद्याबुरागी लड़कियों और स्त्रियों का
परमार्थ साधन और गृह कार्य की प्रवी-
णता और निपुणता और उत्तम वार्त्ता-
लाप का वर्णन अति सरलता और
सुगमता सहित किया गया है ॥

— 0 —

काश्मीरि पण्डित साधव प्रसाद साहब ऐक्स्ट्रासिस्टेन्ट कमिश्नर
जिल्ला सुब्तांपुर मुल्क अवध प्रणीत

लखनऊ

दूसरी बार

मुन्शी नवलकिशोर साहब के यन्त्रालय में
सुद्वित ऊया ॥

— 0 —

अक्टूबर सन् १८७१ ई०

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

भूमिका ॥

0

धन्य है उस परमेश्वर सर्व शक्ति प्रभु को जिसने अपनी इच्छा से इस संसार को प्रकट किया जिसको देख कर बड़े बड़े ज्ञानवान और ज्योतिषी और पण्डितों की बुद्धि इस संसार रूपी सागर की रचना में डूबती और उठलती है और बार बार पार नहीं पाती और यथार्थ में गुणानुवाद और प्रशंसा के योग्य वही परमात्मा है जिसकी माया के चरित्र अद्भुत और चित्र विचित्र भासते हैं और बड़े बड़े बुद्धिमान उसके यश कीर्तन में नेति नेति पुकारते हैं यह जगत उसका प्रकाश और वही इसका प्रकाशक है उसने अपनी कृपा से कदाचित् जिसके हृदय में सूर्य रूपी ज्ञान उदय कर दिया उसको तो निःसन्देह इस प्रकाशका चमत्कार ऐसे माया रूपी अन्धकार में सुझाई दिया नहीं तो बड़ों ने इसमें खोज किया परन्तु आदि अन्त न पाया उसकी लीला की गति अपरम्पर है वही सब का कर्ता है अब हमको भी उचित है कि अपने परमात्मा परमधाम के चरण कमल में शीस नव बें और मन बच कर्म से ज्ञान रूपी ज्योति के प्रकाश होने का अपने हृदय में उससे काँक्षा करें कि वही सब जगत के मनुष्यों का अज्ञान रूपी सागर से वेड़ा पार करेगा लिखनेको प्रयोजन इस पुस्तक के और कारण इस कहनावत के कहनेका यह है कि इन दिनों में गवर्नमेण्ट इण्डिया की अभिलाषा इस बात पर विशेष करके है कि स्त्रियों को भी लिखना पढ़ना सिखलाना और सुहाग बुद्धिसे शृंगार देना चाहिये और मेरी बुद्धि में भी स्त्रियों के पढ़ने लिखने की आवश्यकता इसलिये विशेष है कि वे अपने धर्म कर्म की बातों से जानकारी प्राप्त कर घरका बंदोबस्त अच्छे प्रकार से कर सकें और नन्हें नन्हें बच्चे जब तक कि पाठशाला नहीं जा सकें उनको बातों बातों में लिखने पढ़ने की बातें सिखा सकें कि उस से उन बच्चों को पढ़ने के समयमें बड़त लाभ हो परन्तु बड़त से मनुष्य हमारे देश के स्त्रियों का पढ़ना उत्तम नहीं समझते विद्या ऐसे पदार्थ का स्त्रियों को प्राप्त होने में अच्छा नहीं जानते इस जगह उनके संदेह व शंका का खण्डन करना नहीं चाहता परन्तु मैं उनसे यह कहूँगा कि वे प्राचीन कालका उत्तान्त पुस्तकों से देख लें कि जब हिन्दुओं का राज्य था स्त्रियों के पढ़ने लिखने की कितनी चर्चा थी कि गान्धारीजी जो राजा धृतराष्ट्र की रानी और कौरवों की माता थी लिखने पढ़ने में बड़ी प्रवीण थीं व्यासजी ऐसे ऋषि उससे सम्मति लेते थे अखीर समय में राजा भोज की रानी लीलावती बड़ी पण्डिता हुई जिसका भोजप्रबन्ध में विस्तार सहित उत्तान्त

लखा है प्रयोजन यह है कि अगले समय में बद्धत पढ़ी लिखी स्त्रियां होंगी कि जिनका वृत्तान्त जो लिखा जाय तो एक जुड़ी मोथी बन जाय कई वर्ष ऊँचे कि मैंने एक पुस्तक उर्दू भाषा में देखी जो किसी सुसल्लान डिपुटी कलक्टर ने लड़कियों के शिक्षा के हेतु बनाई थी उस पुस्तकके देखने से मुझको प्रकट हुआ कि यह पुस्तक इस प्रकार की बनी है कि कदाचित् स्त्री अथवा पुरुष उसको देखे तो अलबत्ता जाने कि स्त्रियों का पढ़ना कितना अवश्य है और पढ़ी लिखी स्त्री किस तरह अच्छे प्रकार से घरका बन्दोबस्त कर सकती है परन्तु वह पुस्तक जो कि उर्दू में है और बोल चाल और सब बातें उसको सुसल्लान औरतों की हैं इसलिये मैंने सोचा कि जो इसी ढंग पर नागरी भाषा में ऐसी पुस्तक लिखी जाय जिसमें हिन्दुओं की लड़कियों का वृत्तान्त हो और सब बातें हिन्दुओं के अनुसार हो कि उत्तम घराने में बड़ा लड़कियां नागरी पढ़ी ऊँची होती हैं तो ऐसी पुस्तक के पढ़ने से अत्यन्त उनको लाभ और निर्मल बुद्धि प्राप्त होगी उससे अनेक प्रकार का सुख भोग करेंगी धन्य है उस परमात्माको कि जिसने यह अभिलाषा मेरी पूर्ण की और यह पुस्तक समाप्त हुई नाम इसका मैंने स्त्री दर्पण रक्खा ॥





स्त्री दपण ॥

— * —

जो मनुष्य जगतकी व्यवस्थापर कभी विचार नहीं करता उससे अधिक कोई बुद्धिहीन नहीं है विचार करने के लिये सृष्टि में अनेक प्रकार की बातें हैं परन्तु सब से उत्तम और अवश्य मनुष्य की दशा है विचार करना चाहिये कि जिस दिनसे मनुष्य उत्पन्न होता है जन्मसे मरण काल तक उसको क्या २ बाधा आगे आती हैं और किस प्रकार उसकी दशा बदला करती है मनुष्य की अवस्था में सब से अच्छा समय लड़कपन का है इस अवस्था में मनुष्य को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं होती माता पिता अति प्रेम से पालते हैं और यथा शक्ति उसको सुख देते हैं सन्तान के अच्छे भोजन और बख से माता पिताको आनन्द होता है बल्कि मा बाप सन्तान के सुख के कारण अपने ऊपर बड़े २ लेश उठाते हैं जो पिता होता है मजदूरी मेहनत से कमाते हैं कोई उद्यम करते हैं कोई व्यापार कोई नौकरी गर्ज जिस प्रकार से बन पड़ता है सन्तान के सुख के हेतु धन पैदा करते हैं और जो माता होती है अगर बाप की कमाई घरके खर्चको अट नहीं सकती किसी काल में द्रव्य के हेतु आप भी मेहनत किया करती हैं कोई माता सिलाई करती है कोई गोटा बिनती है कोई टोपियां काढ़ती है यहां तक कोई दुखकी मारी माता चर्खा कातकर चक्की पीसकर अपने बच्चों को पालती है सन्तानकी ममता जो मा बाप को होती है बनावट और दिखावट की नहीं होती बल्कि सच्ची और अंतःकरण का स्नेह है परमेश्वर ने सन्तान की ममता माता पिता को इस कारण लगादी है

कि उनका प्रति पालन होय बाल अवस्था में बच्चे निहायत
 बेवश होते हैं न बोलते न समझते न चलते न फिरते अगर
 मा बाप प्रीति से पुत्र को न पालते तो बच्चे भूखों मरजाते
 कहां से उनको रोटी मिलती कहां से कपड़ा लाते और
 किस प्रकार बड़े होते मनुष्य पर तो क्या पशु पक्षियों में भी
 बच्चे की ममता बल्लत है सुर्गी बच्चे को किस प्रकार से
 पालती है दिनभर उनको पंखों में छिपाये बैठी रहती है
 और एक दाना भी अनाज का जो उसको मिलता है तो
 आप नहीं खाती बच्चों को बुलाकर चांच से उनके आगे धर
 देती है अगर चील्ह या बिल्ली उसके बच्चों को मारना चाहे
 तो अपने जीव का शोच न करके लड़ने और मरने को तैयार
 हो जाती है गरज यह छोह और प्रीति मा बापको इभी-
 लिये परमेश्वर ने दी है कि छोटे से नन्हे २ बालकों को जो
 इच्छा हो अटकी न रहे लुधा के समय भोजन और प्यास के
 समय पानी सर्दी से बचने को ऊनी कपड़ा और अनेक
 प्रकार की सुख की वस्तु समय पर मिल जावें देखने से यह
 बात मालूम होती है कि यह निर्मल प्रीति उसी समय
 तक रहती है जब तक बच्चों को जखूरत और एहतियाज
 होती है जब सुर्गी के बच्चे बड़े होजाते हैं वह उनको परों
 में छिपाना छोड़ देती है और जब बच्चे चल फिरके अपना
 पेट आप भर लेने के योग्य होजाते हैं सुर्गी कुछ भी उनकी
 सहायता नहीं करती बल्कि जब बड़े होजाते हैं इस प्रकार
 मारने लगती है कि मानो वह उनकी माता नहीं है मनुष्य
 के माता पिता का भी यही हाल है जब तक बालक बल्लत
 छोटा है माता दूध पिलाती है और उसको गोद में उठाये
 फिरती है अपनी नींद हराम करके बच्चे को थपक २ कर
 सुलाती है जब बालक इतना सयाना हुआ कि वह खिचरी
 दाल चावल खाने लगा मा दूध बिल्कुल छोड़ा देती है और
 वही दूध जिसको बर्षों दुलार से पिलाती रही कठोरताई
 और कठिनताई से नहीं पीने देती कड़ुई वस्तु यनों पर लगा

लेती है और बालक हठ करता है तो मांती और घुड़-
कती है कुछ दिनों पीछे बच्चोंका यह हाल होजाता है कि
गोदमें लेना तक नागवार होता है क्या हमने अपने छोटे
भार्य बहिन को इस बात पर मारखाते नहीं देखा कि मा
के गोद से नहीं उतरते हैं और माता रिस करती है कि
कौसा कपूत लड़का है कि एक जणसाव को गोद से नहीं
उतरता इन बातों से यह मत समझो कि माको प्रीति नहीं
रही बल्कि हर एक अवस्था के साथ एक नये प्रकार की
प्रीति होती है सन्तान की दशा एकसी नहीं रहती आज
दूध पीते हैं फिर खाने लगे फिर प्रांओं चलना सीखा जितना
बड़ा बच्चा होता गया उसी प्रकार प्रीति का रंग बदलता
गया लड़के और लड़कियां पढ़ने लिखने के लिये कौसी र
मारे खाते हैं अगर ना समझी से बच्चे न समझें परन्तु मा
बाप के हाथों से जो लेश कि तुमको पढ़ांचे वह अवश्य
तुम्हारे अर्थ के लिये हैं तुम को संसार में माता पिता से
अलग रह कर बहुत दिनों जीना पड़ेगा किसी के मा बाप
जन्म भर जीते नहीं रहते अहो भाग्य है उन लड़के और लड़-
कियों के जिन्होंने मा बापके जीतेजी ऐसा ऊनर और अदब
सीखा जिस से उनके जन्म भर सुख चैन में गुजरे और बड़े
निकट भाग्य हैं वह लड़के या लड़कियां जिसने माता पिता
के जीनेकी कदर न की और खुब मा बापके कारण मिला
उसको अकार्य किया और ऐसी अच्छे सावकाश और
निश्चिन्त के समय को आलस्य और खेल कूद में खो दिया
और जन्म भर दुख और लेश में काटा आप दुःख में रहे
और माता पिता को भी अपने कारण लेश में रक्खा मरने
पर कुछ अवश्य नहीं शादी व्याह जये पीछे औलाद मा
बाप से जीते जी छूट जाते हैं जब औलाद जवान होती है
मा बाप टढ़ होजाते हैं और आप पुत्र के आधीन होजाते
हैं और इसी से जवान जये पीछे पुत्र को माता पिता से
सहायता नहीं मिल सकती बल्कि पुत्रही को माता पिता की

सेवा करनी पड़ती है पुत्र और पुत्रियों को उस समयपर बड़ा विचार करना चाहिये कि मा बापसे अलग ऊँचे पीछे उनकी अवस्था किस प्रकार बीतेगी संसारमें बहुत भारी बोझा पुरुषों के शिरपर है संसार में खाना कपड़ा और नित्य के खर्च की सब वस्तु द्रव्य से मिलती है और सब खटराग द्रव्यका है स्त्रियों को बड़े आनन्दकी बात है कि बड़धा कमाने और द्रव्यके पैदा करने के लिये उनको कुछभी परिश्रम नहीं करना पड़ता देखो पुरुष उद्यम के लिये कैसे २ कठिन परिश्रम करते हैं कोई भारी भार शिर पर उठाता है कोई लकड़ी ढोता है सुनार, लुहार, ठठेरा, कसेरा, कंदलागर, जारकोव, तारकश, सुलझासाज, सलमा सितारे वाला, विदुर साज, मीना साज, कलईगर, आईना साज, जारदोज, मनिहार, नातबन्द, नगीना बनाने वाला, कामदानी वाला, सानगर, नयारिया, बढ़ई, खरादो, नारियल वाला, कांघी बनाने वाला, बसफोड़, कागजी, जुलाहा, रफूगर, रंगरेज, छीपी, दस्तारबंद, दर्जी, नैचाबंद, मोची, सुहरकन, संगतराश, व्यामार, कुम्हार, हलवाई, तेली, तमोली, गन्धी वगैरह, जितने उद्यम वाले हैं सबके कामों में बराबर का श्लेष है और यह श्लेष द्रव्य के हेतु पुरुष सहते और उठाते हैं परंतु इस बातसे यह नहीं समझना चाहिये कि स्त्रियों को सिवाय खाने और पीने और सो रहने के कोई कार्य संसार का ताल्लुक नहीं है बल्कि गृहस्थी के बहुत कार्य स्त्रियां करती हैं पुरुष अपनी कमाई स्त्रियों के आगे लाकर धर देते हैं स्त्रियां अपनी बुद्धि से उस को ऐसे यत्न और सुवर्द्ध के साथ उठाती हैं कि सुख के सिवाय इज्जत और नाम पर दाग लगने नहीं पाता पर अगर विचार से देखो तो संसार खूबी गाड़ी जब तक एक पहिया पुरुष और दूसरा पहिया स्त्रीका न हो चल नहीं सकती पुरुषको द्रव्य की कमाई से इतना समय नहीं बचता कि उसको घरके छोटे छोटे कार्यों में लगावे। ऐ लड़को, वह बात सीखो कि पुरुष

होने पर तुम्हारे काम आवे । और ऐ लड़कियों, वह गुण प्राप्त करो कि स्त्री होने पर तुमको उससे आनन्द और स्वार्थ प्राप्त हो अर्थात् इसमें संदेह नहीं है कि स्त्रीको परमेश्वरने पुरुष से किसी क्रूर निर्बल पैदा किया है परंतु हाथपांव कान आंख बुद्धि समझ याद सब मनुष्य के बराबर स्त्री को दिये हैं लड़के इन्हीं वस्तुओंसे कामले कर सुंघी पण्डित आचार्य बैद्य कारी-गर दस्तकार हर उद्यममें होशियार और सब ऊनरमें चतुर होजाते हैं लड़कियां अपना समय गुडियां खेलने और कहानी सुननेमें खोकर बेऊनर रहती हैं जिन स्त्रियोंने समयकी क्रूर पहचानी और उसको कामकी बातोंमें लगाया वह पुरुषोंकी तरह संसारमें मग्न रह ऊर्ध्व हैं जैसे मैचेयी व गांधारी ब लीला-वती वगैरह या इनदिनोंमें अंगरेजोंकी शाहजादी यीमझा-रानी विक्टोरिया यह वह स्त्रियां हैं जिन्होंने एक कोठेसे घर और कुन्वे का नहीं बल्कि एकदेश और जगत् का बन्दोबस्त किया बाज अज्ञान स्त्रियां शोच करती हैं कि बज्जत पढ़कर क्या पुरुषोंके समान सुंघी और पण्डित होना है फिर क्लेश करने से क्या प्रयोजन परंतु जो कोई स्त्री विशेष पढ़ गई है तो निस्सं-देह उसने विशेष स्वार्थ और परमार्थ भी प्राप्त किया है हम इसबातसे इन्कार नहीं करते कि विशेष विद्या स्त्रियोंको पढ़ना अवश्य नहीं परंतु जितना अवश्य है उसको कितनी स्त्रियां हा-सिल करती हैं कमसे कम उर्दू या नागरी भाषापढ़ना अवश्य है अगर इतना नहीं है तो विशेष हर्ज होता है यह अपनेकी बात दूसरे पर प्रकट करना पड़ती है या उसको छिपानेसे हानि होती है स्त्रियों की बातें बज्जधा लज्जा और पर्देकी होती हैं परंतु अपनी माता और भगिनीसे कभी उनको जाहिर कर ने की जरूरत होती है संयोगसे समय पर मा बहि नपास नहीं आती ऐसी जगह पर लज्जाको छोड़कर कहना ही पड़ता है नहीं तो कार्य हानि होता है लिखना पढ़नेसे कठिन है परंतु अगर कोई मनुष्य किसी पुस्तकसे चारसतर वाज नकल किया करे और इसी क्रूर अपने दिलसे बनाकर लिखाकरे और इस-

लाह लिया करे तो ज़रूर थोड़े दिनों में वह लिखना सीख जायगा अच्छे अच्छे लिखनेसे कुछ प्रयोजन नहीं लिखना एक जनरल है जो ज़रूरत के समय बहुत काम आता है अगर अशुद्ध हो या अच्छे बंदख़रत और ना दुरुस्त लिखे जाय तो बेदिल होकर मशक्कत को छोड़ मत दो कोई कार्य हो प्रथम अच्छा नहीं ज़रा करता अगर कैसे बड़े पण्डित को एक टोपी कतरने और सीने को देव जिसने कभी न कतरी और सीं हो अवश्य वह टोपी को खुराब करेगा चलना फिरना जो तुमको अब ऐसा सहज है कि बेपरिश्रम करे दौड़ते फिरते हैं तुमको कदाचित् याद न रहा हो कि तुमने किस लोशसे सीखा परंतु तुम्हारे माता पिता और बड़ोंको अच्छे प्रकारसे याद है पहिले तुमको बेसहारे बैठना नहीं आता था जब तुमको गोदसे उतारकर नीचे बैठाते थे एक आदमी पकड़े रहता था या तकिये का सहारा लगा देते थे फिर तुमने गिर पड़कर घुटनों चलना सीखा फिर खड़ा होना फिर चारपाई पकड़कर फिर जब तुम्हारे पांव अधिक मजबूत हो गये तो धीरे धीरे चलना आगया परंतु सैकड़ों बेर तुम्हारे चेहरे लगी और हमने तुमको गिरते सुना अब वही तुमहो कि परमेश्वरकी कृपासे दौड़े २ फिरते हो इसी प्रकार एक दिन लिखना भी आ जायगा और माना अगर लड़कों की तरह लिखना भी न आया तो भी बल्लदर ज़रूरत तो ज़रूर आ जायगा और यह बात तो न रहेगी कि घोबिनके कपड़ों और पिसनहरी कि पिसाईको याद रहनेके हेतु दीवार पर लकीरें खींचती फिरो या कङ्कड़ पत्थर जोड़कर रक्खो घरका हिसाब किताब लेना देना ज़बानी याद रखना बहुत कठिन है बाज़ मनुष्योंकी प्रकृति होती है कि जो रुपया घरमें दिया करते हैं उसका हिसाब पूछा करते हैं अगर रुपया कहां खर्च हुआ और इनमें बे प्रयोजन का बिरुद्ध और लोभ प्रकट होता है अगर स्त्रियां इतना लिखना भी सीख लिया करें कि अपने समझके वास्ते अवश्य हो तो कैसी उत्तम बात

हैं लिखने पढ़ने के सिवाय सीना परोना रसेई बनाना ए दो गुण सब लड़कियों को सीखने जरूर हैं किसी मनुष्यको यह मालूम नहीं है कि उसको क्या संयोग आगे आवैगा बड़े अमीर और बड़े धनाढ्य जण मात्र में गरीब व कंगाल होजाते हैं अगर कोई गुण हाथ में पड़ा होता है तो जरूरत के समय काम में आता है यह एक प्रकट बात है कि पिछले जमाने के राजा महाराजा बावजूद सम्पत्ति और राज्य के अवश्य करके कोई गुण सीखरक्खा करते थे कि आपत्तिकाल में काम आवे चेत करो कि संसारकी कोई अवस्था भरोसे के योग्य नहीं है अगर तुमको इस समय सुख और सम्पत्ति प्राप्त है तो परमेश्वर की विनती करो कि उसने अपनी कृपा से तुम्हारे घर में सुख व सम्पत्ति दिया है परन्तु यह उचित नहीं है कि तुम इस सुखका आदर न करो या आगे के लिये भरोसा करलो कि यही सुख तुमको सदा रहेगा सुख के दिनों में स्वभावों का ठीक रखना अवश्य है अर्चि परमेश्वर ने तुमको चाकर नौकर भी दिये हों परन्तु तुमको अपनी प्रकृति नहीं बिगाड़नी चाहिये कदाचित् अपने को यह सामर्थ्य नर है तो यह स्वभाव ब्रह्म लेश देगा आप उठकर पानी न पीना या छोटे २ कार्यों में सेवकों या छोटे भाई बहिनोंको लेश देना उचित नहीं है स्वभाव के बिगाड़ने का यही चिन्ह है तुमको अपना सब काम आप करना चाहिये बल्कि तुम घर के ब्रह्म काम आप करसक्ती हो और अगर तुम थोड़ा सा परिश्रम भी अंगीकार करो तो अपनी माता को ब्रह्म कुछ सहायता दे सक्ती हो खूब विचार करके अपना काम कोई ऐसा मत छोड़ो जिसको माता अपने हाथों करे या दूसरों को उसके हेतु बुलाती और लेश देती फिरे ऐ मेरी दुलारी लड़कियो रात को जब सोने लगे अपना बिछौना अपने हाथ से बिछालिया करो और सबेरे उठकर आप तह करके यत्न से अच्छी जगह रखदिया करो अपने कपड़ोंकी गठरी इस तरह पर रक्खो कि जब कपड़े को बदलने की इच्छा हो अपने हाथ से फटा उधरा दुरुस्त करके पहिनलिया और मैले वस्त्रों को

इसप्रकारसे रक्खो कि जबतक धोबिन कपड़े लेनेआवे अलग खूँटी पर लटका रक्खो अगर मैले कपड़े खूँटी पर उठा न रक्खोगी कदाचित् चूहे काटडालें या पड़े पड़े अधिक मैले हों कि धोबिन उसको अच्छे प्रकार निर्मल न कर सके या शायद पृथ्वीकी सदी और पसीनेकी तरीसे उसमें दीमक लग जावे फिर धोबिन को अपने मैले कपड़ा आप देखकर दिया करो और जब धोकर लावे आप देखलियाकरो कदाचित् कोई बख कम न करलाई हो या कहींसे फाड़ न दिया हो या कहीं दाग न रह गये हों इसी प्रकार जब तुम अपने कपड़ोंकी खबर रक्खोगी तुम्हारे कपड़े खूब साफ़ धुलाकरेंगे और कोई कपड़ा न खोवेगा जो भूषण तुम पहने रहती हो बड़े दामोंकी चीज है चार घड़ी दिन रहे और जब सोकर उठो चेतकर लिया करो कि सबहैं या नहीं बज्रधा बेसुध लड़कियां खेल बूदमें गहना गिरा देती हैं गहना गिरने के कई दिन पीछे उनको मालूम होता है कि बाली गिर गई, छल्ला निकल पड़ा जब घरमें कई बेर भाड़ू दी गई क्या मालूम तनिकसी चीज कहांगई या किसी गह मिट्टीमें दब गई तब ना समझ लड़कियां गहने के वास्ते रोती हैं और सारे घरको ढूँढ ढाँढमें हैरान कर डालती हैं और जब माता पिता को मालूम होता है कि यह लड़की गहनेको सम्हालके नहीं रखती है और खा २ देती है तो देभी गहनाके पहनने में शोच विचार करने लगते हैं तुमको सदा ध्यान रखना चाहिये कि घरके कामों में कौनकार्य तुम्हारे करने का है निस्सुंदेह जो छोटे भाई और बहिन रोते और हठकरते हैं तुम उनको सम्हालसक्ती हो कि वह माको क्लेश न दें सुह धुलाना उनके खाने और पीनेकी खबर रखना यह सब काम अगर तुमचाहे तो करसक्ती हो परन्तु अगर तुमअपने भाई बहिनोंसे लड़ो और हठकरो तो तुमआपअपनी इज्जत खाती हो और माको क्लेश देती हो वह घरका कामदेखे या तुम्हारे सुक्रहमे का न्याय कियाकरे रसोई जो घरमें बनती है उसको इसहेतुसे नहीं देखना चाहिये कि कब वनचुकेगी

और कब मिलेगी घरमें जो कुत्ता बिल्ली या दूसरे जीव पले हैं वह अगर उदर भरने की कांक्षा से भोजन के आसरे पर बैठे रहें तो डर नहीं परन्तु तुमको हर बातमें विचार करना चाहिये तरकारी किस प्रकार भूनी जाती है नमक किस अंदाज से डालते हैं अगर हर एक भोजनको अच्छे विचार से देखा करो तो निश्चय है कि थोड़े दिनोंमें तुम भोजन बनाना सीख जावोगी जो लड़कियां रसोई बनाना नहीं जानती तो मा बापको दृष्टा लोगों से बुरा कहलवाती है रोज़मर्रा की रसोई के सिवाय अच्छे प्रकार के भोजनों के बनाने की रीति भी तुमको सीख लेना चाहिये आये गये की मेहमानीमें सदा भांति भांति की अच्छी रसोई बनानी पड़ती है पुलाव मीठे चावल, जर्दी, तसमई, कढ़ी, सुरब्बा, चटनी, दहीबड़ा, सब मज्जोदार खाने हैं हर एक के बनानेकी युक्ति याद रखनी चाहिये व्योतना बख्का अल-बत्ता बुद्धिकी बात है मन लगाकर उसको जान लेना वाजिब है हमने बहूत निबुद्धि स्त्रियों को देखा है कि अपने वस्त्र दूसरी स्त्रियोंके पास व्योताने के हेतु लिये लिये फिरा करती हैं और उनको थोड़ी सी बातके लिये बहूत सी चिरौरी करनी पड़ती है अंगरखा व्योतना कुछ कठिन नहीं है जो तुम अपने भाइयों के अंगरखे व्योता करो तो अंगरखाकी व्योत समझमें आ जावेगी लड़कियां लज्जा की मारी मुंहसे न कहें परन्तु मन में अवश्य जानती हैं कि कुआरपनके थोड़े दिन और हैं आखिर व्याही जावेगी व्याहे पीछे नये प्रकारकी जिंदगी करनी पड़ेगी जैसा कि तुम माता और नानी और मौसी और कुटुम्ब की सब स्त्रियोंको देखती हो कारपनेका समय तो बहूत थोड़ा है और उस समयका बहूत बड़ा भाग अज्ञानतामें व्यतीत हो जाता है वह अवस्था पहाड़की नाई तो आगे आ रही है जो भांति २ के भगड़े और अनेक प्रकारके बखेड़े से भरी हुई है और विचार करो कि तुम कोई अनाखीलड़की तो हो नहीं व्याहे पीछे तुमको कुछ और भाग लग जावेगी जो संसार की बहू बेटियोंको आगे आती है वह तुमको भी आगे आवेगी पसंशोचना चाहिये

कि स्त्रियां किसप्रकार अपनी जिंदगी पूरी करती हैं ब्याड़े पीछे कैसे उनकी इज्जत होती है पुरुषकैसा आदर किसप्रकार उनका सनमान करते हैं खास लोगों की दशा पर नजर मत करो बाजीजगह संयोगसे अधिकमिलापड़ आ स्त्री पुरुषपर बलवान होगी और जहां ज्यादा लड़ाई भगड़ा हुआ स्त्री का मान घट गया यह तो बात ही अलग है जगत के दूसरे और राजाके देखा तो दूसरे के माफिक हम तो स्त्रियों की कुछ इज्जत नहीं देखते बुद्धिहीन उनको कहते हैं बिया हठ और बिया चरित्र पुरुषों के जवानपर है स्त्रियों की छल छिद्रमें बड़तसी पुस्तकें लिखी हुई हैं गृहस्थीके बरतावमें देखा तो घरके टहल के सिवाय संसारका कोई अच्छा कार्य भी स्त्रियोंसे लिया जाता है या किसी अच्छे कामकी सलाह भी उनसे पूछी जाती है जिनघरों में स्त्रियोंका आदरभाव है वहां भी जब स्त्रियों से पूछा जाता है तो यही कि क्यों बीबी आज क्या तरकारी बनैगी लड़केके वास्ते टाट बाप्पी जूते मंगाओगी या डेढ़ हाथिये की कानियां मानिक चन्दी लेवगी या जहाजी रजाईको ऊदी गोठ लगेगी या सुरमई ऐसी बातोंके सिवाय कोई स्त्री यह तो बताओ कि कभी पुरुषोंने उससे बड़ी २ बातोंमें सलाह लिया है कोई बड़ा काम उसके अख्तियारमें छोड़ दिया है पस ऐ स्त्रियो क्या तुमने ऐसे बुरे हालांको जो न कभी नाखुश नहीं आता और क्या तुम्हारा जो नहीं चाहता कि पुरुषोंके दानिस्तमें तुम्हारी इज्जत हो तुमने अपने हाथों अपना आदर खो रक्खा है और अपने कारण नजरोंसे गिरी हुई हो तुमको ढंग होता पुरुषोंको कहां तक ख्याल न होगा कठिन तो यह है कि तरकारी रोटी दाल पकालेने और फटापुराना सीलेनेको ढंग समझती हो सोफिर जैसा ढंग है वैसा ही तुम्हारा आदरभाव है ऐसी दशा पर अगर संसार भर की बदनामी तुम पर लगाई जाय तो उचित और दुनियां भर की बुराइयां तुम पर लगाई जाय तो सच है ऐ स्त्रियो तुम पुरुषों के मनका बहलाउ उनके जीवन सुखका कारण और आनन्दको विशेष करनेवाली और उनके क्लेशको

भुलाने वाली हो जो तुमसे पुरुषों को बड़े कामों में सहायता मिले और तुमको बड़े कामों के बन्दोबस्त करने का ढंग हो तो पुरुष तुम्हारे पांव धो धोके पिया करें और तुमको अपना सिर-तान बनाकर रखें तुमसे बेहतर उनका दुःख भुलाने वाला तुमसे अच्छा उनका सलाहकार तुमसे ज्यादा उनका भलाई चाहने वाला और कौन है परंतु बड़े कामों का ढंग तुमको प्राप्त क्यों कर हो घर के चार दीवारी में तो तुम कौद हो किसी से मिलने की तुम नहीं किसी से बात करने की तुम नहीं गुण या ढंग आदमी २ से सीखता है पुरुष लोग पढ़ लिखकर चतुर और गुणी हो जाते हैं और जो लिखे पढ़े नहीं वह भी हजारों प्रकार के लोगों से मिलते दशसे दश प्रकार की बातें सुनते हैं इस परदे से तो तुमको छुटकारे की आस नहीं हमारे देश के चालचलनने परदे में रहना स्त्रियों का अवशकार दिया है फिर सिवाय पढ़ने लिखने के और क्यातदवीर है कि जिससे तुम्हारी बुद्धि को प्रकाश हो बल्कि पुरुषों से स्त्रियों को पढ़ने लिखने की अधिक आवश्यकता है पुरुष तो बाहर के चलने फिरने वाले ठहरे लोगों से मिल चुल कर बहूत बातें सीख लेंगे तुम घर में बैठे क्या करोगी क्या सीने की पिटारी से बुद्धि की पुड़ियां निकालोगी या अनाज की कोठरी से ढंग की बातें सीख जावोगी पढ़ना सीखा कि परदे में बैठी ऊई तमाम संसार की सैर कर-लिया करो बिद्या प्राप्त करो कि अपने घर में दुनियां भर की बातें तुमको सालू मज्जा करें और स्त्रियों को अपने संतान के सिख-लाने के हेतु पढ़ना अति विशेष है लड़कियां तो ब्याह तक और लड़के भी दशवर्ष की अवस्था तक बहूधा घरों में रहते हैं और माओं का स्वभाव उनमें असरकर जाता है पस ए स्त्रियो संतान की अगली बयस तुम्हारे आधीन है तुम चाहो तो वैसे उनके मनो में बहुरादे और ऊंचे खयाल भर दो कि वह बड़े होकर नाम नामूद पैदा करें और जन्म भर सुख से रहें और चाहो तो उनका ऐसा स्वभाव बिगाड़ देव कि ज्यों ज्यों बड़े हों खुराबी के लक्षण सीखते जायें और अन्त तक उस अर्थ

का पकूताब किया करें बालकोंको तो जब बोलना आया तब लिखने पढ़नेका ज्ञान भी होसक्ताहै अगर माओंको ठंगहो तो उसी समय से बच्चोंको सिखलाती जावें सकतव या मदर्स भेजने के आसरे में लड़कोंके कईवर्ष अकारण जाते हैं बड़त छोटी अवस्थामें न तो बच्चोंको आप से पाठशाला जाने की इच्छा होती है न माता पिताकी प्रीति यह बात चाहतीहै कि नन्हें २ बच्चे जो अभी अपनेकाम आपनहीं करसक्ते गुरु के बन्धन में रखे जावें परन्तु माता जो चाहे उसी समय में उनको बड़त कुछ सिखा पढ़ासक्तीहै लड़के पाठशालामें बैठने के पीछे भी बड़तदिनोंतक बेदिनीसे पढ़ाकरतेहैं और बड़त दिनोंमें उनकी इस्लादाद बढ़तीहै पर इस सबसमयमें उनको माओंसे बड़तसहायता मिलसक्तीहै पछिले तो माता कीसी प्रीति व खेहकहां दूसरे रातदिनका बराबररहना जबआगे देखा भट कोई अजर पहचनवा दिया कोई गिनतीही याद करादी कहीं पूर्व पश्चिमकी पहचानबतादी मातातो बातों२ में वह सिखा सक्तीहै जो गुरुवर्षोंके सिखलानेसे नहींसिखला सक्ता और माताको सिखलानेमें यह एक कितना अच्छापन है कि लड़कोंके चित्तको घबराहट नहीं होनेपाती और संतान की तह जीव उनके पालनेकी तदबीर उनके प्राण की रक्षा माताके आधीन है अगर माता को इस ढंगमें कमी है तो संतानके जीवका संदेहहै ऐसा कौन अभागीहोगा जिसको माताकी प्रीतिसे इन्कारहो परंतु वही प्रीति जो अज्ञानता के साथवरतीजाय तो सुम्किन है कि बजाय लाभ के उलटी हानिहोवे क्याहजारों कुबुद्धि माता ऐसी नहींहैं जो संतान की हर एकमर्जको नजरगुजर और परछावां और भपेटा और आसेव समुझकर बजायदवाके झाड़फूंक उतारा नहींकरती अयोग्य यत्नका गुणतुम्ही समझलो क्याहोता होगा प्रयोजन यहहै कि सबघरकी दुरुस्ती समझपर और समझकी दुरुस्ती विद्यापर है तुमको एक अच्छी कहानी सुनातेहैं जिससे तुम को मालमहोगा कि बेज्जनरीसे क्या लोभ पड़चताहै कहानी

परमेश्वरकी एककमसमझ लड़कीका व्याह होगया था उसने अपनी अज्ञानतासे वर्ष दोवर्षभी ससुरालमें निवाहन किया व्याहके चौथे पांचवेंमहीने पतिपर तकाजाकरना शुरूकिया कि गोहमारागुजारा तुम्हारेमाबहिनोंमें नहींहोता हमको अलग सकानलैदो उसनेकहा जितने तुम्हारे भगड़े अपनेमा बहिनोंके साथसुनतारहाहूं उनसबमें तुम्हाराअपराधहै टोले महल्लेमें जो आदमीछोटीजातकेरहतेहैं तुमकोउन्हींलड़कियों कोबहिनबनारक्वाहैरातदिनभोंदूकुंजड़ेकीबेटीचुनिया और बख्शगंधीवालेकी लड़कीजलफान औरप्रयाग अगरहरीकी बेटी चुनिया तुम्हारेपास घुसी रहाकरतीहैं और तुमकोइस बातका कुछ ध्याननहीं कि येलोग न तुम्हारी बिरादरीहैं न भाईबन्धु न ऐसी तुम्हारी सुलाकात न राहवरखव प्रीति-माममहल्लेमें चर्चा होरहीहै कि कैसी बहू आई है जबदेखा ऐसीलड़कियां उसकेपास बैठीरहतीहैं आखिरमहल्लेमें लाला प्रयागलाल और हीरालाल और पण्डित गणेशदत्त यह लोग भी तो रहतेहैं और इनकीबहू बेटीहमारेघरमें आतीजाती हैं तुमकिसीसे बातभी नहींकरती अगर हमारीमाताने तुमकोकमीना और बेइज्जत लड़कियोंसे मिलने को मनाकिया तोक्या बुराकिया उसनासमझ बीबीनेजबाबदिया कि प्रीति स्नेहदिलके मिलनेपरहै हमारेमैकेके पड़ोसमें एक बाबूमनि-हार रहताथा पन्नों उसकी बेटी हमारी सहेलीथी जब हम छोटीथी उसके संग खेला करती थी दो शुड़ियों का व्याहभी हमनेपन्नोंके साथ कियाथा पन्नों बिचारी बहूत गरीबथी हम अपनीमातासे चुराकर उसकोबहुत बस्तुदिया करतीथीमाता ने बहूतेरा मनाकिया परन्तु हमने पन्नोंका मिलना न छोड़ा पतिने कहा तुमने भाखिमारा यह सुनकर वह अज्ञानी बीबी मियांसे बोलीदेखा परमेश्वरकीसौगन्ध मैंने कहदियाहै सुभ से जावानसम्हालकर बोलाकरोनहींतो पीठ २ कर अपनाखून कर डालोंगी यह कहकर रोनेलगी और माता पिताको को-सनागक्यकिया कि अबपरमेश्वर दमसावापका बराहो कि

कैसी कम्बखुतीमें सुभको ढकेल दिया है सुभको अकेला पाकर सबने सताना शुरू किया है परमेश्वर मैं मरजाऊं मेरी रधी निकले और क्रोधके मारे पानखानेकी पिटारी जो चारपाई पर रखी थी लातमारकर गिरा दी तमाम कल्याचूना तोशक पर गिर पड़ा ऊनीदरेशका लिहाफ़ पांयते तह कियार कखा था चूनेके लगते ही उसका तमाम रंग कट गया पिटारीके गिरनेका घमका सुनकर सामनेके दालानसे सास दौड़ी आई माता को आते देख बेटा तो दूसरे दरवाजे से चल दिया परन्तु अपने दिलमें कहता था कि अन्नास मैंने बरोंके कत्तेको छोड़ा सासुने आकर देखा तो चार पैसेका कल्या जो छान पका कर कुल्हियामें भर दिया था सब गिरा पड़ा है तोशक कत्येमें लतपत है लिहाफ़ चूनेमें भरा है बहू जारजार रो रही है आते ही सासने बहूको गले से लगा लिया और अपने बेटेको बड़त कुछ बुरा कहा अपने दिल-जोई का सहारा जंघते को ठेलनेका बहाना हुआ अगर्बि सासने मिन्नतकी और समझाया पर उस औरत पर कुछ असर न हुआ आस पास की औरतें बेने पीटनेकी आवाज सुनकर इकट्ठा हो गईं यहां तक नौबत पहुंची कि प्रयाग अगर हरी की बेटी सुलिया समधियानेको दौड़ी गई और एक २ की चार २ लग गईं परमेश्वरकी कृपासे उनकी माता भी बड़ी उताहिल थीं सुनतेके साथ डोलीपर चढ़ आपहुंची बड़त कुछ लड़ी भगड़ी आखिर बेटेको साथ ले गईं कई महीने तक दोनों ओर से आना जाना बन्द रह ताकि कहानी अच्छे प्रकारसे बूझमें आये तुम को नाम भी उन लोगों के बता देने जरूर हैं परमेश्वरी इस ना समझ औरत का नाम था परमेश्वरी ना समझ गुणहीन और बदमिजाज थी परन्तु इसकी छोटी बहिन सरस्वती बड़त चतुर और बुद्धिमान और नेक मिजाज थी छोटीसी अवस्था में इसने हिन्दी भाषामें चन्द्रकिताबें पढ़ ली थी घर का हाल अपने बापको हर शनिश्चरको लिख भेजा करती थी और अनेक प्रकारके बख्शीसकी भी भांति २ के मजेदार भोजन पकाने जानती थी तमाम महल्ले में सरस्वतीकी तासीफ़ थी माताके घर का तमाम बन्दो-

वस्तु सरस्वतीके हाथों रहा करता था जब कभी बाप खुश हो ले कर घर आता गृहस्थीके बन्दोबस्त में सरस्वती से सलाह पूछता कपिया पैसा काठरी और संदूकोंकी कुंजियां और सब कुछ सरस्वतीके अतिथारमें रहा करता था मातापिता अन्तः-कारणसे सरस्वतीको चाहते थे बल्कि महल्लेके सब लोग सरस्वतीको प्यार किया करते थे परमेश्वरी, खुद बखुद अपनी छोटी बहिन से नाराज रहा करती थी बल्कि अकेला पाकर भारभी लिया करती थी परन्तु सरस्वती सदा अपनी बड़ी भगनीका अदब करती और मासे उसकी चुगली न खाती दोनों बहिनोंकी संगनीभी संयोगसे एक ही घरमें हुई परमेश्वरीदत्त और अम्बिकादत्त दोसरे भाई थे परमेश्वरीका विवाह बड़े भाई परमेश्वरीदत्त से हुआ और सरस्वतीकी बात अम्बिकादत्तके साथ ठहर चुकी मगर व्याहनहीं हुआ था परमेश्वरीके बदमिजाजीके कारण नजदीक था कि सरस्वतीकी संगनी छूट जाय परन्तु इन लड़कियोंकी मौसी परमेश्वरीदत्त के घरके पास रहती थी सो वह सदा समझाती बुझाती रहती अर्गर्च परमेश्वरी लड़भगड़ के चली गई थी परन्तु मौसीने बहुत कुछ बुरा भला कहा और ऊंच नीच समझाया कई महीने पीछे हालांकि के त्योहारमें भानजीको ससुराल लिवा लाई बहुत दिन तक परमेश्वरीदत्त स्त्रीसे नाखुश रहा आखिर मौसिया सासने स्त्रीपुरुषकामिलाप करा दिया परन्तु जब मिजाजोंमें नासुआफ्रिकत होती है तो हर एक बात में बिगाड़ का सामान हो जाता है परमेश्वरीदत्तने एक दिन अपनी मासे कहा कि आज मैंने एक मित्रकी मेहमानी की है शाम के खाने का ज्यादा बन्दोबस्त होना चाहिये माताने उत्तर दिया परमेश्वर जानता है कि किस हलसे मैं रोटी पकालेती हूँ तीन दिनसे तीसरे पहरको जूड़ी आती है मुझको अपनी खबर तक नहीं रहती है परमेश्वर परोसिनका भला करै कि वह शामको इतना भी पका देती है तुमने मेहमानी करने से पहिले घरमें पूछतो लिया होता परमेश्वरीदत्तने अचम्भा करके बीबीकी ओर देखा और कहा कि ये इतने भी कामकी नहीं है बीबीको

इतनी बरदास्त कहांथी कि इतनी बात सुनकर चुपरहे सुन-
 तेही बोली इसीबूढ़ी अम्मासे पूछो कि बेटेका ब्याह किया
 वा लौंडी मोलली परमेश्वरीदत्तने शोचा अब अगरमें जवाब
 देताहूं तो पहिलेकी तरह बसवाई होगी अपनासासुंहले-
 कर रहगया शासके खानेके वास्ते कुछ बाजारसे मोल लाया
 गर्ज वह बात टल गई अब परमेश्वरीदत्तको दूसरी बात आगे
 आईयाने गुड़िया पंचमीके एक हफ्ता आगेसे बीबीके जोड़े
 की तैयारी शुरूअकी हररोजभांति २ के कपड़े रंगबरंगकी
 चुड़ियांडेढ़ हाथिया व सलमासितारेकी कामदार जूतियां
 लाताथापरन्तु बीबीकेखातिरतलेकुछ नहीं आताथा यहां तक
 कि गुड़ियापंचमीको एकदिन रहगया लाचार होकर पर-
 मेश्वरीदत्त अपनी मौसियासासके पासगया उन्होंने शब्दसुन-
 कर अंदरबुलालिया धारसे बैठाया पान लगाकर दिया और
 पूछाकहो परमेश्वरीतो अच्छीहै परमेश्वरीदत्तने कहासाहब
 आपकी भानजीतो अजीब औरतहै मेरातो दमनाकमें कर
 रक्खाहै जोचालहै निरालीहै जोबात है सो टेढ़ीहै मौसिया
 सासनेकहा बेटाइसका कुछध्यान मतकरो अभीकम उमरहै
 बालबच्चे होंगे घरका बोझा पड़ेगा मिजाज आपसे आपही
 दुखलहोजायगा और आखिरअच्छेलोग पड़ोसीकोभीनिबाह
 देते हैं बेटा परमेश्वर ने तुमको सब प्रकार लायक किया है
 ऐसी बात न हो कि लोगहसैंतुम्हारी इज्जतहै परमेश्वरीदत्तने
 कहा कि मैं तो खुद इसी खयालसे बज्रत दर गुजर करता
 रहताहूं आप देखिये कल गुड़ियापंचिमीहै इस वक्ततक न
 चुड़ियांपहिनी न कपड़ेबनाये जराआप चलकर समझादी-
 जिये मैंने बज्रत कुछ कहा और मातानेभी बज्रत भिन्नतेंकी
 परन्तु नहींमानती मौसियासासनेकहा तुम्हारेमौसियाससुर
 बाजारसे आलें तो उनसे पूछकर मैं चलतीहूं गरज मौसीने
 जाकर चुड़िया पहनाई कपड़े व्योते जल्दी के सारेसबमिल-
 करसीनेबैठी मौसीनेकहाबेटी लहंगेमें गोठतुमलगादो डुपट्टे
 में गोठामें टाकतीहूं जब परमेश्वरी गोठ लहंगेमेंलगाचुकी

तो उसने इतराकर मौसी से कहा तुमको अभी आधे डूट्टे में गोटा
लगाना बाकी है और मैं लहंगे में गोटा लगा चुकी मौसी ने देखा
तो गोटा उलटी लगाई थी परमेश्वरी की सास के लिहाज से मुंह पर
कुछ न कहा परन्तु चुपके दो चार चुटकियां ऐसी लीं कि परमेश्वरी
के आंखों में आंसू भर आये और हलके से कहा कि अपना समझ
देखतू उलटी गोटा लगा बैठी परमेश्वरी अपना सिया झुआ सब
उधेड़ा फिर गोटा लगाना आरंभ किया जब लगा चुकी मौसी
ने देखा तो सब में झोल है तब तो मौसी से नरहा गया सास की
आंख बचा एक सुई परमेश्वरी के हाथ में चुभो दी और गोटा फिर
उधेड़ कर आपलगाई गरज इस प्रकार परमेश्वरी का जोड़ा सीं-
कर तैयार हुआ रात ज्यादा गई थी परमेश्वर की मौसी अपने
घर के बिदा हुई और लोग भी सो सुलारहे वझे गुड़ियां पंचिमी के
खुशी में सवेरे से जागे किसी ने रात की मेहदी खाली किसी ने
बेसन के लिये गुल मचाया परमेश्वरी दत्त वास्ते नहाने और
नित्यनेम के सुवह होते नदी पर चला गया दो चार घड़ी दिन चढ़े
लौट आया तो देखा कि बीबी सारही है परमेश्वरी दत्त ने अपनी
छोटी बहिन यमुना से कहा कि यमुना जाओ अपनी भाभी को
जगा दो पहिले तो यमुना ने जाने में संकोच किया इस कारण
कि यमुना परमेश्वरी के मिजाज से बहुत डरती थी जब से व्याह
हुआ परमेश्वरी ने एक दिन अपनी छोटी नन्द के साथ प्यार से
बात नहीं की थी और न कभी अपने पास उसको आने और ब-
ठने दिया था परंतु भाई के कहने से त्याहार की खुशी में यमुना
दौड़ी चली गई और जाकर कहा भाभी उठो भाभी ने उठने
के साथ यमुना के एक तमाचा मारा यमुना रोने लगी बाहर से
भाई आवाज सुनकर दौड़ा उसको रोता देखकर गोद में उठा
लिया और पूछा क्या हुआ यमुना ने रोते कहा भाभी ने मारा
परमेश्वरी ने कहा देखा आप तो दौड़ने में गिरि पड़ी और मेरा नाम
लगाती है परमेश्वरी दत्त को क्रोध तो आया परंतु चुप रहना
उस समय उचित समझा यमुना को प्यार चुपकार कर चुप-
किया और बीबी से कहा खैर उठा नहाओ कपड़े बदलो दिन

ज्यादा चढ़ गया मैं बाजारको जाता हूँ परमेश्वरीने नाकभौ
 सिकोड़ कर कहा ऐसे सबरे मैं नहीं नहाती ठंडका समय है
 तुम बाजारको जाओ मैंने क्या मना किया है परमेश्वरीदत्त ऐसी
 बात सुनकर बहूत दुखित हुआ और परमेश्वरी ऐसी अभा-
 गिन थी कि सदा अपने खासीको नाखुश रखती थी इतने में
 परमेश्वरीदत्त की माताने पुकारा कि बेटा जाओ बाजार से
 मिठाई दूधलाओ परमेश्वरीदत्तने कहा बहूत अच्छा पैसा दी-
 दिये मैं मिठाई ला देता हूँ परन्तु जो मेरे लौटने तक इन्होंने
 कपड़े न बदले तो सब कपड़े चूल्हे में रख दूंगा परमेश्वरीदत्त
 तो मिठाई लेने बाजार गया माता की मालूम था कि पुत्रका
 मिजाज बिगड़ा हुआ है और खुभाव भी इसका इस प्रकारका
 है कि पहिले तो इसको क्रोध नहीं आता और जो कभी आ-
 जाता है तो बुद्धि इसकी ठिकाने नहीं रहती ऐसा न हो कि
 सबमच नये कपड़े जला दे जल्दीसे बहूके पास गई और कहा
 बेटे परमेश्वरके लिये बरस २ के दिन तो बदशगुनी मत करो
 छठो नहाओ कपड़े बदलो परमेश्वरी ने कहा मैं तो नहीं
 नहाती परन्तु सासने चिरौरी विनती करके बहू के नहलाया
 घुलाया कंधी चाटी कर कपड़े पहनाय परमेश्वरीदत्त के आने
 से पहिले दुलहिन बनाकर बैठा दिया परमेश्वरीदत्त लौट कर
 देखा तो प्रसन्न हुआ फिर दूसरी दफा बाजार जाते यमुना से
 पूंछा कहो तुम्हारे वास्ते बाजारसे कौन खिलौना लावें यमुना
 ने कहा अच्छी सुघर तख्ती लिखने के हेतु ला देना और क-
 लम दावात के लिये एक नन्ही सी सेंद्रकची और परमेश्वरी
 बोली हमारे लिये क्या लाओगे परमेश्वरीदत्तने कहा जो तुम
 कहो लेता आज परमेश्वरीने कहा भुई और सिंघाड़े और
 भरबेरके बेर और मटरकी फलियां और बहूतसी नारंगियां
 और एक ठोलक और एक जोड़ी मंजीरा यह सुनकर परमे-
 श्वरीदत्त हंसने लगा और कहा कि ठोलक मंजीरा क्या क-
 रेंगी बीबीने जवाब दिया कि बजायेंगी और क्या करेंगी पर-
 मेश्वरीदत्त समझा कि अभी तक इस मर्ख में वे समझ बच्चोंके

प्रकार खाने और खेलनेके खुयालात मौजूद हैं बल्कि आभूषण पहननेसे जो आनन्द परमेश्वरीदत्तको हुआ था वह सब खाक धूलमें मिल गया और चित्तमें उदासी छा गई उसी उदासीके दशामें बाजारको खेला गया इसका जाना था कि परमेश्वरीने एक और नई बातमाससे कहा कि हमको डोली मंगा दो हम अपने माके घरजायेंगी सासने कहा भला यह जानेका कौन समय है परमेश्वरीने कहा आज मेराजी बहूत घबराता है दिन उलथा चला आता है सुभके अपने मैकेकी सहेली रामदीन मनिहारकी बेटी प्यारी बहूत याद आती है सासने कहा कि अगर ऐसाही दिलचाहता है तो उसीको बुला भेजो परमेश्वरी ने कहा वाह बड़ी बुलानेवाली ठहरीं ऐसाही बुलाना था तो उसीको बुला कर चूड़ियां पहनवाई होती सासने कहा भला बेटी सुभके क्या मालूम था कि अचानक तुमको आज उसकी याद आजायगी परमेश्वरीने कहा खैर इसभगड़े से क्या प्रयोजन डोली मगवानी है तो मंगवा दो नहीं तो मैं सुलिया के बापसे मगवा भेजती हूं सासने कहा बेटी तेरी बुद्धिमारी गई है मियां में पूछानहीं गया आपही आपचली और सुभके अख्तियार नहीं जो लड़के के बेआज्ञा डोली मगवा दूं परमेश्वरी बोली कैसे मियां कैसा पूछना अब कोई अपने मातापितासे त्योहारके दिनभी न मिला करे इतना कह कर मौला कुंजड़े से डोली मगवा यह जा वह जा अपने मैके पड़ची थोड़ी देर पीछे जब परमेश्वरीदत्त बाजार से लौटा तो घरमें घुसतेही पुकारा लो बीबी अपनी ढालक और मंजीरा परन्तु जब देखा कि सब चुप हैं माता से पूछा क्या हुआ यमुनाने कहा भाभी जानचली गई परमेश्वरीदत्त ने पूछा क्यों कर गई और कहां गई और क्यों जाने दिया माताने जवाब दिया कि बैठे बिठाये अचानक कहने लगी कि मैं तो अपने नैहर जाऊंगी मैंने बहूत मना किया एक न मानी मौला से डोली मंगवा चली गई है रोंकते २ रह गई परमेश्वरीदत्त यह सुनकर क्रोधके मारे कांप उठा और चाहा कि ससुराल जाकर अभी उस अभागिनीको दण्ड दूं यह शोचकर बाहरको चला

माता समझ गई जाते हुए माताने पुकारा उसने कुछ उत्तर न दिया माने कहा बेटा मैं तुम्हें पुकारती हूँ तुम उत्तर नहीं देते कलियुग में यही माओं का आदर रह गया है यह सुनते ही परमेश्वरीदत्त उलटा फिर माने कहा बेटा तू यह बतला कि इस धूप में कहाँ जाता है अभी बाजार से आया है और फिर बाहर चला परमेश्वरीदत्त ने कहा मैं बाहर कहीं नहीं जाता दरवाजे पर लाला कन्हैयालाल के बैठके में जाता हूँ माताने कहा अरे लड़के होश में आ मैंने क्या धूप में अपने बाल सफ़ेद किये हैं लो साहब हमसे बातें बनाने चला है लाला कन्हैयालाल के पास जाता है तौ डुपट्टा अंगरखा उतार कर खड़े और शौक से बैठके में जा यह सुनकर परमेश्वरीदत्त सुसकराने लगा माताने हाथ पकड़ कर अपने पास बैठा लिया घुटने पर शिर रख कर जुंघें देखने लगीय सुना से कहा बेटो ज़रा भाई के पंखा हाँके परमेश्वरीदत्त माता के गोद में शिर रख कर सो गया जागा तो दिन हो लगया और वह क्रोध भी धीमा हो गया था माताने कहा हाथ सुँह धोओ जब हाथ सुँह धो चुका तौ कहा अब ससुराल जावो तुम्हें मेरी सौगन्ध है कि जो तू वहाँ कुछ लड़ा और बाला परमेश्वरीदत्त ने कहा तो सुभके मत भेजो माने कहा तुम्हें भोजन के लिये ससुराल से आदमी बुलाने आया था और ससुराल तो तेरी है तुम्हें न भेजूं तो किसको भेजूं और बड़त समझा समझ कर गुलिया महरों के साथ परमेश्वरीदत्त को ससुराल रवाना किया जब परमेश्वरीदत्त सास के घर के नज़दीक पड़वा तो उस समय घर में परमेश्वरी अपनी सहेलियों के साथ लिये उधम मचा रही थी और बाहर गली में तमाम गुलकी आवाज़ आती थी सरस्वती ने जब महरों को दूर से आते देखा बड़ी चिन्ता से कहा कि चुपकरो तुम्हारे ससुराल से महरों आई है इतने में परमेश्वरीदत्त भी भीतर घर के पड़वा सास को सलाम किया सास ने कहा जीते रहो इतने में सरस्वती भी अपनी उठनी सन्हाल सन्हाल कोठरी से निकली और झुक कर बहने आई को सलाम किया सरस्वती को बहने आई ने गोद में

बठालिया थोड़ी देर पीछे सरस्वती गोदसे उठी और जाकर एक थालीमें बड़े सफाई से अच्छी २ मिठाई रखकर ले आई और एक गिलास पानी भरलाई और बहनोईके सामने रख दिया सासने कहा बेटाखाओ परमेश्वरीदत्तने कहाकि अभी थोड़ी देरझई मैंने घरमें खाना खायाहै सासने कहाक्या डर है थोड़ासातो खालोइसपर परमेश्वरीदत्तने थोड़ा २ हर एक मिठाई से खानेलगा और खाकर हाथ सुंह धोकर बैठगया सरस्वती इलायची डाल एकमजेदार पानलगालाई और बहनोईको दिया उसके उपरान्त सास और दामादसे दूधर च-धरकी बातें होतीरहीं चिरागजले परमेश्वरीदत्त ने कहामैं विदाहोताहूं सासनेकहा अबकहां जावोगे यहींसेरहो पर-मेश्वरीदत्तने कहाकि आजत्योहारहै और आयेगयेसे मिल-नाहै दूसरे मैं मातासे रातकेवास्ते कहकर नहीं आया सास ने कहा मिलने मिलानेका तो अब समय नहीं रहा क्योंकि शाम होगई है समझनिका कुछ तुम दूधतो नहीं पीतेकि घर जाये बिन चैन नहीं आखिर महरी जायगी खबर करदेगी परमेश्वरीदत्तने बड़तकुछबहाना कियापर सासनेएक नमाना परमेश्वरीत्त को जबरदस्ती रहनापड़ा चारघड़ी रातगये जब खाने पीनेसे साबकाशझई सरस्वतीने बरतन भांडा गिरीपड़ी चीज सब ठिकाने रक्खी बाहरके दरवाजे की जंजीर बंदकी कोठरियों में तालालगा कुंजियां माताके हवाले कीं बाहर के दालान और रसोईके मकानका चिराग बुझादिया माता और भगनी और बहनोई सबको पान लगाकर दिया और आराम से जाकर सोरही अब सासने परमेश्वरीदत्त से कहा क्यों बेटा तुम मियां बीबी में यह क्या प्रतिदिन लड़ाई रहा करती है परमेश्वरी का ऐसा बुराखभाव है कि कभी भूल-कर भी ससुराल की बात सुझसे नहीं कहती दुनियां जहान की बेटियों का दखूर होता है कि ससुराल की ज़रा ज़रा सी बात माओंसे कहाकरतीहैं नहीं मालूम इसको क्या पर-मेश्वर की मार है बड़तेरा पूक २ अपना सुंह थकाओ परन्तु

क्या निकलिकि यह कुछ भी बताये परन्तु टोला महल्ला की
 बात कानों कान पड़च जाती है ऊपरी लोगों से मैं भी घर
 बैठे २ सुना करती हूँ परमेश्वरीदत्त ने साससे यह बात सुन-
 कर घोड़ी देर शोचकिया और लज्जाके मारे उत्तर सुं हसे न
 निकलताथा परन्तु इसने शोचाकि बज्रत कालके पीछे ऐसा
 समय मिला है और अब इन्हींने छेड़कर पूछा है सो ऐसे स-
 मयमें चुपरहना उचित नहीं है बेहतर है कि जम्भभरका जूहर
 उगल डालिये कदाचित् आजकी बात चीतमें आगेके वालों
 कोई बात निकल आये यह शोच विचारकर परमेश्वरीदत्त ने
 शर्माते २ कहा आपकी लड़की मौजूद है इन्हींसे पूछिये हमारे
 यहां इनको क्या लेशपड़चा वा खातिरदारीमें कौन सी कमी
 हुई या कोई इनसे लड़ा या किसने इनको बुरा कहा इनको
 मालूम है घरमें हम गिनती के आदमी हैं हमारे मा से तो
 तमाम महल्ला बाकिफ है कि ऐसी नेक है कि तमाम उमर
 उनको किसी से लड़नेका संयोगनहीं हुआ अगर उनको कोई
 दण बात कड़ी भी कह जावे तो चुपहो जाती है अम्बिकादत्त
 दिनभर लिखने पढ़नेमें लगा रहता है सुबह का निकला रात
 को घर आता है खाया और सोरहा मैंने उसको इनसे कभी
 बात करते नहीं देखा यमुना इनकी स्वरतसे डरती है रक्षा मैं
 सो मौजूद बैठा हूँ जो शिकायत सुकसेहो बेधड़ककहें पर-
 मेश्वरीदत्तकी सास अबबेटीकी तरफ देखकर बोली हां भाई
 जो कुछतेरे दिलमें हो तूभी साफ २ कह दे बात का रहना
 मनमें अच्छा नहीं होता मनमें रखनेसे लेश बढ़ता है भगड़ा
 होता है परमेश्वरी अगर्चि भूठबोलने पर बज्रतटीठ थी परन्तु
 उससमय परमेश्वरीदत्त के रूबरू कोई बात कहते न बनपड़ी
 और जीहीजीमें डर रही थी कि मैंने बज्रतसी भूठी बातें मासे
 आके लगाई हैं ऐसा नहो कहीं इससमय खुल जावे यह शोच
 समझ उसने इस बातही कोटाल दिया और कहा तो यह कहा कि
 हम तो अलग घर करेंगी परमेश्वरीकी माताने दामाद से कहा
 क्यों भाई तुमको अलग हो कर रहनेमें क्या उजर है परमेश्वरकी दया

से तुम आपनौ कर हो आपक माते हो किसी बात में माता पिता के सुहताज नही अपना खाना अपना पहनना फिर दूसरे का सुहताज हो कर रहना क्या प्रयोजन बेटा बहू कौसी ही प्यारी हो फिर भी जो आराम अलग रहने में है मा बाप के घर कहां जो चाहा सो खाया जो चाहा सो पकाया और जरा भ्रम भ्रमने की बात है मा बाप के संग रह कर लाख काम ओ फिर भी नाम नही लोग क्या जाने तुम अपना खाते हो या माता पिता के शिर पड़े हो परमेश्वरी दत्त ने कहा सुख की जो पूछती हो तो जो सुख कि अब हमको प्राप्त है अलग जड़े पीछे उसकी कदर मालूम होगी दोनों वक्त पकी पकाई खाली और वे फिर हो कर बैठ रहे अलग होने पर आटा दाल नमक मसाला तरकारी कंडाल कड़ी सब का शोच करना पड़ेगा आप ही शोचिये कि गृह स्त्री में कितने बखड़े हैं वे प्रयोजन इन सब बखड़ों को अपने शिर पर लेना मेरे नजदीक तो बुद्धि की बात नही यह बात कि जो चाहा सो खाया और जो चाहा सो पकाया अब भी प्राप्त है इन्हीं से पूछिये कि कभी कोई फर्मायश की है कि जो नही ऊँ बड़े कुनवों में अलबत्ता इस प्रकार का क्लेश जरा करता है एक का दिल मीठे चावलों को चाहता है दूसरे को भूनी खिचड़ी चाहिये तीसरे को पुतावदार कार है चौथे को दही बड़े खाना मंजूर है पाँचवें को परहेजो खाना वैद ने बताया दश के वास्ते दश बटलोई राज के राज कहां से आयें हमारे यहां कुन्वा कौन बज्जत बड़ा है कि ये फर्मायश किसी चीज की करें और वह पूरी न की जाय इसको भी जाने दीजिये अगर इनको फर्मायश करने में ऐसी ही लज्जा आती है तो आप खाने पकवाने का बन्दोबस्त किया करें खुद हमारी मा भी कई बार इससे कह चुकी हैं इनसे पूछिये कहा है धान नहीं और नाम को जो आपने फर्माया यह भी मेरे नजदीक बुद्धि की बात नहीं अपने सुख से काम है लोग जो चाहें सो अपने दिलों में समझें और यह भी माना कि लोगो ने भी समझा कि हम माता पिता के शिर पड़े हैं तो इसमें हमारी कौन बेइज्जती है माता पिताने हमको पाला परवरिश किया

खिताया पहनायापढ़ाया लिखाया भादी व्याहकिया इन सब बातोंमें बेइज्जतीनहींहई अब कौनसा सुरखाबकापर हमसे लगगया है कि उनके आधीन होना हमारीवे इज्जतीसमझीजावे सासनेजबाबदिया कि अगर सबलोग तुम्हारे प्रकारसमझाकरै तो क्योंअलगहों संसारका यही दस्तूरहोता चला आयाहै और होता चला जायगा कि बेटे माता पितासे अलग होजाते हैं और मैतोजानतीहूं कि जगतमें कोईबहू ऐसी नहोगी कि जिसकाखामी कमाऊहोऔर वह सासनन्दोंमें रहनाअंगीकारकरे परमेश्वरीदत्तने कहा यहआपका कहना दुखस्तहै अगर बेटे माता पिता से अलग न जुआ करते तो शहर में इतनेघर कहांसे आते परन्तु हरएककी दशा जुदी है अलग होकर रहना मेरे नजदीक उचितनहीं दशरूपयेका तो मैं नौकर इतनी आमदनीमें अलगघर सन्हालना बज्रतकठिनहै और फिर इस नौकरी काभी भरोसा नहीं अलग जुये पीछे अगर नौकरी जाती रही तो फिर बापके घर आना सुभके अतिकठिन गुजरेगा उससमय अलबत्ता बेइज्जतीहोगी लोग कहेंगे कि मियां अलग तो होगये थे फिर भखमारके बापके टुकड़ोंपर आपड़े लोगोंकीरीस इसमामलेमें ठीकनहीं अपनी दशापर आप विचारकरना चाहिये वहनकल आपने सुनीहै एकशख्सने बाजारसे नमक और कईभोलली नमक खच्चरपर लादा और कई गधेपर चलते चलते राहमें एक नदी मिली नदी पैरावधी उसशख्स ने खच्चर और गधे को लदा लदाया पानी में उतार दिया बीच नदी में पड़ंचकर खच्चर ने डुबकी लगाई थोड़ीदेर पीछे फिर उधारा तो गधेने पूछा क्यों यार खच्चरयहतुमने क्याकियाखच्चरने जबाबदिया कि भाई तुम्हारे तो बड़ेभागहैं तुमपर कईलदीहै इसकाबोझतो बज्रतहलका होताहै सुभ अभागेपर तो नमकहै बोझके मारे मेरीकमर कटकर लोहलुहानहोगईहै यहहमारा मालिक ऐसाबेदर्द है कि इसको हमारे दुःखका ध्यान नहीं अनाप शनाप जितनाचाहताहै लादलेताहै मैने समझा कि संजिततक पड़-

चते २ कमर जाती रहेगी आवो डुबकी लगावो नमक पानी में भीजकर कुछतो गल जायगा जिसकदर हलके ऊये बेहतर होगा मालिक बज्जत करेगा चार डंडे मारलेगा सो योंही रास्ते भरमें डंडे खाते आताहूँ देखा अब मेरा बोझा आधा रह गया है गधे बुद्धिहीननेभी खच्चरकी रीसकरके डुबकी लगाईरुई भीगकर और भारी होगई शिरउधारा तो हिला न जाताथा खच्चरहंसा और कहा क्योंभाई गधेक्याहाल है गधे ने कहा यार मैतो मराजाताहूँ खच्चरने कहा अथनासमझ तूने मेरी रीस तो की परन्तु इतना तो समझ लेता कि मेरी पीठपररुईहै नमकतो नहींहै अन्धजान ऐसा न हो लोगोंकी रीस करने से मेरा हालभी उस गधे कासा हो सासने कहा भाई तुमतो किसी से हारनेवाले नहीं मैतो सीधीबात यह समझतीहूँ कि दशरूपया महीना तुमकमातेहो परमेश्वरकी कृपाहै सस्तासमयहै बालनहीं बच्चानहीं भगवानदयारक्खेतुम दोनोंमियांबीबी अच्छीतरहसे रोटी दालखाओनैनसुखतंजोब पहनो आगेकाशोच तुम्हारीतरह लोगकियाकरें तो संसार का कामबन्दहोजाय नौकरीतो नौकरी जीनेका भरोसानहीं जै दिनजीनाहै हंसीखुशीमें टेरकरदेनाचाहियेपरमेश्वरीदत्त नेकहा यहीतो मैसी शोचताहूँ खुशीअलग होकर रहनेमें है या साथमें सासने कहा ऊज्जत दलील से क्या प्रयोजन सीधी बातयही क्यों नहींकहते कि सुझको सासेअलग होनामंजूर नहीं एकबात तुमसे बीबीनेकही उसकेमानने में इतना बड़ा शोचहै और फिरकहतेहो कि हमबीबी की खातिरदारी में कमीनहीं करते आराम सुखवहीहै कि जिसमें बीबीखुशहो उसकेपीछेवातोंमें रंजहोनेलगा परमेश्वरीदत्तनेजवाबदेनाबन्द तरदिया जोकि रात अधिकगई थी इसलिये परमेश्वरीदत्त ने सासे कहा अबआप सोइये इसबातको मै फिरशोचूंगा ये लोगतो सोरहे परन्तु परमेश्वरीदत्त रातभर इसीखुयाल के घेड़बुनमें रहा और मनहीमन में बातें करतारहा सुबह उठातोदेखा सरस्वतीभाडू देरहीहै वहनोईको देखकर

सरस्वती ने सलास किया और कहा भाई साहब नहाने के वास्ते पानी मौजूद है परमेश्वरीदत्त ने नहाया और नित्य ने म से फरागत की सरस्वती चाह बनाकर दो पियालियों में ले आई और दो चिमचा और एक तश्तरी में कन्दलाकर सासने पर-
 मेश्वरीदत्त के रख दिया परमेश्वरीदत्त ने चाह पी तो अच्छे स्वाद और अच्छी बू-बास की थी जिसको पीकर चित्त बज्जत प्रसन्न हुआ परमेश्वरी उस वक्त तक अपने स्वभाव के अनुसार पड़ी सोती थी परमेश्वरीदत्त ने सास से कहा आप भी सुबह उठने की ताकीद कीजिये सासने कहा बेटा यह अपनी नानी की बज्जत चहेती है उनके प्यार-दुलारने इनका मिजाज और इनका स्वभाव सब खराब कर दिया जब यह छोटी थी और मैं किसी बात पर घुड़क बैठती थी तो कई २ दिन तक सुभसे बोलना छोड़-
 देती और यह तो क्या ताकत थी कि परमेश्वरी को कोई हाथ लगावे परमेश्वरी बात पर हठ करती चीजों को तोड़ती फोड़-
 ती परंतु उनके डर के मारे कोई कुछ कह न सक्ता था इसी बात पर परमेश्वरी के बाप से राज बिगाड़ रहता था जब परमेश्वरी दत्त बिदा होने लगा चलते चलते सासने कहा कि बेटा रात की बात याद रखना और उसका ज़रूर कुछ बन्देबास करना रास्ता भर परमेश्वरीदत्त उस बात को शोचता आया घर में पहुँ-
 चा तो माने देखा कि परमेश्वरीदत्त के चेहरे पर उदासी छाई हुई है माताने समझा कि यह ज़रूर ससुराल में लड़ा है पर-
 मेश्वरीदत्त से कहा कि आखिर तूने मेरा कहना न किया परमेश्वरीदत्त ने कहा कि अम्मा भगवान की सौगन्द लड़ाई मिड़ाई कुछ नहीं हुई माने कहा फिर सुस्त क्यों है परमेश्वरीदत्त ने जवाब दिया कुछ भी नहीं सोता उठकर आया हूँ इस कारण शायद आपको मेरा चेहरा उदास मालूम होता होगा माने कहा लड़के होश में आकर तुम्हें सोता उठकर कभी थोड़ा ही देखा है सच बता क्या बात है परमेश्वरीदत्त ने लाचार होकर रात की तमास कहानी माता को सुनाई सुनते के साथ ही माता को काटो तो लोह नहीं था परंतु वह खी बड़ी बुद्धिमान थी

कहने लगी अगर्चि मेरी इच्छा यह थी कि जब तक मेरे दम में दम है तुम सबको अपने कलेजे से लगाये रहूँ और तुम दोनों भाई मिल चुलकार रहे परंतु मैं देखती हूँ तो सामान उलटे र नज़र आते हैं ले आज मैं तुम्हसे कहती हूँ कि व्याह के दूसरे महीने से तेरी बीबी का इरादा अलग घर करने का है तू जो दस रुपये महीने के महीने लाकर सुभके देता है उसको बड़तबुरा मालूम होता है रात्रिदिन मैं बहू के सहेलियों से सुनती रहती हूँ कि बहू महल्ला तो पदरवाजे में मकान लेंगी यमुना को साथ ले जायगी जब तक यह सब लड़कियां इकट्ठी बैठी रहती हैं यही जिकिर यही बातें आपस में रहा करती हैं मैंने एक बार तुम्हारी मौसिया सास के मुह पर यह बात कह दी थी कि अगर बहू हमारे साथ रहना नहीं चाहती तो अपना खाना कपड़ा अलग कर ले और इसी घर में रहे परन्तु तुम्हारी मौसिया सास से मालूम हुआ कि यह बहू को मंजूर नहीं आदमी व्याह खुशी व आराम के लिये करता है रोज़ की लड़ाई प्रति दिन का झगड़ा निहायत बुरी बात है अगर तुम्हारी बीबी को यहीं मंजूर है और अलग रहने से उसको खुशी है तो सुभके उ-
त्तर नहीं जहाँ रहे खुश व आवा दर हो परमेश्वर ने एक मास ता संतान की हमारे पीछे लगा दी है सो कभी तुम इधर के निकले एक नज़र देख लिया सब र आ गया घर के काम धंधा से कभी छुट-
कार मिलता तो मैं आप चली गई तुमको देख आई यह कहना था कि परमेश्वरी दत्त का जी भर आया और बेअखुतियार रोना शु-
द्ध किया और यह समझा कि आज माता से जुदाई होती है माता भी रोई थोड़ी देर पीछे परमेश्वरी दत्त ने कहा कि मैं तो अलग नहीं रहूँगा बीबी रहे या जाय माने कहा अरे बेटा यह भी कहा होती है अशराफ़ों में कहीं बीबी मियां भी छूटे हैं तुमको अपनी उमर इन्हीं के साथ काटनी है हमारा क्या है हम मरने के नज़ा-
दीक पञ्च चुकी हैं आज मरे कल दूसरा दिन है मेरी सलाह मानो तो जो यह कहे सो करो हमने जिस दिन तुम्हारा व्याह किया उसी दिन से तुमको अलग समझा तुम अनाखि बेटे न मैं

अनोखीमा कौनबटा अपनीमाके साथ रहाहै परमेश्वरीदत्त ने अपने मित्रोंसेभी सलाह पूंकी सबने यही कहा भगडारफा करना बेहतर है और साथ रहने पर क्या माता पितासे अलग रहे परन्तु उनकी खिदमत और ताबेदारी करो जबसब लोगोंने यही सलाह दी तो परमेश्वरीदत्त ने मनमें शोच कि अलग रहकरभी देखलो अगर यह स्त्री सम्बलजाय और घरको घर समझे बदमिजाजी बदजबानी छोड़दे तो अलग रहना ऐव व गुनाह नहीं यही न कि गृहस्थी की फ़िकर करनी पड़गी और तंगी से गुजरेगी सो संसार में रहकर फ़िकरसे किसी स्वरत छटकारा नहीं है अबभी कुछचिन्ता नहीं है यह रोज़ का भगड़ा तो कितना बड़ा लोभ है और रोज़ी का अंदेशा भी बेजा है जितनी होती तकदीरमें है बहरहाल पज़्चेगी आदमी का उपाय और तदवीर को इसमें क्या देखल है यह शोचकर परमेश्वरीदत्त ने अलग होजाने का इरादा पक्का कर लिया संयोगसे इसीके मा बापके मकान के पास एक घरभी खाली था एक रुपया माहवारी किरायापर उसको ठहरा लिया बल्कि दरवाजे में कुफ़ल देकर सरखुत भी लिखदिया और ससुरालमें कहनाभेजा कि मकान लेलिया है अबआओ तो नये घरमें चलो और माता पिता सेभी कह दिया कि यही गंधी वाला मकान लेलिया है माता ने जितना असबाब बहू काथा कपड़ोंकी संदूक वरतन बिछोना मसहरीपलंग सब एक अलहदा कोठरीमें रखवा दिया शाम को बहूभी आपज़ंची सबेरे उठ माताने कोठरी खोल परमेश्वरी दत्तसे कहा कि लोभाई अपनी चीजें तुम दोनों मियां बीबी खूब देखभाल लो परमेश्वरीदत्तने कहा अम्मा तुम यह क्या कहती हो क्या ये चीजें कोई ग़ैरजगहथी माताने कहा बेटा यह बात नहीं है ऐसा नहो उठाने बैठाने में कोईबस्तु इधरकी उधर होजाय और कहारीसे कहा कि तुमसब ये असबाब गन्धीवाले घर में पज़्ंचा दो इतनेमें परमेश्वरी की सब सहेलियां भी आ पज़्ंची बात की बात में सब असबाब नये घरमें पज़्ंच गया परमेश्वरी

बहुत आनन्दसे नयेघरमें आकर बसीतीनदिन तक दोनोंवक्त
परमेश्वरी दत्तकी माताने पूरी तरकारी खानेको भेजी चौथे
दिन परमेश्वरी दत्तने बीबी से कहालो साहब अब कुछ खाने
का बन्दोबस्त शुरूअहे। बीबीने जवाबदिया सबअसबाब अभी
बेठिकानेपडा है यह रखजायेतो फरागत से चंडियां चूल्हेको
देखूं अभी तो सुझको सावकाश नहीं गरज सात दिन तक
बाजारसे पूरी मिठाई मंगवाते और दोनोंमियां बीबी खालेते
परमेश्वरी दत्तने आखिर रोज २ तकजा करके बीबीसे खाना
पकवाया बीबीने कभी खाना पकाया न था रोटी पकाई तो
अजब स्वरत की न गोल न चौखुटी एक कान इधर निकला
ऊआ और चारकान उधरकिनारे मोट बीचमें टिकियाकहीं
जलीकच्ची धुयेमें काली और दाल जो पकाई तो पानीअलग
दाल अलग गरज बीबी ने ऐसा अच्छा खाना पकाती थी कि
जिसको देखकर भूख भाग जाय दो एक दिन तो परमेश्वरी
दत्तने सबरकिया आखिरको उसने अपनी माके घरका खाना
शुरूअ करदिया बीबी ने भी अपने आराम का टिकाना कर
लिया दोनोंवक्त बाजारसे कचौरियां पूरी बरफ़ी मलाईमंगा-
कर खालियाकरती थी खाना जो पकता भोंदकुंजडेकी बेटे
चुनियां और बख्शगन्धीकी लड़की जुल्फन वगैरह खालेतीं
परंतु दशरूपये महीने में यह चखोतियां क्योंकर होसकी हैं
चुपके चुपके असबाब विकने लगा परमेश्वरी दत्त को इसकी
खबर भी न हुई एक दिन परमेश्वरीदत्त नौकरी पर गया था
बीबी दो पहरको सोगई थी चुनियां कुंजड़िन जोआई उसने
देखा बहू बेखबर सोरही है उसने अपने भाई पीरूको खबर
करदी वह बड़ाचार और बद्माशया बहूतो सोतेकी सोती
रही पीरू आकर दिन धारे तमास बरतन चरा कर लेगया
बहू उठी तो देखा घरमें भाडूदी हुई है कोठरी में तालालगा
ऊआ था उसका असबाब तो बचा बाकी जो चीज ऊपर थी
एक २ करके चार लेगया था अब पानी पीनेतक को गिलास
न रहाथा परमेश्वरीदत्त नौकरीपरसे आया तो सुनकर प्रहत

उदास हुआ परंतु अब पछताये क्या होता है चिड़िया चुन गई
 खेत बीबीसे खूब लड़ा और खूब शिरपीटा आखिर तो धोकर
 बैठ रहा कर्ज दास करके हलकी हलकी दो डेग चियां मोल
 लाया छोटे बरतन भासे मांगलिये परात तथा ताली भास ने
 भेज दी गरज इसी प्रकार काम चल निकला संयोग से एक
 कुटनी भी उन दिनों इस शहरमें आई थी और तमाम शहर
 में उसका गुल था परमेश्वरीदत्त ने भी बीबीसे कह दिया था
 कि अजनबी स्त्रीको घरमें मत आने देना इन दिनों एक कुटनी
 आई हुई है कई घरोंको लूट चुकी है परंतु बीबी निहायत मूर्ख
 और ना समझ थी उसकी प्रकृति थी हर एकसे जल्द मिल जाना
 एक दिन वही कुटनी भगतिनका भेष बनाये उस गलीमें आई
 यह भगतिन मूर्ख स्त्रियोंके बहलाने के हेतु अनेक प्रकार की
 बस्ते और बज्जत सी दवायें अपने पास रखती थी गलीमें आकर
 जो इसने अपनी दूकान खोली तो बज्जत भी लड़कियां इकट्ठा
 हो गईं परमेश्वरीने भी सुना चुनियां कुंजड़िनसे कहा जब भग-
 तिन गली से उठने लगे तो यहां लिवालाना हम भी उसकी
 चीजोंको देखेंगी चुनियां जाखड़ी हुई और भगतिनको लिवा
 लाई परमेश्वरीने बज्जत भाउभगति से भगतिनको पास बिठ-
 लाया और सब बस्ते देखीं सुरमा व संगयशबकी तख्ती पर-
 मेश्वरीने पसंद की भगतिनने परमेश्वरीको बातोंमें टाल लिया
 कि यह स्त्री ठव पर जल्द चढ़ जायगी एक पैसा का बज्जत
 सुरमा तौल दिया और दो आने का संगयशब की तख्ती दी
 और फीरोजकी अंगूठी सुफतदी परमेश्वरी रीझ गई भगतिन
 ने ससुद्र का हाल दारिकापुरी और रामेश्वर और जगन्नाथ
 की कौशिक्यत और दिल से जोड़कर दो चार बातें ऐसी की
 कि परमेश्वरी ने बज्जत प्रीतिसे सुनी भगतिनने पूछा कि क्यों
 बी तुम्हारे कोई बालबच्चा नहीं परमेश्वरी ने आह खींच कर
 कहा कि हमारे ऐसे भाग कहां थे भगतिनने पूछा ब्याहको
 कितने दिन ऊये परमेश्वरी ने कहा कि अभी वर्ष दिन भी
 नहीं हुआ परमेश्वरी के अज्ञानता का अब तो भगतिन को

निश्चयज्ज्ञा और दिलमें कहने लगी इसने संतान का नाम
 सुनकर ऐसी आह खींची जैसे कोई वर्षों का उम्मीदवार हो
 भगतिनने कहा ना उम्मीदी की बात नहीं है तुम्हारे तो इतने
 बच्चे होंगे कि तुम सन्हाल न सकोगी अलबत्ता इससमय अकेले
 घरमें जो घबड़ाता होगा फिर भगतिन ने पूछा मिथां का क्या
 हाल है परमेश्वरी ने कहा सदा सुखसे नाराज रहा करते हैं
 गरज पहिलेही सुजाक्कातमें परमेश्वरी ने भगतिनसे ऐसी बेत-
 कलुफी की कि हाल बिलकुल उससे कह दिया भगतिन ने
 बातों २ में तमाम भेद मालूम कर लिया एक पहर भगतिन
 बैठी रही इसके पीछे बिदा होने लगी परमेश्वरी ने चिरोरी
 की और कहा भगतिन अब कब आओगी भगतिन ने कहा
 कि मेरी भानजी चौकमें एक घरमें व्याही है इनदिनों बज्रत
 लेशित है उसकी बीमारी की खबर सुनकर मयुरासे इलाज
 करनेके हेतु आई हूं उसके दवा दरमनसे सुझको फुरसत कम
 होती है तिसपर भी अगर परमेश्वर ने चाहा तो दूसरेतीसरे
 आन तुमको देखजायाकहूंगी अगले दिन भगतिन फिर आ
 मी नूदहुई और एक देशमी इज्जारबन्द लेतीआई परमेश्वरी
 दूरसे भगतिन को आतेदेख आनन्द होगाई और पूछा इजा-
 रबंद कैसा है भगतिन ने कहा बिकाऊ है परमेश्वरी ने पूछा
 कितनेका है भगतिनने कहा चारआनेका चौकमें एक महा-
 जनकी खी रहती है उसका पुनष सरगया है अकेली है और
 अब गरीबहोगई है असबाब बेचर कर गुजर करती है बज्रत
 चीजें मैं उनकी बेचलादिया करतीहूं परमेश्वरी इतना सस्ता
 देखकर लोटहोगई तुरंत पैसे निकाल भगतिनके हाथ दिये
 और बज्रत गिड़गिड़ा कर कहा कि जो अच्छी वस्तु बिकाऊं
 ज्ञा करे पहिले सुझको दिखालिया करो भगतिन ने कहा
 बज्रतअच्छा पहिले तुम पीछे और उसके पीछे इधरकी बातें
 ज्ञा की चलते हयें भगतिन ने एक बटुआ निकाल उसमें
 एक डबियापी डबिया के अन्दर कागज की पुड़िया से थोड़ी
 लौंगें थीं उनमें से दो लौंगे परमेश्वरी को दी और कहा कि

संसार में प्रीति इसी हेतु ऊँचा करती है कि एकको दूसरे से लाभहोवे लौंगै मैं तुमको देतोहूँ एक तो तुम अपनी चाटीमें बांधलो दूसरी बेहतर था कि तुम्हारे खामीके पगड़ीमें रहती तुम्हारे खामी कदाचित् संदेहकरें खैरतकियेमें सींदो और उनका प्रभाव आजही से देख लेना परंतु इतनी एहतियाज करना कि पाक साफ जगह में रहे और अपने डीलके सुवा-
फ़िक एक तागा सुझको नापदो मैं तुमको एक गंडा बनवा लादूंगी जबमें द्वारिकापुरीको गई थी तो उसजहाज पर जिस परमैचढ़ी थी जैपुर नगरीकी रानीभी सवार थी शायद तुमने उनका नाम भी सुना हो गंगारानी उनका नाम था सब कुछ उनको परमेश्वरने दे रक्खा था धनकी कुछ गिनती न थी नौकर चाकर लौंडी गुलाम पालकी नालकी सभी कुछ था एक तो संतान न होनेसे उदास रहता करती थी दूसरे राजा जी को उनकी कुछ प्रीति न थी शायद पुत्र न होनेके कारण कुछ प्रीति न करतेहों लेकिन रानी रूपस्वरूपमें चांद सूर्य के समान थी और इससुन्दरताई और धनपर मित्राज ऐसा सादा कि हम ऐसे नाचीजोंको बराबर बैठाना और बात पूछना रानीको फकीरोंसे बड़त प्रीति थी एकदफ़ा सुना कि तीन कोसपर उनके घरसे कोई फकीर आया है अपने घरसे उठकर नंगेपांव उसके पास रातको गई और पहरभर तक हाथजोड़े खड़ीरहीं एक मर्तवा जोशाहजीने आंखउठाकर देखा कहा जामाई रातको ऊँकमिलेगा रातको रानीने सपने में देखा कि कोई कहता है कि द्वारिकापुरी में जाओ वहांसे सुराद मिलेगी सबेरे से उठकर रानी ने द्वारिका जाने की तैयारी शुरू की यहाँ से गरीबों को अपने पाससे खाना और किराया सवारी का दे कर अपने साथ ले गई उनमेंसे एक मैभी थी हरघड़ीके पास रहने से रानी सुझपर बड़त दयाकरनेलगी और सहेली कहा करती थी किनारे ससुद्रके जब पड़ंची जहाज किराये किया और सब सवारहोकर द्वारकापुरीमें पड़ंचे द्वारकापुरीमें सब मन्दिरों की रानीने सबसमेत दर्शनकिया और बड़ाभगडारा

किया थोड़े दिन पीछे सुना कि द्वारिकापुरी से दशकौश पर एक ऊंचे टीले पर एक योगी रहता है जो गयासुराद ले कर आया सो रानीभी पांच सहेलियों सहित कि जिसमें से एक मैसी थी उस टीलेके ओर खानाजई जब उस टीलेके नज़दीक पहुंची तो देखा कि चारों ओर झाड़ी झंखार है और बहुत अच्छी सुगन्ध उसमेंसे आ रही है जब चलते २ टीले पर पहुंची तो देखा कि योगी अकेले एक गड्ढेमें रहते हैं बहुत अच्छा स्वरूप है योगीने हम सबको देख कर आशीर्वाद दिया और रानीको बारह लौंगे फूँक कर दीं और सुभसे कहा चलीजा मयरा आगरेमें लौंगोंका काम बनाया कर बेटीउन बारह लौंगों मेंसे ये दो लौंगे हैं द्वारिकापुरी का तीर्थयात्रा करके रानी रामेश्वरके दर्शनको गई और वहाँसे जगन्नाथजी के दर्शन करके घरकी ओर लौटी तो राजा या तो रानीकी बात न पूछते थे या यह नौबत जई कि एक महीने आगे से आकर प्रयागमें पड़े थे ज्योंही रानी प्रयाग में पहुंची राजा ने रानीके कदमोंपर शिर रख दिया और रानीसे रो २ कर अपराध क्षमा कराया और घरको लगे छः वर्ष तक मैरानीके पास रही दूसरीचमें योगीके आशीर्वादसे लगातार ऊपर तले चार बटे मेरे रहने तक रानीके होचुके थे फिर सुभके अपना देश याद आया रानीसे छुट्टी मांगी रानी ने बहुतसा रोका मैने कहा योगी ने मयरा आगराके लोगोंकी टहल वो सेवा मेरे सिपुर्द की है इसलिये सुभे वहाँजाना अवश्य है यह सुनकर रानीने लाचार सुभके विदा किया और चार लौंग दीं यह कहानी सुनकर परमेश्वरी तन मन से भगतिन की सुअत-कद हो गई भगतिन तो लौंगे देकर विदा जई परमेश्वरी ने नहाकर कपड़े बदल कर सुगन्ध लगा एकलौंग तो परमेश्वर का नाम ले कर अपनी चोटीमें बांधी और भियांके पलंग की चादर और तकियोंका शिलाफ बदल एकलौंग किसी तकिये में सीदी परमेश्वरीदत्त जो घरमें आया तो बीबीको देखा साफ सुथरे पलंगकी चादर बेकहे बदली है खुश हुआ और प्यारसे

बात करने लगा बीबीने कहा देखो आज हमने एक चीज मो-
लली है यह कह कर इजारबन्द दिखाया परमेश्वरीदत्तने कहा
कितने को लिया है बीबीने कहा तुम आंको कितने का है वह
इजारबन्द खासलाहौरका बना हुआ निहायत अच्छा था
कलावतून के सुखे दानों किनारे लगे हुये थे परमेश्वरीदत्त ने
कहा दारुपये से किसी प्रकार कम नहीं है बीबीने कहा चार
आने को लिया है परमेश्वरीदत्तने कहा सच कहे बीबी ने कहा
तुम्हारे शिरकी सौगन्ध चारही आने को लिया है परमेश्वरी ने
कहा एक भगतिन बड़ी नेक है ब्रह्मतद्दिनों से इस गली में आया
करती थी किसी महाजन की स्त्री का है वह बेचने को लाई थी
यह कह कर सुरसा व संगयशव की तख्ती फीरोजा की अं-
गूठी परमेश्वरी ने दिखाई लालच ऐसी बुरी बला है कि बड़ा
मयाना आदमी भी इससे धोखा खा जाता है जंगली जानव
मैंना तोता लाल बुलबुल आदमी की शकल से भागते हैं तुरंत
दाने के लालच से जाल में फंस जाते हैं और जन्म भर पिंजड़े में
कैद रहते हैं इसी तरह परमेश्वरीदत्त भी अपना लाभ देख कर
आनन्द हुआ फिर परमेश्वरीने कहा कि वह भगतिन महाजन की
स्त्री की संपूर्ण वस्तु जो विकने निकलेगी मेरे पास लाने का वादा
कर गई है परमेश्वरीदत्त ने कहा अवश्य देखना चाहिये परंतु
ऐसा न हो कि चोरी का माल हो पीछे खुराबी होय और भग-
तिन कोई ठगनी न हो परमेश्वरीने कहा कि भगवान २ करो
भगतिन ऐसी नहीं है परमेश्वरीदत्त से जो आज ऐसी बातें
हुई उसको बीबी को लोगों पर विश्वास हो गया दूसरे दिन
चुनिया कुंजड़िन को भेज भगतिन को बुलवाया आज परमे-
श्वरी बेटोबेनी और भगतिन को साता बनाया रात के समय
परमेश्वरीदत्त से फिर भगतिन का चर्चा हुआ तब परमेश्वरी
दत्तने कहा कि देखो हे शिष्याररहना इस भेष में दूतियां और
ठगनियां ब्रह्मतद्भाकरती हैं परंतु लालचने परमेश्वरीदत्त की
बुद्धि पर ऐसा पर्दा डाल दिया था कि इतनी मोटी बात उसने न
समझी कि दारुपये का माल चार आने का कोई बे प्रयोजन

देता है परमेश्वरीदत्तको उचितथा कि उसभगतिनके आनेको
 मनाकर देता और सबवस्तु उसकी फिरवादेता परमेश्वरीको
 तो इतनाज्ञानही नहीं था कि इसबातको समझती कई दिन
 पीछे परमेश्वरी ने भगतिन से पूंछा क्यों भगतिन आज कलह
 के ईवस्तु नहीं लाती भगतिन ने जानलिया कि इसको अच्छी
 चाटल ग गई है कहा तुम्ह रेटवकी कोई वस्तु मिले तो लाऊं
 कईदिन पीछे झूठे मोतियोंकी एकजोड़ी लाई और कहालो
 बीबी ये महाजन की स्त्रीके नथके मोती हैं नजानों हजार की
 जाड़ी है या पांचसौकी रामदयान्त जौहरीको मैंने दिखाई थी
 दोसौमेरेरूपये पल्ले बांधे देताथा मैं महाजनकी स्त्रीसे पचास
 रूपयेपर लाई हूं तुमलैलो फिर ऐसासच्चा माल नमिलेगा पर-
 श्वरीने कहा पचासरूपये तो मेरे पास नहीं हैं भगतिनने कहा
 क्याऊआ बेटी पड़चियां बेचकर लैलो नही तो आजये मोती
 विकजायगे भगतिनने इसठवसे कहा कि परमेश्वरी तुरंतगहने
 का सटूक उठालाई और पड़चियां निकाल भगतिन कोदीं
 भगतिन ने परमेश्वरी का गहना देखकर कहा कि अयहय
 कैसी बुरी तरह गहना मूलीग जर के समान डाल रक्खा है
 बेटी धुकधुकी में डोरा डलवाओ बाली पत्ते मगर मुर्कियां
 बाजूबन्द मैले चीकट होगये हैं मैल सोनेको खाये जाता है
 इनको उजलवाओ परमेश्वरीने कहा कौन डोरा डलवावै कौन
 उजला करालाये उनसे कहती हूं तो कहते हैं सुभे सावकाश
 नहीं भगतिनने कहा ऊईबेटी कौन बड़ा काम है मोतीरहने
 दो अभी मैं डोरा डलवालाऊं और जो गहना मैला है सुभे
 निकाल दो मैं अभी उजलवा दूं परमेश्वरीने सब गहना सौंपि
 दिया भगतिनने कहा सुंगियामहरी को भी मेरे साथ कर दो
 वह सुनारके पास बैठी रहैगी मैं पटुवासे डोरी डलवाऊंगा
 परमेश्वरीने का अच्छा यह कहकर सुंगिया को आवाज दी
 वह आई तो भगतिनने कहा मेरे साथचल सुनार की दूकान
 परबैठी रहियो भगतिनने गहनालिया सुंगिया साथझईगली
 से बाहर निकल भगतिनने रुमालखाला और सुंगियासे कहा

ला श्री उजलवाने का अलग करने और डोरा डलवान का अलग गहनेको अलग करते २ भगतिन बोली अयेना ककी लौंग कहां है सुंगिया बोली इसीमें हागी जरा भरकी तेचीज है इस पोटीमें देखा फिर आपही आप बोली अय हय पानदान के ठकनेपर रह गई है अरी सुंगिया दौड़ियो जल्दीसे लेआ सुंगिया भागी २ आई और दरवाजे में से चिझाई बीबी नाक की लौंग पानदान के ठकनेपर रह गई है भगतिन ने मांगी है जल्दीदो भगतिन गलीके नुझड़पर मोहन बनिये की दूकानके आगे बैठी है यह कहना था कि परमेश्वरी का साथ ठनका सुंगियासे कहा बाउली ऊई है कौसी लौंग मेरे पास कभी तूने देखी है अरी जल्दीदौड़ कहीं भगतिन चली न जाय सुंगिया छलटेपाओं दौड़ी गई भगतिनको इधर देखा उधर देखा कहीं पता नथा परमेश्वरीसे आकर कहा बी भगतिन का तो कहीं पता नहीं बाजा तक देख आई इतनी देर में नहीं मालूम कहां गुप्त हो गई यह सुनकर परमेश्वरी कहने लगी हाय मैं लुट गई हाय मैं लुट गई अरे लोगों परमेश्वर के लिये दौड़ियो चौकत क लोग दौड़े वहां जाकर प्रकट हुआ कि कहीं से वह तीव्रहाती महीने भरसे किराये पर आकर रही चार दिन से मकान छोड़ चली गई अब क्या हो सकता था परमेश्वरी दत्त ने आकर चुना शिरपीटा और जोड़ू से कहा अरी तू घरको सटिया मेल करके छोड़ गी मैं तुझको पहिले से जानता हूँ जोड़ूने कहा चल दूर हो अब बात बनाने खड़ा हुआ इजाबंद देखकर तूने आय सुझसे नहीं कहा कि हां महाजन की स्त्रीका सब असबाब अवश्य देखना इस विधिसे अच्छे प्रकार की लड़ाई दोनों स्त्री पुरुष में हुई तमाम सुहृद्वा इकट्ठा हो गया बात २ पर चली तो प्रकट हुआ कि इसी भगतिन ने कंधा गी बाजार से लाला गुलजारीमल की जोड़ूका तमाम गहना इस वहाने से ठग लिया कि एक फकीर से दूना कराला दूंगी रानी कटरा में जवाहरमल महाजन की बेटीसे ऐसी प्रीति बढ़ाई कि उसका गहना संगनीके वहाने से उड़ाले गई गहना तो इस प्रकार पर गया बरतन पहने चोरी

जाचुके थे हजाररूपये वो मोतियोंकी जोड़ी जो लोगोंने देखी
 सो तीनपैसेकी थी घानामें इतितना ऊई लोगोंने बहुत ढूंढा
 भगतिनका पतानमिला परमेश्वरीके दहेजमें जो कपड़े मिले
 थे अब उनका हाल सुनिये जब तक परमेश्वरी सास के साथ
 रही सास दशमें मंद्रहवें दिन निकालकर धूपदेदिया करती
 थी गुरुअ बरसात में परमेश्वरी अलग हो कर रहो कपड़ों
 का संदूक जिस कोठरी में जिस प्रकार रक्खा गया था तमास
 बरसात गुजर गई उनी विधि रक्खा रहा जाईके गुरुअ में
 दुलाईकी लूकत ऊई और संदूक खोला गया बहुतसे कपड़ों
 को दोसक चाटगई थी लूहोने काट रवगारें डालादिये थे कोई
 कपड़ा साबित नहीं बचने पाया जो लड़कियां छुटपनमें लाड़दुला-
 रमें रहा करती हैं और गुनहंग नहीं सीखती परमेश्वरी की तर-
 हयों जन्म भर लेश और दुख भोगती हैं परमेश्वरी का हाल नितना
 तुमने पढ़ा उससे तुमको प्रगट हुआ होगा कि परमेश्वरी को माता
 और नानी के लाड़ने उसको जन्म भर कैसे लोशमें रक्खा लड़क
 पनमें परमेश्वरीने न तो कोई गुण सीखा न कुछ उसके मिजाज
 की दुखस्ती ऊई जब परमेश्वरीने साससे अलग हो कर घर किया
 बरतन भांडा बख्श था भूषण सब कुछ उसके पास था परंतु गृह स्त्री
 करने का ढंग नहीं जानती थी थोड़े दिनमें तमास असबाब
 माल मिट्टीमें मिला दिया और एकही वर्षमें हाथकान से नंगी
 रह गई अगर परमेश्वरी दत्त भी उसकी तरह बुद्धि हीन और
 बदमिजाज होता तो शायद एक दूसरेसे जुदाई हो जाती परंतु
 परमेश्वरी दत्त ने नीति बुद्धि और भलमंसी को बरता ॥

सरस्वती का वृत्तान्त ॥

अब सरस्वती का वृत्तान्त सुनो वह पुत्री उस वरमें ऐसी थी जैसे
 बागमें गुलाबका फूल या मनुष्यके शरीरमें नेत्रहर एक प्रका-
 रका गुण और ढंग उसको प्राप्त था बुद्धि गुण धीर्यता ज सब
 बात परमेश्वरने सरस्वती को दी थी लड़कपन से उसके खेल कूद
 और हंसी और छेड़से नफरत थी पढ़ना या घरका कार्य करना
 कभी उसको किसी ने प्रयोजन ब्रूते या किसीसे लड़ते नहीं

दखा महल्ले कीजितनी स्त्रियां थीं सब इसको पुत्री के समान जानती थीं क्या अच्छे भाग्य उसमाता पिताके थे जिसकी बेटी सरस्वती थी और क्या अच्छे नसीब उस घरके जिसमें सरस्वती बह्वन करजाने वाली थी अब परमेश्वर की कृपा से सरस्वती की अवस्था तेरह वर्ष की हुई बात तो इसकी अम्बिका दत्त से ठहरी ठहराई थी अब चर्चा होने लगा कि महीना और दिन ठहर जावें उधर अम्बिका दत्त की माता परमेश्वरी के ठंग देख इतना डर गई थी मसल है कि दूध का जलामट्टा फूट पीता है परमेश्वरी की स्वरतस बदन पर रोंगरेखड़े होते थे इसलिये अम्बिका दत्त की माता का इरादा था कि छोटे लड़के की मंगनी दूधरे घरमें कहां परमेश्वरी दत्त को किसी प्रकार यह बात मालूम हुई इसने माता से कहा अम्मा मैंने सुना है कि तुम अम्बिका दत्त की मंगनी कुड़ाया चाहती हो माता ने कहा क्या बताऊं बेटा बड़े शोच में हूं क्या कहां क्या न कहां तुमसे मेरी आंख सामने नहीं होती सुझावों परमेश्वर ने तुम्हारा अपराधी बना दिया देखिये अम्बिका दत्त के भाग्य कैसे हैं परमेश्वरी दत्त ने कहा अम्मा परमेश्वर की सौगन्ध सरस्वती हजार लड़कियों में से एक है जन्म भर दीवा ले कर दूढ़ाँगी तो सरस्वती को सी बह्वन पाओगी गुण रूप दोनों परमेश्वर ने उसको दिये हैं कुछ डर न करके ब्याह कर डालो और उसकी बड़ी बहिन पर ध्यान मत करो हर एक का स्वभाव और एक की प्रकृति अलग २ होती है ब्याह के बाद तुमको मेरी बात का विश्वास हो जायगा परमेश्वरी दत्त ने जो बज्रतसी स्तुति सरस्वती की कीतो उसकी माता राजी होगई और जो मंगनी पहिले ठहरी थी वह पक्की होगई गरज दोनों समवियानों के सलाह से यह बात ठहरी कि फागुण शुदी दशमी को ब्याह हो जाये सरस्वती का बाप देवी दत्त कांगड़े के जिल्लम में तहसीलदार था उसको चिट्ठी भेजी गई चिट्ठी के पङ्क्तियों से वह बज्रत आनन्द हुआ क्योंकि सरस्वती को सब बच्चों में बज्रत जानता था परंतु छुट्टी की अर्जा भेजी तो छुट्टी नहीं मिली छुट्टी न मिलने से बज्रत उदास हुआ परंतु क्या करता चपहोकर

बैठ रहा और अपने बड़े बेटे ईश्वरीदत्त को पांच सौ रूपये दे कर घर बिदा किया घर पर गहना बख्खरतन सब पहले से मौजूद था घर पर पड़चकर चाबल घी गेहूं मसाला नमक और वस्तु ईश्वरीदत्त ने मोलनी ब्याह की तैयारी होने लगी माता का दूरा-दाया कि सरस्वती की बड़ी बहिन से वह चढ़ कर दहेज मिले जोड़े भी इस के भारी हों गहने के अदद भी अधिक हों वरतन भी दहेज के गरुये २ दिये जाय सरस्वती तो उसी घर में रहती थी जो बात होती उसको अवश्य मालूम हो जाती जब सरस्वती ने सुना कि सुभक्त को दीदी से अधिक दहेज मिलने वाला है अज्ञानी लड़की होती तो प्रसन्न होती पर सरस्वती को दुःख हुआ और इस चिन्ता में ऊई कि किस प्रकार से माता को मना करूं अन्त को जयजयवन्ती अपनी मौसेरी बहिन से खिसियाते २ कहा कि मैंने ऐसा २ सुना है सुभक्त को इसका बड़ा शोच लगा है कई दिन से बड़ी चिन्ता में थी कि परमेश्वर क्या करूं अच्छा हुआ तुम आ गई हम जो ली के कारण तुमसे कहती हूं संकोच नहीं कोई अम्मा को इतनी बात समझा दे कि सुभक्त को दीदी से अधिक दहेज न दे जयजयवन्ती ने सुन कर कहा तुम तो कोई तमाशे की स्त्री हो वही कहावत है गधे को लोन दिया उसने कहा मेरी आंखें दुखती हैं भगवान दिलवाता है तुम क्यों इनकार करो सरस्वती ने कहा तुम दीवानी हो इसमें कई बुराईयां हैं दीदी के स्वभाव से तुमवांक्तिफ हो उनको जहर रंज होगा नाहक माता से बदमजगी होगी सुभक्त से भी उनको बदगुमानी होगी जयजयवन्ती ने कहा बुवा इसमें रंज को क्या बात है अपना २ भाग्य है और समझने का तरह २ की बातें हैं बादशादी के उनको क्या २ नहीं दिया गया उसकी कसरदूधर समझले सरस्वती ने कहा सच है परंतु नाम तो दहेज का है कि छोटे को अधिक मिलेगा तो बड़े को रंज होगा एक सहल्ले का रहना रोज का मिलना मिलाना जिस बात से दिलों में फर्क पड़े क्यों की जाय जयजयवन्ती ने कहा बहिन नाहक तुम अपनी हानि करती हो अजी महीने दो महीने में सब भूल बिसर जायगी सरस्वती ने कहा अरी बहिन

भगवान् करी हानि लाभ कैसा कहीं माता पिता के देने से पूरी पड़ती है या दहेज से जन्मकटता है परमेश्वर अपनी कृपा से दे तुम दूसरातमें हठमत करो नहीं मैं कुछ दूसरा यत्न करूँ सुझाऊँ किसी प्रकार मंजूर नहीं है गरज कि थोड़े अरसे में सरस्वती की माता के कानतक यह बात पड़च गई और वह भी कुछ शोच समझ अपने दूरादे से बाज रही और मनमें कहने लगी देने के सौ ठव हैं दूसरी जगह समझ लूँगी गरज कि फागुन शुद्धी दशमी को व्याह होगया ईश्वरीदत्त अकेले ने अच्छे विधि बहिन का व्याह किया और बराती सवराजी और प्रसन्न रहे जब सरस्वती के विदा का समय पड़चा सब पर सदमाथा माता तो सरस्वती के विदाग से बेसुधि होगई थी बिरादरी की बहू बेटियों की यह दशा थी कि सरस्वती को गले लगा कर रोती थीं और सब के मन से आशीर्वाद निकलता था सरस्वती इन सब आशीर्वादों का बड़ा भारी दहेज ले कर ससुराल में पड़ची ससुराल की जो रीति वर रखी वह ससुराल में ऊई आगे चल कर तुम को मालूम होगा कि सरस्वती ने गृहस्थी को किस विधि से संहार किया क्या सुशक्तिले उस के आगे आईं और उसने अपनी बुद्धि से क्यों कर उस को दफ्ता किया जरा सरस्वती के बरताव को परमेश्वरी के बरताव से मिलाना चाहिये कि सरस्वती माता को दूसरी बेटि और सास की दूसरी बहू थी दोनों ओर की अर्मान परमेश्वरी के व्याह में निकल चुके थे परमेश्वरी सोलह वर्ष की व्याही गई थी और सरस्वती व्याह के समय पूरे तेरह वर्ष की न थी जब परमेश्वरी का व्याह हुआ उस का दूलह परमेश्वरीदत्त दशरूप के नौकर था और सरस्वती का दूलह अश्विकादत्त अभी पढ़ता था अश्विकादत्त परमेश्वरीदत्त के वनिसवत कमदूल्य कामअकाल था परमेश्वरी को दो वर्ष तक बाल बच्चों के बखेड़े से छुड़ी रही और सरस्वती को परमेश्वर ने व्याह के दूसरे वर्ष छोटी सी अवस्थामें माता बना दिया पस सरस्वती की दशा परमेश्वरी के सामने अच्छी न थी परन्तु सरस्वती का छुटपन से तालीम ऊई थी राज बरोज घर में बरकत विशेष

होती जाती थी यहाँ तक कि परमेश्वरी का नाम भी कोई नहीं जानता और कंधारी बाजार में सरस्वती का वह महल खड़ा है कि आकाश से बातें करता है सोंधीटोले में वह ऊँचा मन्दिर जिसमें है जिस व कुआँ है सरस्वती का बनवाया हुआ है प्रयाग में एक धर्मशाला इसी सरस्वती का बनवाया हुआ है जिसमें दो सौ अध्यागत संन्यासी का भोजन मिलता है काशी में एक पाठशाला संस्कृत की बनवाई है जिसमें विद्यार्थियों का भोजन वस्त्र पुस्तक पाटी मिलती हैं जब ईश्वरीदत्त ने अपने बापको इतल्ला की कि परमेश्वर की कृपा से विधिपूर्वक सरस्वती का विवाह हो गया तो बापने परमेश्वर का धन्यवाद किया परन्तु बेटी को जुदाई का रंज बहुत दिन तक रहा सरस्वती के व्याह्र होने पीछे उसको पिता देवीदत्त ने जो चिट्ठी उसको लिखी वह चिट्ठी भी देखने योग्य है ॥

चिट्ठी देवीदत्त की ॥

स्वस्ति श्री चिरंजीविनी बेटी सरस्वती को देवीदत्त का आशीर्वाद तुम्हारे भाई ईश्वरीदत्त की चिट्ठी से समाचार तुम्हारे विदा होने का मालूम हुआ वर्षों से यह अभिलाषा मेरे हृदय में थी कि यह काम मैं अपने हाथ से करूँ परन्तु हाकिम ने छुट्टी न दी इस वजह से लाचार हुआ यह बात तुमको मालूम होगी कि सब बच्चों से अधिक सुभको तुमसे प्रीति है यह प्रीति इस कारण से थी कि तुमने अपनी सेवा और टहल से आपमेरे और सबके जी में जगह कर ली थी आठ वर्ष के दिन में तुमने मेरे घर का कुतबोक्ता अपने शिर पर उठार रखा था सुभको सदा यह बात प्रगट होती रही कि तुम्हारे सब से तुम्हारी माता को बड़ी निश्चिन्ती और सुख प्राप्त था जब कभी इस अर्थ में सुभको घर जाने का संयोग हुआ तुम्हारा बन्दोबस्त देखकर सदा मेरा नी प्रसन्न हुआ अब तुम्हारे विदा हो जाने से ऐसी हानि हुई कि उस का बदला शायद इस जन्म में नहीं मिल सकता परमेश्वर तुमको इसका अच्छा फल देवे और उस सेवा करने के बदले में तुम पर मेरे आशीर्वादों का प्रभाव प्रगट हो ईश्वरीदत्त की

चिट्ठी से सुझावो यह भी मालूम हुआ कि तुमने परमेश्वरी से अधिक दहेज नहीं लेना चाहा इससे तुम्हारी बड़ी आली हिम्मतों साबित होती है मैं उसका बदला भेजता हूँ वह यह चिट्ठी है इसको तुम दस्तूखल अमल के समान अपने पास रक्खो इन शिष्टों पर साधना करो कि जो इस चिट्ठी में लिखी हैं तो हर एक क्लेश तुम पर सहज होगा और सदा सुख से ढेर करोगी समझना चाहिये कि व्याज क्या चीज है व्याह भिन्न यही बात नहीं है कि रंगीन कपड़े पहने और मेहमान जमाइये और वस्त्र और भूषण दान दहेज पाया बल्कि व्याह से नई सृष्टि होती है नये लोगों से मासिला करना नये घास में रहना पड़ता है जिस प्रकार पहले पहल बछड़ों पर जुआ रक्खा जाता है आदमी के बछड़ों का जुआ व्याह है व्याह के पीके लड़की जो डूबती लड़का खुसम बना इसको यही अर्थ है कि दोनों को पकड़ कर संसार रूपी गाड़ी में जोत दिया अब यह गाड़ी मरने तक इनको खींचनी पड़ेगी पर बेहतर है कि मन को दृढ़ करके भारी बोझ को उठावै और जन्म के दिन जितने हो इज्जत आवसू बनाव मेल से काट दिये जाय वरना लड़ाई भिड़ाई भगड़े बखड़े गुलगपाड़ा से संसार की सुसीबत और भी अधिक क्लेश देने वाली होती है अब तुमको अथ मेरी दुलारी बेटी शोचना चाहिये कि स्त्री पुरुष में परमेश्वर ने कितना अन्तर रक्खा है स्त्री को परमेश्वर ने अवश्य पुरुष के आनन्द के हेतु उत्पन्न किया है स्त्री को चाहिये कि पुरुष को प्रसन्न रखना अफसोस है कि संसार में कौसी कम स्त्रियां इस फर्ज को पूरा करती हैं मर्दों का दर्जा परमेश्वर ने स्त्रियों पर ज्यादा किया न सिर्फ जगानी ऊँच देने से बल्कि मर्दों के शरीर में अधिक बल और उनकी बुद्धि में अधिक प्रकाश है संसार का बंदोबस्त पुरुषों के जात से होता है पुरुष कमाने वाले और स्त्रियां उनकी कमाई को अच्छे प्रकार से बर्तने वाली और उसकी निगहवान है कुनबा समान नौका के है और पुरुष उसके मालाह हैं अगर मालाह न होता नौका पानी की

लहरे में लूव जायगी या किभी किनारे पर टकर खाकर फट पड़े कुनवा में अगर पुरुष बंदोबस्त करनेवाला नहीं तो उसमें अनेक प्रकारकी खराबियां पड़ सकती हैं कभी नहीं खुयाल करना चाहिये कि संसार में सुख और धन सम्पत्ति से प्राप्त होता है अर्थात् इसमें भी संदेह नहीं है कि दौलत अकसर सुखका कारण होती है परंतु बहुत बड़े ऊंचे घरो में भी लड़ाई और झगड़े हम अधिक पाते हैं पस गृहस्थी में सुख केवल खेलखेल से होता है दारीव आदमियों को हम देखते हैं जिनकी आमदनी बहुत थोड़ी है दिनको मेहनत मजदूरी से जीविका पैदा करते हैं रात को सब मिलकर दाल रोटी से अपना २ पेट भर लेते और एक दूसरे के साथ खुश रहते हैं निःसंदेह ये लोग आपस के मेल जोल के कारण दाल रोटी और गाढ़े धोतर में अधिक सुखसे रहते हैं बनिस्वत उन राजों और रानियों से जो रात दिनकी लड़ाई झगड़े में लेश से रहते हैं अथमेरीषारी बेटी बेलमिलाप का गनीमत जानो अब देखना चाहिये कि खेलमेल किन बातों से पैदा होता है सो न सिर्फ इस बात से कि स्त्री अपने पति से प्रेम करे वल्कि प्रेमके सिवाय उसके पति का अदब भी करना अवश्य है बड़ी नाममकी है जो स्त्रीपतिको अपने समान समझे इस समय में स्त्रियों ने ऐसा बुरा दस्तूर अंगीकार किया है कि जिसवक्त चन्द सहेली आपस में बैठकर बातें करती हैं तो बड़भा यह बात होती है कि फलानी का पति उसके साथ इस प्रकार का बरतावर खता है एक कहती है कि मैंने यहां तक उनको दबाया है कि क्या ताकत जो मेरी बातको काटें और चलट कर उत्तर दें दूसरी बड़ाई मारती है जब तक घड़ियों चिरौरी न करें मैं खाना नहीं खाती तीसरी यह कहती है दसबार पूछते हैं तब मैं एक उत्तर सुशकिल से देती हूँ चौथी डींगकी लेती है वह आप पहरो नीचे बैठे रहें परन्तु बन्दी को पलंग से उतरना सौगन्ध है पांचवीं कहती है की जो मेरी जवान से निकलता है उसको पूरा कराकर रहती हूँ शादी ब्याह में दोने

टाटके भी इसी हेतु से निकाले हैं कि सियां ताबेदार रहें
 कहीं तो जूतीपरका काजलपारकर सियांके लगाया जाता
 है इसका प्रयोजन यह है कि जन्मभर जूतियां खातारहे और
 चूँन करे कहीं नहानेवक्त अंगूठेके तलेबीड़ा रक्खाजाता है
 और सियांका खिलायाजाता है कि पैरोंपडतारहे इनबातों
 से साफ प्रगटहै कि स्त्रियां पुरुषों का दर्जा और अस्वतियार
 कमकरनेपर रहतीहैं लेकिन यह तालीम बहुतबुरीहै इसका
 नतीजा बहुतअच्छा नहीं होता पुरुषों को परमेष्ठुरने सिंह
 बनादिया है अगर दबाव और जबरदस्तीसे कोई स्त्री इनको
 बस कियाचाहे तो सुदकिन नहीं बहुत रहज उपायइनको
 बसमें करने का खुशामद व ताबेदारी है जो ना समझ स्त्री
 अपना दबाव डालकर पुरुष को बस करना चाहती हैं वह
 धोखाखाती है और आदि से बीज विरोधका बोती हैं और
 फल उसका अवश्यलेश और दुःखहोगा गोकि वह इसबात
 को अभी नहीं समझती सरस्वती मेरीसलाह यहहै कि तुम
 बातचीत उठने बैठनेमें भी अपने पतिका अदब और लिहाज
 रखना क्या सबवहै कि शादी व्याह इन्हीं चाहेंसे होताहै
 और चार दिन पीछे बहू से सास नन्दों का बिगाड़ शुरूअ
 होजाताहै यह बातभी शोचनेके योग्यहै व्याहके पहले लड़-
 का मा बापमें रहता और सिर्फ उन्हींके साथ उसको वास्ताया
 म बापने उसकोपाला और यहअभिलाष करतेरहे कि बुढा-
 पेमें हमारिका मआवैगा व्याहके पीछे बहू डोलीसे उतरतेही
 शोचकरने लगतीहै कि सियां आजही मा बापको छोड़ दे
 इसलिये लड़ाई सदा बहूओं के तर्फसे शुरूअहोती है अगर
 बहूकुनबे में मिलकर रहे और कभी सासको यह न मालूम
 हो कि यह बेटेको हमसे छुड़ाना चाहती है तो कदाचित्
 भगडा न पैदाहो यहतो सबकोई जानते हैं कि व्याहकेपीछे
 मा बापसे वास्ता छोड़ेदिनका है आखिर घर अलग होगा
 स्त्री पुरुष जुदाहोकर रहेंगे संसार में यही होता आया है
 परन्तु नहीं मालूम कि मा बापने बहूओंको नाराज की नैसर्गिक

होती है कि जो कुछ होना हो इसी समय होनाय बहूँ श्रीमें एक
 टेव चुगली का होता है जिससे ज्यादा झगड़ा होता है वो
 यह है कि ससुराल की तनिक २ बात आकर मा से कहा
 करती हैं और मायें आप खोद २ कर पूँछाकरती हैं परन्तु
 इस कहने और पूँछनेसे सिवाय इसके कि लड़ाइयां पड़ें और
 झगड़े खड़े हों कुछ प्राप्त नहीं होता वाज बहू इस प्रकार की
 होती हैं कि ससुराल का कैसाही अच्छा खाना और कैसाही
 अच्छा कपड़ा न उनको मिले पर उनको आंखतले नहीं आता
 ऐसी बातों से पतिके चित्तको दुःख होता है सरस्वती इस से
 तुमको बहुत बचाव चाहिये और ससुरालके हर एक वस्तु का
 आदर करना चाहिये और तुमको सदा भोजन करके बस्त्र
 पहिनकरके खुशी जाहिर करना चाहिये जिससे मालूम हो
 कि तुमने पसन्द किया ससुरालमें नई दुल्हनको इस बात का
 ध्यान रखना चाहिये कि बेदिलीसे वहां न रहे अगर्चि जान
 पहचान न होनेके सबबसे अलवत्ता दूसरे लोगों में जो नहीं
 लगता है परंतु जोको समझाना चाहिये न यह कि रोती
 गईं वहां रहती रोती रहती जानेमें देर नही डई कि मैंके जाने
 का तत्काज्जा शुक्र अ ज्ञा बातचीतमें दर्जा और सत का खयाल
 रखना चाहिये यानी न इतना कि खुद आपही आप बकती
 रहे न इतना कि बिलकुल चुपचाप हो जावे बहुत बकने का
 अंजाम दुःख होता है जब रातदिन हजारों प्रकार की चर्चा
 होगी नही मालूम किसजिकिर में क्या बात सुंहसे निकल
 जाय व इतनी कमगोई भी न चाहिये कि बोलने के वास्ते
 लोग खुशामद करें जित ब हठ किसी बातपर नहीं चाहिये
 जो बात तुम्हारी मर्जी के खिलाफ भी हो उसे उठा रखो
 कि वह दूसरे समय बतौर सुनासिव तै होसकी है फर्मा-
 यश किसी चीज की नहीं करना चाहिये फर्मायश करने से
 आदमी नजरों से उतर जाता है और उसकी बात हेठी हो-
 जाती है जो काम सास नन्दे करती हैं तुमको अपने हाथों से
 करने में आर न करना चाहिये छोटे पर कृपा बड़ों का अदब

हर एक के मनको धारे लगने का बड़ा सुधर यत्न है अपना कोई काम दूसरों के शिर नहीं रखना चाहिये और अपनी कोई वस्तु बेखुबरी से न पड़ी रखनी चाहिये कि दूसरे उसको उठालेंगे जब दो मनुष्य चुपके २ बातें करें उनसे अलग हो-जाना चाहिये पर इसकी चिन्ताभी मत करो कि यह आपस में क्या कहते थे और अदबदाय यह भी मत समझो कि कुछ हमाराही चर्चा या अपना सुआमिला आदमी से अदबलि-हाजके साथ रक्खो जिनलोगों में बहुत ज्यादा मिलाप और ब्यौहार होजाता है उसी प्रकार उसमें रंज भी जल्द होने लगता है मैं जानता हूं कि तुम दिनरात में बे प्रयोजनभी इस चिट्ठीको कमसेकम एक बेर पढ़लियाकरो कि उसका मतलब याद रहे बाप की चिट्ठी पाकर सरखती के जीमें एक ऐसी उमंग प्रीतिकी उठी कि बे अखुतियार रीनेका जीचाहा प-रन्तु नईव्याही ऊईयी ससुरालमें रो नसकी और बापकी चिट्ठी नेचोंसे लगाकर यत्नसे पुस्तक में धरली और निथि उसचिट्ठी को पढ़ा करती और अर्थ पर चिन्तवन किया करती जबतक सरखती बे व्याही ऊई रही तो उसकाजी बहुत घबराताया इसलिये कि अचानक माताका भवन छोड़नये आश्रम और नये मनुष्यों में रहनापड़ा यह तो काम काज करने में अति चतुर और बुद्धिमानयी और बे काम काजके इसको एकघड़ी चैन न थी या महीनों कोठरी में चुपचाप बैठना पड़ा माता पिता के घर में जो इशादे प्राप्त थे वह बाक्की नहीं रहे यहां ससुराल में आतेही इसकी सब बातों का लोग देखने और ताड़ने लगे कोई सुंह देखता है कोई चाटी की लम्बान नापता है कोई डील के उठान को ताड़ता है कोई गहना टटोलता है कोई बख देखता है खाती है तो कौर पर नज़र है कि कौर कितना बड़ालिया सुंह कितनाखाला क्योंकर चबाया किस-प्रकार निगला उठती है तो देखते हैं कि दुपट्टा किस बिधि ओढ़ा चलती किस प्रकारसे है साती तो समयपर नज़र है किसवक्त सोई और कब उठी अर्थात् सब कहानी इसकी न-

जैसे सामने थीं ऐसे हालमें सरस्वतीको बड़तल्लीय होता था परन्तु यह बड़त बुद्धिमान और चतुर थी ऐसी कड़ी परीक्षा में भी पूरी निकली और सब बातें इसकी ससुराल वालों को भाई बात की तो न इतनी विशेष कि लोग कहें कौसी लड़की है चारदिन की ब्याहीने किस बलाकी बकर लगा रखी है न बचन इतने कम कहे कि लोग कहें अहंकार है भोजन किया तो न इतना अधिक किटोलेमहल्ले में चर्चा होना ऐसा कम कि सास नन्दको शिर घकाकर बैठ रहे सोई तो न इतना सबरे कि दीपक में बत्ती पड़ी पलंगपर चढ़ी और न इतनी देर तक कि लोग कहें कि पुरुषों को भी इसने मात किया है सदा की यह रीति है कि नई दुलहिनको महल्ले की लड़कियां घेरे रहा करती हैं सरस्वतीके पास भी जब देखा दशपांच मौजूद हैं परन्तु सरस्वतीने किसीसे खुशलियत पैदा न की अगर कोई लड़की दिनभर बैठी रह गई तो यह न कहना कि अपने घर जाओ अगर कोई न आई तो उससे यह न पूछा कि तुम कहाँ थी क्यों नहीं आई सरस्वती के इस प्रकार की भेट मिलानासे धीरेरे लड़कियों का जमघटा होना कम हो गया बड़भा महल्ले की कमीनों की लड़कियां तो चाट की आशनाइ थीं जब उन्होंने देखा कि न तो पान मिलता है न कुछ सौदे सुलफ का जिकिर है तो छः सातदिन पीछे उन्होंने ने आना जाना छोड़ दिया सरस्वती ने पहिले यमुना अपनी नन्द से प्रीति बढ़ाई यमुना लड़किनी थी थोड़े ही स्नेहमें चेरी हो गई दिनभर सरस्वती के ढिग घुसी रहा करती थी बल्कि माता किसी समय कह भी उठती कि इस भावज पर इतनी दयाल क्यों हो बड़ी भावज के तो तुम सायासे भागती फिरती थी यमुना इसका उत्तर देती वह तो हमको मारती थी हमारी छोटी भावज हमको प्यार करती है यमुना के मेलसे सरस्वतीने अपना अच्छे प्रकारसे कार्यनिकाला पहिले तो सब घर का हाल बल्कि तमाम कुनवे और महल्ले का हाल यमुनासे पूछ कर मालूम किया और जो बात आदिमें लाज और संकोचसे आप नहीं

कहसक्ती थी यमुना के वसीले कहा करती थी सरस्वती ने घर के काममें सहजर इस प्रकार देखल देना आरम्भ किया कि सांझ समय यमुना से बड़े मंगा कर दीपक की बतियां बटदिया करती तरकारी बना लेती यमुना का फटा चधड़ा कपड़ा सीं देती सास और स्नामी के लिये पान बना देती धीरे २ रसोई तक जाती और लक्ष्मी मिश्रायन को छौंक बघार में सलाह देने लगी यहां तक कि सरस्वती के राय पर रसोई बनने लगी जब से सरस्वती ने रसोई में देखल देना आरम्भ किया घर वालों ने जाना कि रसोई भी कोई पदार्थ है फिर तो यह हाल होगया कि जिस दिन सरस्वती किसी कारण से लक्ष्मी मिश्रायन की सलाह कार न होती तो भोजन में खाद किसी को मालूम नही होता सास बज्जियों की लड़ाई कुछ मामूली बात है सरस्वती यों लड़ने के योग्य न थी तो उसका गुण विरुद्ध का कारण जलालक्ष्मी मिश्रायन इस घर में अगुआ कार थी कि सब कार्यों का भार उस पर घासौदासुलफ कपड़ा अनाज जो कुछ बाजार से आता सब लक्ष्मी मिश्रायन के हाथों आता गहना तक बनवा कर लाती कृण की जो जहरत होती तो लक्ष्मी मिश्रायन के आदत से आता गरज कि लक्ष्मी मिश्रायन पुरुषों के प्रकार इस घर का बन्दोबस्त करती थी जब सरस्वती ने रसोई में देखल दिया लक्ष्मी मिश्रायन का यत्न से दृष्य देना जाहिर होने लगा एक दिन उरद की पिट्टी के बड़े बन रहे थे और सरस्वती रसोई में बैठी ऊई लक्ष्मी मिश्रायन को बताती जाती थी जब बड़े बन चुके और दही में उसको डालना चाहा पर जो दही हंडिया में रक्खा था उसको सरस्वती ने देखा तो वह बिगड़ गया था इस कारण कि कई दिन का बासी था नीला पानी अलग और दही की फुटकियां अलग हो गई थी सरस्वती ने कहा अयह ययह कैसा बुरा दही है यह दही बड़ों में डालने के योग्य नहीं मिश्रायन बेगजाओ दो आने का दही बाजार से ले आओ लक्ष्मी मिश्रायन ने कहा उइ दुलहिन पाव भर पीठी के बड़ों में दो आने का दही वही मसल है कि अंट के सुंह में जीरा यह दही जो तुमने नापसन्द किया

चार आने का है सरस्वती बोली कि हमारे घर प्रतिदिन दही के बड़े पकते रहा करते थे पाव भर पीठी के बड़ों में एक आने का दही पड़ता था इस लेखे से तो मैंने एक आने का अधिक मंगाया लक्ष्मी मिश्रायन ने कहा तुम अपने महल्ले का हिंसाव किताब अलग रहने दो भला कहां कंधारी बाजार कहां रानी कटरा जो वस्तु रानी कटरे में एक पैसे का मिलती है वह यहां एक आने का भी नहीं मिलती यह खाक धूल मिली सुहल्ला तो ऊनड़ नगरी सूनादेश है सदा सब वस्तु का तोड़ा हर चीज का काल रहता है जो कि खाने में देर होती थी सरस्वती यह सुनकर चपहोर ही और मिश्रायन से कहा अच्छा जितने का मिलता है जल्द लावो परंतु सरस्वती ऐसी भोली नहीं कि मिश्रायन की बात को सत्य समझती अपने मन में कहने लगी अवश्य दाल में कुछ काला है दमड़ी छदाम का फर्क हो तौ हो परंतु यह गजब है कि एक नगर के दो महल्ले में दुगुने चौगुने का फर्क हो उस समय से सरस्वती भी ताक में हुई दूसरे दिन लक्ष्मी पान लाई तो सरस्वती ने देख कर कहा कि मिश्रायन तुम तो बिलकुल हरे पत्ते उठा लाई हो इस में न कुछ स्वाद मिलता है न लज्जा मिलती है अब जाड़े की अवाई है करारे पक्के २ पान ठूंढ़ कर लाया करो मिश्रायन बोली पक्के पान तो पैसे के दो आते हैं और यहां परमेश्वर रखे आधी ढोली राज का खर्च है इस वास्ते मैं नय पान लाती हूं इतने में सरस्वती के घर से रामकली मिश्रायन सरस्वती की खबर लेने को आई सरस्वती ने अपने मैके की मिश्रायन से पूछा क्यों मिश्रायन आज कल तुम को कैसे पान मिलते हैं रामकली ने कहा पैसे के सोलह सरस्वती ने संदूकचा खोल दो पैसे उसके हाथ दिये और कहा कि इसी महल्ले के पनवाड़ी से दो पैसे के पान ले आओ रामकली मिश्रायन बड़े २ पक्के चालीस पान ले आई सरस्वती ने कहा यहां रानी कटरे के बनिस्वत भी पैसे पीछे चार पान अधिक मिले रामकली मिश्रायन ने कहा बेटे यह महल्ला शहर का फाटक है अनाज, पान, घी, दही, यह सब वस्तु इस महल्ले में सस्ती मिलती है

पुराने पान चालीस मिले अगर नये लेती तो अस्सी मिलते सरस्वतीने कहा। यह लक्ष्मी मियायन तो सब वस्तु में योंही आगलगाती है रामकली तुम दो चारदिन यहां रहो मैं अस्मा से कहल। भेजूंगी वहां का काम दो चारदिन के लिये और कोई देख भाल लेगा रामकली ने कहा बेटी मैं हाजिर हूं परमेश्वर न करे क्या यहां वहां दो २ घर हैं अर्थात् चारदिन रामकली के हाथों सब प्रकारका सौदा बाजार से आया हर चीज में लक्ष्मी मियायन की चोरी साबित हुई परन्तु यह सब बातें इसप्रकार से हुई कि सरस्वती की सामको खबर तक न हुई सरस्वतीने जाना या रामकली वा लक्ष्मी ने इसहेत की सरस्वती बहत सुशील स्वभाव और संकोच की स्त्री थी उसने समझा कि इस बुद्धिया मियायनको बदनाम और कुसवा काने से क्या प्रयोजन रात के समय भोजन से सावकाश पा कोठे पर सरस्वती पान खारही थी रामकली मियायन भी पास बैठी हुई थी इतने में लक्ष्मी मियायन आई रामकलीने कहा क्यों लक्ष्मी यह क्या मात्रा है चोरी कौन नौकर नही करता देखो यह घरवाली मौजूद हैं सातवर्ष तक बराबर इनकी सेवा की घरका कारोबार यह सब उठाये लिये थीं परमेश्वर रक्खे अमीर के घर अमीरी खर्च हजारों रुपये का सौदा इन्ही हाथों से आया हकदस्तूरी यह क्यों कर कहूं कि नही लिया इतना लेना तो हम नौकरो का धर्म है चाहे भगवान बख्शे चाहे मारे परंतु इससे अधिक पचनही सक्ता इससे बढ़ कर लेना तो नम कह रामी है लक्ष्मीने कहा मेरा हाल कौन नही जानता अब मेरी बला छिपावे हां मैं तो चुराती और लूटती हूं परन्तु न आज से बल्कि सदा मेरा यही काम है तनिक मेरे हाल पर भी तो निगाह करो कि इस घर में किस बला का काम है भीतर बाहर मैं अकेली आदमी चार नौकरो का काम मेरे अकेले दम पर पड़ता है फिर बीबी कोई अपनी हड्डियां यों नही तोड़ता पण्डिताइन कई बेर सुभको मौकूफ भी कर चुकी हैं फिर अन्त सुभीको बुलाया समझका फेर है किसीने यों समझा किसी

ने यों समझा चारके बदले में अकेली छह चार की तनखाह भी सुभक्त अकेली को मिलना चाहिये और वृत्तान्त इस लक्ष्मी मिश्रायन का इसप्रकारपर है कि यह औरत पच्चीस वर्ष से इसघरमें है और सदा लूटनेपर उतरूथी एकदिनकी बात है क्षिपिपिपाजाय नित्य इसका कलछिद्र प्रगट हुआ करता था कई बार निकाली गई जब मौजूफ ऊई बनिये बजाज सुनार कुंजड़े जिन २ से इसके मोरफत उचापत उठतीथी तत्काजा का आ मौजूद होते थे इसदरके मारे फिर बुलाई जाती थी यों चोरी और सरजोरी लक्ष्मी मिश्रायन के कर्ममें लिखी थी चिताकर लेती और बताकर चुराती और लिखाकर सुकरजाती घरमें आसदनी कमस्वभाव बिगड़ा हुआ खानेमें इसमिथ्याज कपड़े में तकल्लुफ सब कारखाना उधार परथा और आदत लक्ष्मी मिश्रायनके डीलसेथी खुले खुजाना कहती थी कि मेरा निकलना कुछ सहज नहीं है घरको नीलाम कराकर निकलोंगी ईंटसे ईंट बजवाकर जाऊंगी सरस्वती ने जो हिसाबकिताबमें रोकटोंक शुरूअकी तो लक्ष्मी मिश्रायन सरस्वती की बैरिन होगई और इस यत्न में ऊई कि सरस्वती को अम्बिकादत्त और उसकी माता से बुरावनाये परंतु सरस्वती इस भेद से बेखबर थी बल्कि सरस्वती ने जब देखा कि मिश्रायन इस घरकी सुखतार है यह अपने स्वभाव को न छोड़ेगी तो जीमें कहा फिर नाहक की भ्रक २ से क्या प्रयोजन इसलिये रसोईमें जाना और खानेमें दखल देना सरस्वतीने छोड़दिया घर बालोंको तो सरस्वतीके हाथकी चाट लग गई थी पहलेही दिनसे मुंह बनाने लगे कोई कहता अयहय तरकारी मुंह में कचर रहती है कोई कहता दालमें नमक जहर हो गया जबान पर नहीं रक्खी जाती परन्तु सरस्वती से कौन कह सका था कि तुम रसोई बनाओ लाचार जैसा बुराभला मिश्रायन भोजन बनाकर रखदेती वही खाना पड़ता था एकदिन बरसात के मौसममें बादल विरा हुआ था नन्हीर फुहार पड़ रही थी ठंडी हवा चल रही थी अम्बिकादत्तने कहा आज तो कढ़ीको

जी चाहता है परंतु इस शर्त से कि वे पकाने का बंदोबस्त करे सरस्वती ऊपर कोठे के रूहा करती थी उसको खबर नहीं की पति ने कढ़ी की फर्मायश की है घी बेसन दही आदि सामान मिश्रायन ले आई और अम्बिकादत्त से कहा सब सौदा तो मैं ले आई जाऊं बहूजीको बुलालाऊं कोठे पर गई सरस्वती से कढ़ी का कुछ निकार नहीं किया और उसी तरह उलटे पा-
ओं उतर आई और कहा बहू कहती हैं कि मेरे शिरमें दर्द है लक्ष्मी मिश्रायन से सामूली भोजन तो पक नहीं सक्ता था कढ़ी का खाक पकाती सब चीजोंको सत्या नाश मिलाकर रख-
दिया किमखाहिश से अम्बिका दत्त ने फर्मायश की थी परन्तु बदमजा कढ़ी खाकर बहुत उदास हुआ अटारी पर गया तो घरवाली को देखा कि अपना डुपट्टा सी रही है जीमें नाखुश हुआ कि ऐं सीने को शिरमें दर्द नहीं और कढ़ी को कहा तो दर्द शिरका बहाना कर दिया पहली नाखुशी अम्बिका-
दत्तको सरस्वती से यही हुई और दूसर है कि मियां बीबियोंमें बिगाड़ इसी प्रकार की छोटीछोटी बातोंमें हुआ करता है जो कि छोटी उमरों में व्याह हो जाता है इस से ज्ञान व बुद्धि न पुरुष में होती है न स्त्रीमें अगर जरा सी बात भी खि-
लाफ़ मिजाज देखी तो मियां अलग अलग बैठे हैं और बीबी अलग सुंह और धाये लेटी है जब एक जगह का रहना सहना हुआ तो खिलाफ़ मिजाज के छोटी २ बातों का ज्यादा होना क्या आश्चर्य है यही छोटी बातें खिलाफ़ मिजाज धीरे २ आपस के मेल मिलापमें लेश डालती हैं और दोनों तर्फ़ से लिहाज और पर्दा उठता जाता है और तमाम उमर जूतियों दलबटती रहती है सबसे अच्छा यत्न यह है कि जोखू खुसम आदि ही से अपना सुआमिता एक दूसरे के साथ साफ़ रखें और थोड़े बिरुद्ध को भी प्रगट न होने दें क्योंकि यही छोटे २ बि-
रुद्ध जमा होकर बड़े कारण भगड़ा और बिगाड़ के हो जाते हैं बिरुद्ध के प्रगट न होने देने का यह यत्न है कि जब कोई थोड़ी सी बिरुद्ध की बात भी ऊर्ध्व लक्ष्मी जी में न रक्खा

सुंहरसुंहर कहकर साफ कर लिया अगर अम्बिकादत्त में
बढ़िहोती और वह इस यत्नको जानता होतातो उस बीबी
से बतौर शिकायत पूछता कि क्योंजी जरासा काम तुमसे
न होसका और दर्द शिरका झूठ बहाना कर दिया उसी
समय दोचार बातोंसे सुआमिता साफ होजाता और लक्ष्मी
मिश्रायनकी चालाकी खुलजाती परंतु अम्बिकादत्त ने सुंहर
परतो सुंहरलगाई और दिलमें शिकायतका दफ्तरलिखचला
सरस्वतीको अम्बिकादत्तके गुम सुंहरहनेसे खटकाऊआ और
समझी कि परमेश्वर खैरकरै लड़ाईकी जीतपड़ती नजरआती
है सासकोदेखा तो उनको भी नाराज पाया आश्चर्यमें थीकि
परमेश्वर यह क्याबात है अभी यहबाततै नहींजुई कि लक्ष्मी
मिश्रायनने एक और बार चलाया याने दिवाली का महीना
निकट आया अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायन से कहा कि
मकानमें बसरोज जुआ सफेदी नहींजुई लालाछदामीलालसे
से कहोकि जिसप्रकार होसके कहींसे पचास रूपयेदे दिवाली
का खुर्चाशिरपर चला आताहै मिश्रायन बोली कि छोटीबहू
अपने मैके जायंगी मैंने सुना है कि तहसीलदार भी आनेवाले
हैं दोनों बैठियोंको बुलावेंगे और मैंने एकजगह यहभी सुना
है कि छोटी बहू का दूरादाहै कि अपनेबापके साथ पहाड़पर
चलीजाय बहू जायगी तो छोटी साहबजादी भी जायगीफिर
बीबी तुम्हारा अकेला दम है मकान में सफेदी होकर क्या
करेगी छदामीलाल कमबख्त तो ऐसा बेशील होगया है कि
नित्य उसका ब्राह्मण तक्काजे को खड़ा रहता है वह उधार
क्योंकर देगा अम्बिकादत्तकी माता यह सुनकर सदर्द होगई
और सदर्द होनेकी बात थी मियांतो जिसदिनसे आगरे गये
फिरकरघरकी शकल न देखीछठे महीने बरसयें दिनजीमेंआ-
गयातो कुछ भेजदिया वरना कुछ प्रयोजन नहीं परमेश्वरीदत्त
मातासेअलगहो होचुकाया सिर्फ अम्बिकादत्तकादमघरमेंथा
इसकेपीछे घरसूना था अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायनसेपूछा
अरी सच बताइयो ज़रूर जायगी मिश्रायनबोली जाने नजाने

की तो परमेश्वर जाने जो सुनाया सो कह दिया अम्बिकादत्त की माताने पूछा अरी कमबख्त किससे सुना किसविधि मालूम हुआ लक्ष्मी बोली सुननेकी जो पूछी तो रामकली से मैंने दो रुपये उधार मांगे थे उसने कहा मैं देती तो जरूर परंतु पहाड़ पर जाने वाली हूँ तब मैंने उससे सब हाल पूछा मालूम हुआ कि सब बात ठीक ठाक हो चुकी है बस इतनी देर है कि जब तहसीलदार आवें उनके आगे पर चौथे पांचवें दिन यह सब लोग रवाना हो जाय और सुनने पर क्या है परमेश्वर को देखानहीं तो बुद्धिसे पहचाना है बीबी क्या तुमको बहूके रंगोंसे समझनहीं पड़ता देखो पहलें तो बहूघर का कामकाज भी देखती भालती थी अब तो अटारी परसे नीचे उतरना सौगन्ध है चिट्ठी पर चिट्ठी बापके नाम चली जाती हैं सिवाय जाने के ऐसी और कौन सी बात है अम्बिकादत्त की माता यह हाल सुनकर सन्नाटेमें रह गई इसी शोचमें बैठी थी कि अम्बिकादत्त बाहरसे आया उसको पास बुलाकरा पूछा कि अम्बिकादत्त मैं एक बात तुमसे पूछती हूँ सच २ बतायेगा अम्बिकादत्त ने कहा अम्मा भला ऐसी कौन बात है जो तुमसे छिपाऊंगा अम्बिकादत्त की माताने जो कुछ मिश्रायन से सुनाया उससे कहा अम्बिकादत्त ने कहा अम्मा परमेश्वर की सौगन्ध सुभके इसकी कुछ खबर नहीं न सुभके इस बात का चर्चा हुआ अम्बिकादत्त की माता बोली चल भूठे सुभके से बातें बनाता है इतनी बड़ी बात और तुमको खबर नहीं अम्बिकादत्त ने कहा तुमको विश्वास नहीं होता तुम्हारे धिर की सौगन्ध सुभके खबर नहीं इतनेमें मिश्रायन भी आ निकली अम्बिकादत्त की माताने कहा क्योंरी लक्ष्मी अम्बिकादत्त तो कहता है सुभके मालूम नहीं मिश्रायन ने कहा लड़के तुम बुरा मानो या भला मानो तुम्हारी बीबी जाने की तैयारियां तो कर रही हैं तुमसे शायद छिपाती हैं ये बड़ी बहू न हों कि उसके पेटमें बात नहीं समाती थी यह ऐसी है कि किसीका अपना भेद न दें अम्बिकादत्त की माताने पूछा भला अम्बि-

कादत्त जो यह बात सच हो तो तुम्हारा क्या इरादा है
 अश्विकादत्त ने कहा भला यह क्योंकर हो सकता है कि तुम
 को अकेला छोड़कर चला जाऊंगा और उनकोभी क्या ऐसी
 खबर दली है कि वे पूछे गाछे चली जायंगी और मैं आज उनसे
 पूछोंगा क्योंकी यह कैसी बात अश्विकादत्त की माताने कहा
 कि अभी इस लक्ष्मी के बात का क्या प्रमाण है बहू से कुछ चर्चा
 मत करो जब बात खुल जायगी तब देखा जायगा इस प्रकार
 की बातों से मिश्रायन सरस्वती को सास और खुसम से बुरा
 बनाने की फ़िक्र में थी और सरस्वती से अगर्चि किसी ने
 सुं हदर सुं ह कुछ कहा सुनानही परंतु वह भी इन सब की खरत से
 समझ गई थी कि कुछ नाराजगी है सरस्वती के पास यमुना बड़ी
 गोयन्दा थी जरा रसी बात सरस्वती से कहती और मिश्रायन की
 बदजाती सब सरस्वती पर खुल गई थी परंतु सरस्वती ऐसी बुद्धि-
 हीन न थी कि तुरन्त बिगड़ बैठती वह इस शोच में डूई कि इस
 सुझामिले में कुछ अपनी तरफ से कहना सुनना उचित नहीं
 आखिर कभी न कभी यह बात खुलेगी उस समय देखा जा-
 यगा लक्ष्मी मिश्रायन के शिर पर शमत तो सवार थी तीसरी
 बार सरस्वती पर उसने और सही किया छदामीलाल की
 तो आदत थी कि जब कहीं मिश्रायन को अपने दूकान के सा-
 मने आते जाते देखा तो अदबदाकर छेड़ता कि क्यों मिश्रा-
 यन हमारे हिस्सावकताब की भी कुछ फ़िक्र है और आठवें
 सातवें दिन घर पर तक्काजा कहला मेजता एक दिन सुवाफ़िक
 मामूल के मिश्रायन सौदेखुलुफ़ को बाजारजाती थी छदामीलाल
 ने टोका मिश्रायन बोली ऐ लाला यह क्या तुमने सुझसे आये
 दिन की छेड़खानी लगाई है जब सुझको देखते हो तक्काजा करते
 हो जिनको देते हो उनसे मांगो उनपर तक्काजा करो मैं बेचा-
 री गरीब आदमी टके की औकात सुझसे और महाजनों के
 लेने देने से क्या वास्ता छदामीलाल ने कहा यह बात तुमने क्या
 कही कि सुझसे वास्ता नहीं दूकान से तो तुम लेजाती हो
 हाथको हाथ पहचानता है हम तो तुमको जानते हैं और तु-

न्हारी साखपर देते हैं हम घरवालोंको क्याजाने मिश्रायन ने
 कहा ऐलाला होशमें आओ ऐसेघरके भोले मेरीऐसी क्या
 हैमियत तुमनेदेखली मेरेपासनधन नदौलत और तुमनेसैक-
 डों रुपया आखबन्दकरके सुभको दैदिया और अगर सुभको
 दिया तो जाओ सुभीसे लेभीलेना मेरेजो महल खड़े होंगे
 बिचवालेना मिश्रायन की ऐसी उखड़ीर बातें सुनकरलाला
 छदामीलाल बड़त सिटपिटाया और मिश्रायनसेमिलावटकी
 बातें करनेलगा और कहा कि आज तो तुमकिमीसे लड़कर
 आई नालूम होतीहो बताओतो क्याबात है बीबीसाहब ने
 कुछ कहा या साहबजादी कुछखुफाऊई यहांआओ इधरतो
 मिश्रायनसे यहकहा उधर दूकानपर जो लड़काबैठाथा एक
 पैसा उसकेहाथ दिया कि दौड़कर दो गिलौड़िया मसाला
 उलवाकर बनवाला जब मिश्रायन बैठगईतो छदामीलाल ने
 हंसकरपूछा तुम आज अवश्य किसी से लड़ीहो मिश्रायन ने
 कहा परमेश्वरनकरे क्योंलड़नेलगी बातपर बातमेंनेभी कह-
 दी लालासच बातपर क्यों बुरामानतेहो छदामीलालनेकहा
 यहतो ठीकहै ब्योहारतो मालिकके साथहै पर तुम्हारेहाथों
 से होताहै यानहीं नतुम्हारे नामरुक्का नचिट्टी तुमने मालिक
 के नामसे जोमांगा सो दिया मिश्रायन ने कहा हायों रहो
 इससे कब सुकरती हूं जो लैंगई हूं हजारों में कहदूं और
 लाखोंमें कहदूं और हमारी बीबीके भी रोयें २ से दुआ नि-
 कलताहै बेचारीकभी तकारार नहींकरती छदामीलालबोला
 बाह हस्तीकृतमें वहबड़ी अमीरहैं और उनकी क्या बात है
 फिर छदामीलालने धीरेसे पूछा छोटीबहू का क्या हाल है
 और कैसीहै अपनीबड़ीबहिनके अंदाजपर है याकिसप्रकार
 का मिजाजहै मिश्रायननेकहालालकुछ न पूछो बेटी तो अ-
 मीरघरकीहै पर दिलकीबड़ी तंगहैदमड़ीकासौदाभीजबतक
 चारबेर फेरनले पसंदनहीं आता हांपरमेश्वररक्खे गुनवन्ती
 तो संसारकी बहूबेटियोंसेबढ़चढ़केहैं भोजनअच्छेपकाती हैं
 सोनेमें दर्जियोंको मातकिया है परंतु लालाअमीरीकी बात

नहीं पहिलेपहिल सुझपरभी रोकटोककी थी लालातुम तो जानतेहो मेरा काम कैसा बेलागहोता है अन्तको थक कर बैठरही और बड़ीबीबीतो बड़ी नेकहैं उन्हींके दम क़दमकी बरकतसे घर चलताहै हम गरीबभी उन्हींका दामन पकड़े ऊयेहैं बड़तेरा हमारीबीबीको लोगों ने भड़काया परंतु पर-मेश्वर उनको सत्तामतरक्के उनको दिलपर मैल न आया और किसी प्रकार बात उन्हींने सुं हपर नकहो क़दामीलालनेकहा सुनाहै छोटी बहूको बड़ाभागी दहेगमिला मिश्रायन ने छूट-तेहीकहा खाकपत्थर बड़ीसे भी उतरताहुआ मिलाक़दामी लालने कहा बड़ाआश्चर्य है कि इनकेब्याहके समयतो पण्डित देवीदत्त तहमीलदार ये बड़ीबेटी से अधिक देना उचित था मिश्रायननेकहा अयहय तहमीलदार काकुछ दोषनहीं उस बेचारेनेतो बड़ीतैयारियांकी थीं यहीछोटी खोंटी सुखबोली थी मातापिता के सुघरभलाई के सारे कहकर सबबस्तों कम कराईं क़दामीलालने कहा अगर यहीहालहैतो बड़ी बहिन केप्रकारये भी अलग घर करेंगी मिश्रायन ने कहा अलगघर करनाकैसा यहतो बड़ेगुल खिलायेगी बड़ीबहू बदमिजाज थी परंतु मनकीसाफ़ और ये सुं हकी सीठीमनकी खोंटी कोई कैसाहीजान मारकरकामकरे इनकेखातिर तले नहींआता बातभीकहेंगीतो तहकीसुं हपरकुछजीमेंकुछनबाबानबाबायह स्त्री एकदिनभी निबाह करनेवाली नहींअवतो पहाड़परबाप के पास जाने की तैयारियां कर रही हैं क़दामीलाल ने पूछा आगरेसे इनदिनों कोई चिट्ठीआई है मिश्रायनने कहा नित्य उसतरफ़ ध्यानलगा रहता है नजाने क्या बियोग कोई चिट्ठी नहींआई बीबीखुर्चली राहदेख रहीहैं दीवाली शिरपर आ रहीहै बल्कि परसोंअतरसों कहतीथीं कि लालाक़दामीलाल से पचास रुपये उधार लाना क़दामी लाल उधार का नाम सुनकर चौंकपड़ा और कहा पहले रुपये की राहलगावैं तौ आगे देनेको क्याइनकारहै अबमेरे साम्नीनहीं मानते अपनी बीबीसे समझाकर कहदेना कि जहां से बनपड़े रुपया अदा

करें वना सुभ पर कुछ दोष नहीं मियायन ने कहा तुम्हारा रूपया परमेश्वर ही निकलवायेगा तो निकलेगा हमारी बीबी कहां से देंगी बालर तो कर्जदार होरही हैं मोदी चल ग जान खाता है बज्र जजुदा गुलमचाता है लाला छदासी लाल ने कहा सुभ को औरों से क्या वास्ता हमारे दूकान का हिसाब तो बेबाक करना ही पड़ेगा सुभ को तो तुम्हारे सरकार का बड़ा लिहाज है परंतु मेरा सांझी गुरदयाल नहीं मानता वह जोय हटतान्त सुन पाये तो आज नालिश कर दे मियायन ने कहा यह सब हाल बीबी से कह भर में दूंगी परंतु घर का जरा जरा हाल सुभ को मालूम है नालिश करो या फर्याद करो न रूपया है न देने की गुंजायश रूपया होता तो उधार क्यों लिया जाता इतनी बातों के पीछे मियायन छदासी लाल से विदा हो सौदा सुलू ले कर घर में आई तो अम्बिकादत्त की माताने पूछा मियायन तू बाजार जाती है तो ऐसी बेफिक्र हो जाती है कि रसोई बनाने की कुछ सुध नहीं रहती देख तो कितना दिन चढ़ा है अब रसोई किस वक्त बनेगी और कब भोजन मिलेगा मियायन ने कहा बीबी सुने छदासी लाल के भगड़े में इतनी देर हो गई वह जान हार नित्य सुभ को आते जाते टोका करता है आज मैं जब गई और मैंने कहा क्या लाला तूने सुभ से नित्य की यह क्या छोड़ खानी लगाई है क्यों मरा जाता है तनिक टाढस रख आगरे से खर्च आने दे तो तेरा अगला पिक्ला हिसाब कितना बेबाक हो जायगा वह सुना तो मेरे शिर हो गया और भरे बाजार में सुभ को रुसवा करने लगा अम्बिकादत्त की माताने कहा छदासी लाल को क्या हो गया है वह तो ऐसा नया आखिर बर्षों से हमारा उसका लेन देन है सबेरे भी दिया है देर को भी दिया है कभी उसने तकरार नहीं की मियायन ने कहा बीबी कोई और सहाजन दूकान में सांझी हुआ है उस सुने जल्दी मचार क्वी है जिस जिस पर लेना था सबसे खड़े वसूल कर लिया जिसने नहीं दिया नालिश कर दी छदासी लाल ने कहा है कि मेरे तर्फ से बजत २ हाथ जोड़ कर कह देना

मेरा इसमें कुछ बश नहीं जिस विधि होसके दोचार दिनमें
रुपये की राह लगा दें वनी गुरदयाल अक्षरनालिश करदेगा
इस खबरके सुननेसे अम्बिकादत्तकी माताको बहुत हल्ला मछा
फुलभारी इनकी छोटी बहिन चौकमें रहती थी और वह कुछ
धनवान थी अम्बिकादत्तकी माताने मिश्रायनसे कहा कि आगरे
से तो जवाब चिट्ठी तक का नहीं आता खर्चका कौन भरोसा
है अगर सचमच छदासीलालने नालिश करदी तो क्या होगा
सेते पास तो इतना असबाब भी नहीं कि बेच कर अदा कर दूंगी
और नालिश होने पर देना भी बे इज्जती है सगरे नगरमें रुस-
वाई होगी डोली ले आ मैं फुलभारी के पास जाऊं देखूं जा
वहां कोई खरत निकल आवे मिश्रायन बोली बीबी नालिश तो
ऊईर कखी है जिसने सुंहसे कहा उसे करते क्या देर लगती है
और फुलभारी के पास कहांसे रुपया आया वह तो इन दिनों
खुद हैरान है अम्बिकादत्तकी माताने कहा आखिर फिर कुछ
करना तो पड़ेगा मिश्रायन ने पास जाकर चुपके से कहा कि
महीने भरके लिये बहू अपने सोने के कड़े दे दें तो बात रह जाय
इस समय तो इन कड़ोंको गिरवी रख कर आधी तिहाई क-
दासीलाल की भगत जाय महीने भरमें या तो आगरे से खर्च
आजाता या मैं और किसी महाजन से ले आती अम्बिकादत्त
की माने कहा अरी दीवानी ऊई है खबरदार यह सुंहसे मत
निकालना अगर रहने का मकान तक भी विक जाय तो सुभको
मंजूर है परंतु बहूसे कहने का तो सुंह नहीं मिश्रायनने कहा
बीबी मैं तो इस खयालसे कहा कि बहू ऊई बेटी ऊई कुछ गैर
नहीं होते और क्या परमेश्वर न करे बेच डालने की नियत हो
महीने भरका वास्ता है चीज संदूकमें न पड़ी रही महाजन के
पास रक्खीरही जिसमें उसकी खातिर नमारहे अम्बिकादत्त
की माने कहा फिर भी बहू बेटीमें बड़ा अन्तर होता है और नई
ब्याही ऊई से कोई ऐसी बात कहसक्ता है देख खबरदार फिर
सबानसे ऐसी बात मत निकालियो ऐसा न हो कि यमुना के
कान पड़ जाय और बहूसे जाय लगाये मिश्रायनने कहा सा-

हवजादीतो अभीखड़ी ऊई सुन रही थी परंतु वह बच्चा है अभी उनको इन बातों की समझ नहीं अब्बिकादत्त की माता ने कहा डोली लेआओ मैं बहिन के घर तक जाऊं तो सही फिर जैसी सलाह ठहरेगी देखा जायगा अब्बिकादत्त की माता तो सवार हो चौक के सिधारी और यमुना ने सब वृत्तान्त अपनी भावज से जा कह सुनाये सरस्वती को और कुछ तो न स्त्री तुरंत अपने बड़े भाई ईश्वरीदत्त को यह चिट्ठी लिखी ॥

निधियासर्वोपमा योग्य भाईजी बहुत दिनों से मैंने अपना हाल इसलिये नहीं लिखा कि जो चिट्ठी अब्बा के नाम भेजती हूं वह आपके देखने में भी आती होगी अब एक निजकी बात ऐसी आगे आई है कि उसको आप ही को लिखना उचित समझती हूं वह यह है कि जब से मैं ससुराल आई किसी प्रकार का सुभक्त श्लेष नहीं पड़वा और बड़ी बहिन को जिन बातों की शिकायत रहा करती थी आपके आशीर्वाद से वह बात मेरे साथ नहीं सब लोग सुभक्त्यार करते हैं और मैं आनन्द से रहती हूं परन्तु एक लक्ष्मी मिश्रायन के हाथों से वह दुःख है जो कि भी बदमिजाज सास और बदजवान नन्द से भी न होता यह स्त्री इस घर में बहुत काल से है भीतर बाहर का सब कार्य इसी के हाथों में है इस स्त्री ने घर को लूट कर मटिया मेल कर दिया अब इतना उधार हो गया है कि उसके अदा होने का सामान दृष्टि में नहीं आता इस प्रकार का बन्दोबस्त घर में नहीं है मैंने थोड़े दिन सामूली कामकाज गृहस्थी में देखल दिया था तो सब बत्त में काटकपट हर बात में धाखा पाया गया मेरे एक टोंक से मिश्रायन मेरी बैरिन होगई और उस दिन से नित्य नये २ उपद्रव खड़े किये रहती है अगर्चि अब तक कोई बुराई की बात नहीं ऊई परन्तु इस मिश्रायन कारहना सुभक्त को बड़ाना गवार है और निकलना भी इसका बहुत कठिन है सारी बाजार का ऋण इसके आदत से है कुड़ाने कानाम भी सुन पाये तो कर्ज खाहों से जा भड़काये फिर ऋण कान हिसाब है न किताब है जवानी तुको पर सब खेना देना हो रहा है मैं जानती हूं कि सब

लोनों का लंछा होकर लिखा पढ़ी होजाय और एकदंग से
 हर एक की क्लिष्ट सुकरार कर दी जाय और उधार लेने का
 दस्तूर आगे के लिये मौजूफ हो और मिश्रायन निकाल दी-
 जावे यकीन है कि अम्मा के साथ आप भी बाद दीवाली के आवें
 मैं चाहती हूँ कि आप अनुग्रह करके आगरा होकर आइये
 और अम्मा जान का जिस प्रकार बन पड़े काम से काम पन्द्रह सौ-
 लह दिन के लिये अपने साथ लिवा लाइये आप सब लोगों के सा-
 मने यह सब सुआमिता अच्छी विधि से तै हो जायगा मैं इस
 चिट्ठी को अति घबराहट के समय में लिख रही हूँ कोई महाजन
 नातिश करने पर उतारू है मिश्रायन ने यह सलाह दी है कि
 मेरे कड़े गिरमीर कखे जावें अम्मा जान रुपये के बिलावन्द के हेतु
 चौक में अपने बहिन के घर गई हैं उधर तो सरस्वती ने भाई
 को चिट्ठी लिखी इधर अपनी मौसी से कहला भेजा कि मैं अ-
 केली हूँ जयजयवन्ती मेरी मौसेरी बहिन को दो दिन के लिये
 भेज दीजिये मैंने सुना है कि वह ससुराल से आई है गर्जशामो
 शाम जयजयवन्ती भी आप जूंची डोली से उतरते ही कहा
 बाह बहिन सरस्वती ऐसा कोई बेशीलन ही होता मैंने मौसा
 जी की चिट्ठी तुमसे मंगवा भेजी थी तुमने न भेजी सरस्वती ने
 कहा उह कौन मांगने आयाया जयजयवन्ती बोली देखोयही
 मिश्रायन मौजूद हैं क्यों बी अनिश्चर को तुम हमारे घर गई थी
 मैंने तुमसे कह दिया था नहीं लच्छी मिश्रायन बोली हां बी
 तुमने कहा था पर सुभ्र अभिगिन को बात याद नहीं रहती
 यहां आने तक घर के धम्मे में भूल गई सरस्वती ने हलके से कहा
 तुमको लूटना और घर फोड़ना याद रहता है जयजयवन्ती से
 कहा चिट्ठी मौजूद है और एक नई किताब भी आई है बड़े मज्जे
 की बातें उसमें लिखी हैं वह भी तुम लते जाना बाद उसके
 सरस्वती ने मिश्रायन का सारा वृत्तान्त जयजयवन्ती से कहा
 जयजयवन्ती बड़ी उताहिल थी उभीवक्तू जूती लेकर उठी और
 मिश्रायन को मारने चली सरस्वती ने हाथ पकड़ कर बैठा लिया
 और कहा परमेश्वर के लिये ऐसा कोप मत करो अभी जल्दी

नहीं सब बात धिगड़जायगी जयजयवन्ती ने कहा तुमयोंही शोच साच करके अपनी गरमाई खोती हो अगर मैं तुम्हारी जगह पर होती तो भगवान की सौगन्ध इस मिश्रायन को मारे झूतियोंके ऐसा सीधा बनाती कि जन्मभर सुत्त रखती सरस्वती ने कहा देखो भगवान ने चाहा तो इस नमक हराम पर परमेश्वरकी मार पड़ेगी कोई दिन की देर है इसके पीछे जयजयवन्ती ने पूछा तुम्हारी सास अपनी बहिनके यहां किस हेतु से गई है सरस्वती ने कहा वह बेचारी की इसी मिश्रायन के हाथों ने दर बदर मारी फिरती हैं कोई महाजन है उसका कुछ देना है मिश्रायन ने आज आकर कहा था कि वह नातिश करनेवाला है उसीके रुपयेके बिलाबन्द के लिये गई है जयजयवन्ती ने पूछा कि कौनसा महाजन नातिश करने वाला है सरस्वती ने कहा नाम तो मैं नहीं जानती जयजयवन्ती ने मिश्रायन से पूछा कि मिश्रायन कौन महाजन है मिश्रायन ने कहा छदामीलाल जयजयवन्ती ने कहा कि वही छदामीलाल जो गन्धीटोले में रहता है मिश्रायन ने कहा हां बी बड़ी छदामीलाल जयजयवन्ती ने कहा कि उसो हमारी ससुरार में भी तो लेन देन है भला क्या सुयेकी ताकत है जो नातिश करे मैं यहां से जाकर तुम्हारे भाई जान से कहूंगी देखो तो कैसा ठीक बनाते हैं दो दिन जयजयवन्ती सरस्वती के पास रही तीसरे दिन विदा हुई और विदा होते कह गई कि बहिन तुम्हें मेरे शिरकी सौगन्ध जब तुम्हारे ससुरे आए और यह सब सुझामिला सुकहमा पेश हो सुम्हेंको जबर बुलवाना और मिश्रायन को सुम्हेंसौंप देना वहां अश्विकादत्त की मा को उनकी बहिन ने ठहरा लिया और कहा कि दीदी बहुत दिन बाद तुम आई हो भला सात आठ दिन तो रहो परंतु हररोज आदमी सरस्वती के कुशलक्षेम को पूछने आता था मिश्रायन ने बैठे बैठाये एक और शरारत की कि इन दिनों गवर्नर जनरलकी अवाईधी नगरकी सफाई के हेतु हाकिमके तर्फ से बहुत ताकीद हुई सबमहल्ला और गलीमें इश्लिहार लगाये

गये कि सब लोग अपने-अपने करके और गलियां साफ करके दरवाजों पर सफेदी कराले नाबदान साफ रखे अगर किसी गगह झुड़ा कर्कट मिलेगा तो मकान नीला मही जावेगा इसी समाचार का एक इश्टिहार इसमहल्ले के फाटक पर लगाया गया था लक्ष्मी मिश्रायन रात को जाकर महल्ले के फाटक से वह इश्टि-हार उखाड़ लाई और चुपके से अपने दरवाजे पर लगा दिया और फिर अन्धेरे सुंह चौक में अम्बिकादत्त की माता से खबर करने दौड़ी गई कि अभी मकान के किवाड़ भी नहीं खुले थे कि इसने आवज दी अम्बिकादत्त की माता ने बोली पहचानी और कहा अरी दौड़ियो किवाड़ खोलियो मिश्रायन ऐसी समय क्यों भागते आई है मिश्रायन सामने आई तो पूछा मिश्रा-यन कुशल कैसे है मिश्रायन बोली बीबी मकान पर इश्टिहार याशितार क्या होता है लगाऊँगा है मालूम होता है कि छ-दामी लाल ने नालिश कर दी अम्बिकादत्त की माने अपनी बहिन से कहा कि बीबी मैं तो जाती हूँ जाकर छदामी लाल को बुल-वाऊँगी और समझाऊँगी परमेश्वर उसके जी में दया देवे बहिन बोली दीदी मैं बहुत लज्जित हूँ कि सुभसे रुपये का बन्दोबस्त न हो सका परन्तु गले की तुलशी मेरी मौजूद है इसको ले जाओ गिरवी रखने से काम निकलै तो खैर नही तो बेच डालना अम्बिका-दत्त की माने कहा कि खैर तुलशी मैं लिये जाती हूँ परन्तु उसी का व्रण बहुत बढ़ गया है एक तुलशी से क्या होगा बहिन बोली कि आखिर उन्होंने भी कहा है कि मैं किसी दूसरे महाजन से उधार लाऊँगा तुम भगवान का नाम लेकर के सवार हो वह आते हैं तो मैं भी उनको पीछे से भेजती हूँ गर्ज अम्बिकादत्त की माता मकान पर पड़ची दरवाजे पर उतरी तो इश्टिहार लगा देखा छदामी को प्राप्त होय आकर बैठ गई सास का आना सुनकर सरस्वती भी कोठे पर से उतरी और प्रणाम किया सास को उदास देखकर पूछा आज अम्मा जान तुम्हारा चेहरा ब-हुत उदास है सास ने कहा हाँ महाजन ने नालिश कर दी है रुपये की खरत कहीं से बन नहीं पड़ती फुलभारी बहिन ने जवाब

दिया अब सकानपर दूधितहार लगचुका देखियेका होता है सरस्वती ने कहा आप कुछ शोच न करें अगर छदामीलाल ने नालिश कर दी है तो कुछ हर्जनहीं जयजयवन्तीके ससुराल में उसकालेनदेन है उसने सुझसे वादा किया है कि मैं छदामीलालको समझा दूंगी और जो नहीं मानेगा तो उसके रूपये का और चल हो जावेगा रंज करने से क्या प्रयोजन सासने कहा अम्बिका होता तो मैं उसको छदामीलाल तक भेजती सरस्वती बोली थीं आपको अखुतियार है परंतु मेरे नजदीक महाजन से डरना उचित नहीं नहीं तो वह आगे को ठोठ हो जायगा और आगे दिन नालिशका डिरावा दिखाता रहेगा सबसे बेहतर यह है कि दूधरका दूधारा न हो और किसी ठवसे कोई दवाव उसपर पड़ जाय कि वह दावाको खारिज करा दे अम्बिकादत्त की माता ने कहा जयजयवन्ती अभी लड़की हैं कचहरी दरवारकी बातें वह क्या जाने ऐसा न हो कि उनके भरोसे में काम बिगड़ जावे काबू हाथसे निकल जाय सरस्वती ने कहा जयजयवन्ती लड़की हैं परंतु मैंने बात पक्की कर ली है और सुझको भरोसा है यह बातें हो रही थीं कि दुर्गादत्त ने दरवाजे पर आवाज दी सरस्वती ने कहा कि दुर्गादत्त आया है अवश्य इस सुआमिले में वह कुछ खबर लाया होगा दुर्गादत्तको सरस्वती ने भीतर बुलाया और पूछा क्या खबर लाये दुर्गादत्त ने कहा बहिन ने आपको नमस्कार कहा है और मिजाज का हाल पूछा है और कहा है छदामीलालको बुलाया था बहुत कुछ डराधम का दिया है और उसने वादा कर लिया है कि नालिश न होगी यह बात सुनकर अम्बिकादत्त की माता को कुछ धीर्य हुआ परंतु सरस्वती आश्चर्य में थी कि जयजयवन्ती ने यह कह ला भेजा है और छदामीलाल नालिश कर बैठा यह क्या बात है और दूधितहारका सुआमिले भी आश्चर्य का है मैं घर में बैठी की बैठी रही सुझको खबर नहीं हाकिम का दूधितहार होता तो कोई चपरासी पियादा पुकारता दुर्गादत्त बिदा हुआ तो यमुनासे सरस्वती ने कहा दरवाजे पर जो कागज

लगा है उसको चुपके से उखाड़ लाओ यमुना कागज उखाड़
 लाई सरस्वतीने पढ़ा तो सफाई शहर का कुकुर था नालिश
 का उसमें कुकुरची नया समझ गई कि यह भी मिश्रायनकी
 चालाकी है सास पर तो यह हाल जाहिर नहीं किया परंतु
 उनका इतमीनान अच्छे प्रकार कर दिया कि आप निश्चिन्त
 बैठी रहिये नालिश का कुकुर नहीं सासने कहा तुम्हारे क-
 हने से नालिशके तर्फ से दिलजमई हुई परंतु दिवालीका तो
 त्योहार शिरपर चला आता है इसमें भी खर्च चाहिये आ-
 गरेसे चिट्ठी आनाभी बन्द है इसका शोच तो मेरा लोह सु-
 खाये डालता है सरस्वती ने कहा दीवाली का तो अभी एक
 महीना पड़ा है और दीवाली में क्या ऐसा बड़त खर्च होगा
 सासने कहा मेरे घर हर साल दीवाली में पचीस तीस रुपये
 उठते हैं पूछोयही मिश्रायन खर्च करनेवाली मौजूद है सरस्व-
 तीने कहा कि खर्च करनेका क्या आश्चर्य है परंतु एक जख-
 रतकेलिये और एक बेजखरत से दीवालीमें इतने रुपये खर्च
 करनेकी कुछ जरूरत नहीं सासने कहा सालभर का त्योहार
 है परजों काखिलें बताओ देना फिर लोगोंके घर भोजना भि-
 जवाना जरूर है कहनका तो तनिकसी बात है दशरूपये तक
 तो अम्बिका और यमुनाके वास्ते खिलौना वगैरह चाहिये
 अम्बिकाका व्याह होगया तो क्या है भगवान रक्खे अभीतक
 उसके मित्राज में बचपन की बातें चली जाती हैं जबतक दो
 रूपये खिलौनेके हेतु और चाररूपये रोशनीके वास्ते नलेगा मेरी
 जान खाजायगा और यमुना भी रोरोकर अपना बुरा हाल
 करेगी सरस्वतीने कहा परजोंकेलिये एक रूपयेकी खिलें और
 चारआनेके बताओ मिठाई और चारआनेके खिलौने और आठ
 आने रोशनी के लिये बड़त हैं भोजना भिजवाना तो इधर से
 आया उधर गया यमुनाभी अब खिलौने और रोशनी के लिये
 अधिक हठ नहीं करेंगी मैं उनको समझा लूंगी दीवाली का
 बन्दोबस्त मैं कर लूंगी मेरा जिम्मा है इसके लिये आप उधार
 न कीजिये साससे तोये बातें हुईं परंतु सरस्वती शोचमें थी

कि मियांको किसप्रकार समझा दिये आखिर सरस्वती ने इस
 यत्नसे मियांको समझाया कि बात कहदी और मियांको भी
 नागवार मालूम न हुआ सरस्वती ने अम्बिकादत्त के सामने
 यमुना से झेड़ करके पूछा कि क्यों जी तुमने दीवाली के वास्ते
 क्या फिकिर की है यमुना बोली जब भाई अपने वास्ते खिलौने
 और दिवाली लावेंगे तो तुम्हारे वास्ते लावेंगे अम्बिकादत्त
 अभीतक जवाब देने नहीं पाया था कि सरस्वती ने कहा कि
 भाई तो ऐसी बाहियात बेजखूरत चीज क्यों लाने लगे यमुना
 खिलौने में क्या मजा होता है यमुना ने कहा भाई जान खिलौने
 से खेलेंगे और ताकूचेपर रखकरके तमाशा देखेंगे और दि-
 यालियोंसे सारा घर रोशन करेंगे सरस्वती ने कहा जो दो एक
 खिलौने पूजाके लिये आवेंगे उनको ताकूचेपर रख देना और
 चैतन्य लड़की खिलौने से नहीं खेलती और न अपने हाथ से
 रोशनी करती हैं यमुना ने कहा कि रोशनी हम अपने हाथ से
 नहीं करेंगी मिश्रायन करेगी जब रोशनी होजायगी तब हम
 देखेंगी सरस्वती ने कहा जब तुमने रोशनी अपने हाथ से नहीं
 की तो जो रोशनी महल्ले में होगी उसको देख लेना जो दश
 बीस चिराग घर में बलेंगे उसको तुम अपने हाथ से बालना
 और सुनो खिलौनों से खेलना बहुत बुरा होता है हमारे मैके
 के महल्ले के लड़कों में से एक लड़का एक बड़े खिलौने से खेल
 रहा था एकबेर खिलौना हाथ से कूटकर पैरपर गिरपड़ा एक
 महीने तक वह लड़का उठनसका और एक लड़की सारी रेश-
 मी पहने ऊँचे दीलीवार रही थी लौ चिरागकी सारी में लग-
 गई ऐसी आगफौली कि लोग बुझा न सके वह लड़की जलकर
 मर गई पस ऐसे खेल अच्छे नहीं और तुम अम्मा जानका हाल
 देखती हो कि उदास हैं यानहीं यमुना ने कहा उदास तो हैं
 सरस्वती बोली कि फिर तुमने यह भी शाच किया कि क्यों उ-
 दास हैं यमुना ने कहा कि नहीं मालूम सरस्वती बोली वाह
 इसीपर तुम कहती हो कि अम्माको मैं बहुत चाहती हूँ यमु-
 ना ने पूछा अच्छा भाभीजान अम्मा क्यों उदास हैं सरस्वती ने

कहा खर्चकी तंगी है महाजन उधार नहीं देता इस शोचमें हैं कि यमुना खिल नैनों के लिये हठकरेगी तो कहां से मांग करदूंगी यमुनाने कहा कि अच्छा हमनहीं लेंगी सरस्वतीने कहा तुम बज्रत प्यारी बहिनहे और यमुनाको गले से लगाकर प्यारकिया अश्विकादत्त चुप बैठा हुआ यह बातें सुनता रहा जो किताब साकूल थी उसके मनने भी मानलिया और उसी समय नीचे उतर कर माता के पास गया और कहा कि मैंने सुना है कि तुमदीवाली के शोचमें बैठी है सो मेरेलिये तुम कुछ शोच मत करो सुभको खिलौने और रोशनीके लिये कुछ न चाहिये और यमुना भी कहती है कि मैं भी नहीं मगाऊंगी खर्चकी एक रक्कतो यों कमजुई और दो रुपयेमें सबसामान सरस्वतीने करलिया और भेजने भिजवाने के हेतु सरस्वतीने आप बन्दोबस्त किया जब बाहरसे बैना आया घर में ठहरने न दिया आदमी देकर बाहर निकला और इसने सहरीमें कहा कि इसको फलानीजगह पड़ंचादो जिस २ को भेजना था सब नाम बनाम पड़ंचगया और दो रुपयेमें अच्छे प्रकार दीवाली हो गई लक्ष्मी मिश्रायन यह बन्दोबस्त देखकर जल गई इस वास्ते कि उसकी बड़ी रक्कम मारी गई जितना बाहरसे आता वह सब लेती और जो घरमें होता उसमें से आधी तिहाई निकाल लेती और सब हंडियामें भरके महीने तक फांका करती दीवालीके बाद सरस्वती के बापकी अवाई हुई दशदिन पीछे दीवालीको देवीदत्त कांगडे से घर आया सरस्वतीने पहले से अपने बाप की अवाई सुन रखी थी और सासु और पतिसे ठहर गया था कि जब तहसीलदार आवेंगे उसीदिन मैं उनसे मिलने जाऊंगी जब सरस्वती ने बाप का आना सुना तुरन्त डोली मंगा जापड़ंची बापने गले से लगाया और देरतक हालपूछते पाछते रहे और कहा तुम्हारे लिखने के सुआफिक ईश्वरीदत्त आगरेको गये हैं कलया परसांसमधी साहब को लेकर यहां पड़ंचेंगे उनकी एक चिट्ठी भी सुभको राह में मिली थी सुभकी साहब को खुसत मिल गई है गर्ज

रातभर और अगले दिनभर सरस्वती अपने मैकेमें रही और सांझ समय पितासे कहा अगर आज्ञा दीजिये तो आज मैं चलीजाऊं वापने कहा अभी आठ सातदिन और रहे हम समधिन को कहला भेजेंगे सरस्वतीने कहा जैसा आप कहें वैसा मैं करूं परंतु अब्बाजानके आनेसे पहले घरमेंसे भागना उचित जानपड़ता है पिताने शोचकर कहा हां यह बात तो ठीक है अर्थात् सरस्वती वापसे विदा होकर घर आ पड़ची अगलेदिन ऐनभोजन के समयपर पण्डित शंकरदत्त अम्बिका दत्तके वापअचानक आपहूँचे ये राजाजयसिंह रईस आगरे के सरकार में सुखुतार से पचास रुपये महीना उनकी तनखाह मकान और सवारी रईस के जिम्मे था ईश्वरीदत्त सरस्वतीके लिखने से आगरे गया और सरस्वतीकी चिट्ठी शंकरदत्त को दिखलाई शंकरदत्त बहू की चिट्ठी देख कर बहुत आनन्द हुआ और यों था यदकुट्टीभी नलेतापरंतु बहूके देखने के शौकमें रईससे बहुत कह सुनकर कुट्टीली और ईश्वरीदत्तके साथ जाये जो कि सरस्वतीने पहिले कभी ससुरेको नहीं देखा था लाजके मारे कोठे पर जाबैठी अम्बिकादत्त की माताको यह आश्चर्य था कि ये क्योंकर आगरे राज भोजन के पीछे बातें हेनैलगी पण्डित शंकरदत्तने बीबीसे कहा कि सुनो सुनको तो तुम्हारी छोटी बहूने खींचकर बुलाया है और सब उत्तान्त चिट्ठी का और ईश्वरीदत्त के जाने का जोर से बयान करके कहा कि बहूको बुलाओ सास कोठे पर गई बहूको साथ ले आई सरस्वतीने ससुरेको झुककर प्रणाम किया और बैठ गई शंकरदत्तने कहा सुनो बेटो हमतो निज तुम्हारे बुलाये आये हैं तुम्हारी चिट्ठी देखते ही हमारा जो बहुत प्रसन्न हुआ परमेश्वर तुम्हारी आयुर्दाय बड़ी करे और सचकरके अब हमारे घरके अच्छे दिन आये जो तुम हमारे घर आई और सुनको भरोसा हुआ कि अब इस घरके कुछदिन फिरे कल जो परमेश्वरने चाहा तो तुम्हारी इच्छा के सुआफिक बन्दोबस्त होगा राज दोचार दिवस तो शंकरदत्त कि जहाँ मैं आया हूँ दिन पीके आये थे

मिलने मिलाने में रहे फिर दो चार दिन सफ़र के कारण से घर के काम काज के तर्फ़ कुछ ध्यान न किया एक दिन बहू को बुलाकर पास बैठा ला और लक्ष्मी मिश्रायन को बुलाकर कहा कि मिश्रायन हमारे रहते सब हिताव किताव कर लो जिस २ का लेना देना है सब लिखा दो कि शोच समझ कर जिस का जितना उचित हो वेदिया जावे और जो बाकी रहे उसकी बाद पाती कर दी जाय मिश्रायन ने कहा एक का हिस्सा ब हो तो मैं जवानी भी याद रखूँ बनिया बजाज कुंजड़ा हलवाई तमोली सब का देना है छदामी लाल का हिस्सा ब अलग है जिसको जितना देना हो सुभको दीजिये दे आऊँ आपके नाम जमअ हो जायगा पण्डित शंकर दत्त सीधे साथे थे देने को तैयार हो गये सरस्वती ने कहा यों वे हिस्सा ब देने से क्या प्रयोजन पहले हर एक का कर्जा दर्या फूट होत ब उसको शोच समझ कर देना चाहिये मिश्रायन ने कहा भोजन बनाने से छुट्टी पाऊँ तो हर एक से पूछ आऊँ सरस्वती ने कहा पूछ आने से क्या होगा जिसका लेना हो यहाँ आकर हिस्सा ब कर जाय मिश्रायन ने कहा कि बीबी आपने तो एक बात कह दी अब मैं कहां २ बुलाती फिरोँ और वे लोग अपने काम धन्धे से कब छुट्टी पाते हैं जो मेरे साथ चले आवेंगे सरस्वती बोली मिश्रायन कोई रोज २ का आना जाना नहीं है एक दिन की बात है जाकर बुलाना वो शासको रसोई का बंदोबस्त हो जायगा तुम आज यही काम करो और लेने वाले तो देने का नाम सुन कर दौड़े आयेंगे छदामी लाल तो दौड़ा काश नालिश करने कचहरी को गया था जहाँ आते क्या उसके पाउं की मेहदी घिस जायगी और दूर कौन हैं बनियां हलवाई तमोली सब इसी गली में रहते हैं सिर्फ़ बजाज और छदामी लाल दूर हैं उनको कल पर रक्खो फुट कर हिस्सा ब आज हो जाय मिश्रायन की किसी तरह मर्जी नहीं कि हिस्सा ब हो परन्तु सरस्वती ने बातों में ऐसा दबाया कि कुछ जवाब देते न बन पड़ा सबसे पहिले हलवाई आया पूछा गया कि तुम्हारा क्या पाना चाहिये हलवाई बोला तीस रुपये पाऊँगा मिश्रायन ने कहा नहीं तुम्हारे यहाँ से आई

हे हलवाई ने कहा तीस रुपया क्या बजत है पन्द्रह रुपये की मिठाई इसी दिवाली में आई अखिकादत्त की माता बोली अरीकैसी मिठाई अबकी बेर दिवाली में जो मिठाई हमारे घर आई वह नऊद हास देकर आई यह सुनकर मिश्रायन का रंग उड़ गया और बोली वह मिठाई तुने इनके हिस्सावमें क्यों लिखनी वह तो मैं दूसरे घरके वास्ते ले गई थी और तुम्हें को बत भी दिया था हलवाई ने कहा सुभसे तुमने किसी घरका नाम नहीं लिखा इसी घरके नामसे तुम लाई हो और सुभसे क्या फायदा था कि दूसरेकी चीज इनके नाम लिखता और सुभसे और किसी सरकार से उचापत भी नहीं है राजा शंकरदत्त ने कहा मिठाईकी रकम सरहने दो और चीजें बताओ गज्ज' इसी प्रकार और चीजें उसने बताईं जो जन्मभर नहीं आई थीं सिर्फ दो रुपये सच निकले बाकी सब भूठ शंकरदत्त का जो जल गया और बजतसा उसको क्रोध आया और कहा क्यों बी मिश्रायन ऐमाही तुमने दुनियांभरका चटख इस घर पर कर रक्खा है हलवाई हो चुका तो कुंजड़ा आया उसने कहा पण्डितजी मेरा तो सीधा हिस्साव है दो आने रोजकी तरकारी अखिकादत्त की माबोली अरेसेर भर तरकारी मेरे घर आती है दो आनेकी ऊई कुंजड़ा बोला कि मेरी दूकानसे मिश्रायन तीनसेर लाती है मिश्रायन बोलीहां तीनसेर लाती हूं सेरभर तुम्हारे नामसे सेरभर अपनी बेटीके वास्ते सेरभर दूसरे घरके वास्ते मैं क्या सुकती हूं यह सुना सब तुम्हारे नाम बताता है कुंजड़ा ने कहा अथवा डिया बेईमान सदातू इसी घरके नामसे लाती रही और जो रुपया मिला इसी घरसे मिला तेली तमोली का हिस्सा बज्ज आ तो उसमें भी बजत हालत निकला जाहिर हुआ कि मिश्रायन इसी घरके सौदे में अपनी बेटी और दोतीन पड़ोसियोंके घर घूरे करती है इसी घरके नामसे सौदा लाती है और दूसरे घर बेच डालती राजा शासतक फुटकर हिस्साव भगत गया अब अकेले बजाज और छदामीलाल का हिस्साव रहा अखिकादत्त ने

नेचुपकेसरखतीसे कहाऐमानहो कि मियायनभागजायसर-
खतीने कहा घरवार लड़के बच्चे छोड़करकहां भाग जायगी
हां घायद गौरतदार होती कुछ खाले परंतु ऐसी गौरतदार
होती तो क्यों ऐसा काम करती लेकिनतौही इतनी चौकसी
इसकी अवश्य है कि बाहर आते जाते कोई आदमी देखता
रहे भंकरदत्तने अपने एकनौकरको जासाय आयाथा चुपके
से कह दिया कि मियायनको आतेजाते देखतेरहो जबखाने
से कुड़ीमिली और मियायन चुपके से उठकर बाहर निकली
तो भोला नौकर भंकरदत्त का पीछे रज्जुआ मियायन
पहलेंतो अपने घरगई और वहां से कुछ बगानमें दवा सीधी
बजाजके मकानपर जा उतको आवाज दी बजाज घरका कर
बाहर निकला और कहा मियायन तुम इस समय कहां
आई मियायन ने कहाकि पण्डितजी आये जुये हैं जिस २
कादेनाहै सबका हिसाबहोताहै कलतुम भी बुलाये जावोगे
ऐसी बात मत करना कि मेरी रुसवाई हो बजाज ने कहा
हिसाब मैं तुम्हारी रुसवाई की क्या बात है मियायन बोली
अबलाला तुम जानतेहो लालच बड़त बरीहोती है सरकार
के हिसाब मेंमें अपनेलिये भी तुम्हारे दूकानसे कभी २ लट्ठा
नैनसुख दरेसलेगई बजाजनेकहा क्यामालूम तुमअपने वास्ते
क्या लैगई हो मियायनने कहा सुनकोतो इस समय हिसाब
करने की सुधनहीं परंतु दोचारयान दरेसलट्ठा नैनसुखनेरे
हिसाब में निकलेंगे मेरी हाथकी चार चूड़िया सोलह रूपये
कीहैं विसविसाकर एकलपयाकम होगयाहोगा पन्द्रहरूपये
मेरे नामसे कमकर देना और दोचाररूपया जो मेरेनामका
निकलेंगा देने को मौजूदहूँ बजाजने कहा चूड़ियां तुमदती
होमैं लेताहूँ परंतुरातका समयहै वहीखाता दूकान परहै
वेदेखे क्या मालूमहो क्यागयाहै और क्या पानाहै मियायनने
कहा इस समय मेरी इज्जत तुम्हारे हाथमें है जिसप्रकारहोसके
बचाओ फिर बजाज से विदा हो सीधी कदामीज्जाल के घर
पहुंची वह भी आश्चर्य में होकर कहने लगा कि इस समय

मिश्रायन तुम कहां आई मिश्रायन उसके पांवपर गिर पड़ी और कहने लगी कि मुझसे एक अपराध हुआ है छदामीलाल ने कहा वह क्या हुआ मिश्रायन बोली कि तुम वचन दो कि मैं क्षमा कर दूंगा तो मैं कहूँ छदामीलाल ने कहा बात तो कहो मिश्रायन ने कहा चारमहीने ऊँचे पण्डितजी ने आगरा से सौ रूपये तुमको भेजे थे वह मेरे पास से खर्च हो गये सरकार में डरके मारे मैंने जाहिर नहीं किया अब पण्डितजी आये ऊँचे हैं तुमको हिसाब के वास्ते बुलावेंगे मैं इस रूपये का ठिकाना लगा दूंगी तुम यह मत कहना कि मैंने यह रूपया नहीं पाया छदामीलाल ने कहा दो चार रूपये की बात होती तो मैं क्षिपा भी देता दूकट्टे सौ रूपये तो मेरे किये क्षिपनहीं सक्ते मिश्रायन ने कहा क्या लाता सौ रूपये का भी मेरा भरोसा नहीं छदामीलाल ने कहा साफ़ बात तो यह है कि तुम्हारा एक कौड़ी का भी भरोसा नहीं जिस घर में तुमने जन्म भर परवरिश पाई और उन्हीं के साथ यह सलूक किया तो दूसरे के साथ तुम चूकने वाली हो मिश्रायन ने कहा हां लाता जब बुरा समय आता है तो अपने घर के बैरी बन जाते हैं खैर जो तुमको सुझपर भरोसा नहीं तो लो यह मेरी बेटी की पड़ुंची और जोशन रखलो छदामीलाल ने कहा यह सुआमिला की बात है दिन हो तो माल परखा जाय और मालूम हो कि कितने का है परंतु अटकल से यह माल पचासका होगा मिश्रायन ने कहा अरे लाता ऐसा अन्धेरे मत करो अभी चारमहीने ऊँचे दोनों चीजें नई बनवाई थीं सौ सवासै के लागत की हैं छदामीलाल ने कहा इसमें बुरा मानने की क्या बात है तुम्हारी चीज सौ की है या दो सौ की है कोई लिये घोड़ा ही लेता है तो लाने से जितने की ठहरेगी मालूम हो जायगी यह सब बन्दोबस्त करके मिश्रायन लौट आई और पण्डितजी के नौकर ने पांव दाने में यह सब हाल पण्डितजी से बयान किया अखिकादत्त की माता के सुख से सरखती को भी मालूम हुआ भोर हुआ तो बजाज और छदामीलाल बुलवाये गये हिसाब में कुछ तकरार

होने लगी मिश्रायन बड़ चढ़ कर बोलती थी बजाज ने कहा
 तू बुढ़िया क्या बड़ २ करती है उठाओ अपनी चूड़ियां तू तो
 पन्द्रह रुपये की बताती थी बाजार में नौ रुपये की आंकते हैं
 फिर कदामीलाल ने पड़चियां और जोशुन निकाल सामने
 रखदिये और मिश्रायन से कहा यह माल पचासका अंकता
 है और हमारे कास का नहीं शंकरदत्त ने बजाज और क-
 दामीलाल से पूछा क्यों भाई यह कैसी चीजे हैं तब दोनों ने
 रात की कहानी वयान की उस समय मिश्रायन के सुंह पर
 मानों लाखों जूतियां पड़ रही थीं जब हिसाब हो गया तो शं-
 करदत्त ने देने को रुपया निकाला तो जितना बाजिबी या आ-
 धा २ रुपया सब का दे दिया और कहा कि मैंने आगरे से
 रुपया मंगाया है दश पांच दिन में आ जायगा तो बाकी भी
 दिया जायगा सब लोगों ने पूछा कि जो मिश्रायन के तर्फ नि-
 काला वह किससे ले शंकरदत्त ने कहा कि मिश्रायन से हि-
 साब की खबर सुन कर जयजयवन्ती डोलो पर चढ़ कर आ
 पड़ची और सरस्वती से गिल्ला किया कि क्यों जी तुमने मुझको
 खबर न की सरस्वती ने कहा अभी तो हिसाब होता था जब
 यह हिसाब हो चकता तो मैं तुमको खबर करती गर्ज हिसाब
 हो जाने के पीछे शंकरदत्त ने मिश्रायन से कहा अजीबू नका
 रुपया अदा कीजिये मिश्रायन ने नीचे आंखें कर कहा मेरे
 पास बेटी का गहना है उसमें यह अपना २ समझवूझ लें बेटी
 का तमाम गहना तो कुण्डे हलवाई बनिये बजाज तमोली
 के हिसाब में आधे दामों पर विक गया कदामीलाल के सौ र-
 पये के वास्ते रहने का भोपड़ा गिरवी करना पड़ा लिखा पढ़ी
 पक्के कागज पर हो कर चार भले आदमियों की गवाही हो-
 गई शंकरदत्त ने मिश्रायन से कहा बस अब आप यहां से प-
 धारिये तुम ऐसी नमकहराम बेईमान का हमारे घर में कुछ काम
 नहीं सरस्वती ने कहा इनमें नमकहरामी के सिवाय एक
 गुण और भी था वह यह कि घर में बिरुद्ध डलवाने की यत्न में
 रहती थी क्यों मिश्रायन वह कड़ी की बात याद है कि तुमने

कहा कि बहू कहती हैं कि मेरे शिर में दर्द है बोल तो सही
 कम तूने सुझसे कहाया और कम मैंने दर्द शिर का बहाना
 कियाया मिश्रायन ने कहा दुलहिन तूम अटारी पर पाठ
 कर रही थी मैं कोठे पर गई तूमको पढ़ते देख ललटी फिर
 आई सरस्वती ने कहा दर्द शिर की बात अपने मन से बनाई
 मिश्रायन ने कहा मैंने सोचा कि सबेरे से अबतक तूम पढ़ रही
 हो अब कहा चूल्हे में शिर खपाओगी सरस्वती ने कहा भला
 पहाड़ जाने की बात तूने किस प्रयोजन से कही थी मैंने तुझसे
 सलाह की थी या तूने सुझको कहते सुनाया इसका कुछ उ-
 त्तर मिश्रायन को न आया फिर सरस्वती ने इश्टिहार निकाल
 पण्डित शंकरदत्त के सामने डाल दिया और कहा देखिये यह
 मिश्रायन आपतो महल्ल के फाटल से इश्टिहार उखाड़ कर
 लाई और मकान पर लगाया और आपही अम्मा जानसे दौड़ी
 कहने गई कि महाजनने नालिश की सरस्वती ये बातें कहती
 जाती थी और शंकरदत्त का चेहरा क्रोध से लाल हो हो जाता था
 उधर जयजयवन्ती दांत पीसरही थी शंकरदत्त ने कहा मिश्रा-
 यन तुझको निकाल देना काफ़ी नहीं है तू बड़ी बदचाल स्त्री
 है यह कह कर अपने नौकर को आवाज दी और कहा कि ग-
 नेश इस पापिन को घाने में ले जाओ और पर्व में हम इसका सब
 हाल लिखे देते हैं सरस्वती ने शंकरदत्त से कहा बस अब जाने
 दीजिये और मिश्रायन से कहा कि चल दे अर्थात् इस विधि
 अपने कौतुकों के कारण मिश्रायन निकाली गई जब मिश्रायन घर
 पहुँची तो बड़ी बोली क्यों मैं न कहती थी कि अम्मा ऐसी लूट
 तू मतमचा सौ दिन चोरके तो एक दिन साहका ऐसा न हो
 किसी दिन पकड़ी जावे तूम किसकी मानती थी अच्छा हुआ
 जैसा किया वैसा पाया अब ससुराल में सुझको बदनाम मत
 करो जहां तूमको तुम्हारा परमेश्वर ले जाय चली जाओ मेरे
 घर में तुम्हारा काम नहीं है गहने को मैंने संतोष किया प्रारब्ध
 में होगा तो फिर मिल रहेगा इस प्रकार से परमेश्वर २ करके
 अपने बैरिन को सरस्वती ने निकाल पाया जब मिश्रायन इस घर

से निकल गई तो सरस्वतीने बापके पास जानेको फिर आज्ञा
 चाही और आनन्द पूर्वक विदा हो माताके घर आई और
 सात दिन तक बराबर माताके घर रही जिस बातसे बापसे
 सत्ताहलेनी थी सबली बापने पूछा मिथ्यायन निकल गई सर-
 स्वतीने कहा आपकी कृपासे यह सब काम सिद्धि हुआ न बड़े
 भाई आगरे जाते न अब्राजान आते न यह वर्णो काले खाते
 होता न मिथ्यायन निकलती बापने पूछा अब बन्दो बस्त घर का
 किस तौर होगा सरस्वतीने कहा कि मिथ्यायनके निकलते मैं
 इधर चली आई परंतु अब बन्दो बस्त क्या कठिन है इसी मिथ्या-
 यनकी खुराकी थी अब मैं सब देख भाल लूंगी देवीदत्त ने पूछा
 और कहा क्या २ वाते वरमें तुमने नई जारी की सरस्वतीने कहा
 अभी मैंने कुछ देखा भालानहीं आदिहीसे मिथ्यायन का भ-
 गड़ा होगा अब दूरादा है कि हर एक बातको सोचों और
 बन्दो बस्त करूं और आपको चिट्ठी के द्वारा खबर करती रहूंगी
 देवीदत्त ने व्याह पीछे से सरस्वती का दण्ड रुपया महीना
 सुकर कर दिया था सरस्वतीसे पूछा अगर तुमको खर्च कीतक-
 ली प्यार होती हो तो मैं कुछ रुपया तुमको देता जाऊं सरस्वती
 ने कहा वही दण्ड रुपये मेरी जरूरतसे अधिक हैं बल्कि आज
 तक के सब रुपया मेरे पास जमा हैं अधिक ले कर मैं क्या करूंगी
 और जब प्रयोजन लगेगा तब आपसे मांग लूंगी गर्ज बापसे विदा
 हो सरस्वतीने मसुरात में आकर देखा कि सास चूल हा भोंक
 रही है सरस्वतीने आश्चर्यसे पूछा कि अय अवतक काई मिथ्या-
 यन नहीं रक्खी गई सास बोली आनेको तो कई आईं पर तन-
 खाह सुनकर हिआउनहीं पड़ता कि किसी को नौकर रखिये
 लक्ष्मी बुरी थी मगर आठ आने महीने पर उसने पच्चीस वर्ष नौकरी
 की अब जो मिथ्यायन आती है खाना और दो रुपये से कम का
 नाम नहीं लेती मैंने तुम्हारे आने पर रक्खा था सरस्वतीने कहा
 मिथ्यायन तो एक मेरे नजर में बैठी है परंतु दर माहा वह भी
 अधिक मांगती है राम कालीकी छोटी बहिन गुलवासा पकाना
 सीना सब जानते हैं एक बार राम कालीने मुझसे कहा था कि

कोई अच्छा ठिकाना होता। गुलवासा नौकरी करनेको मौजूद है
 अश्विकादत्तकी माताने पूछा वह क्या दरमा हालेगी सरस्वती
 ने कहा वह तो अपने सुंहसे तीनरूपया रोटी मांगती है परंतु
 समझायेसे दोरूपये महीनेपर शायद राजी होजाय अश्विका
 दत्तकी माताने कहा कि दोरूपया खाना देना होता हरभा-
 नदत्त मियकी जोरू अनन्दीचिरौगी करती है उसीको न रक्खे
 सरस्वती ने कहा उसको तो मैं चार आने महीने परभी न
 रक्खों अश्विकादत्त की माताने कहा कि बेटी क्यों सरस्वती
 ने कहा पड़ोसकार रहेवाला आदमी बुरा आंखवची और जो
 चीज चाही घरमें जाकर रख आई जब घरसे घर मिला है तो
 हरघड़ी हरभानदत्तकी घरवाली अपने घर जायगी और क्या
 आश्चर्य है कि रातकोभी अपनेघररहे अश्विकादत्तकी माताने
 कहा शालिकराम मिय की स्त्रीने अपनी बेटी रामकुअंरि के
 लिये सुझसे कई बार कहा और रामकुअंरि तो गोलदरवाजे
 में रहती है सरस्वतीने पूछा वही रामकुअंरि जो अच्छे भांति
 बनीठनी रहती है अश्विकादत्त की माताने कहा बनीठनी क्या
 रहती है नई ब्याही जई है कपड़े पहिनने का जर्रा शौक है
 सरस्वती कहा ऐमा आदमी नहीं रखना चाहिये अश्विका
 दत्तकी माताने कहा शालिकरामकी जोरू नौकरी करनेको
 राजी है सरस्वतीने कहा उसके साथ एक दुमकुत्ता छोटी बेटी
 का लगा है वह एकदम साको नहीं छोड़ती यशनाम तो एक
 का होगा और भोजन करने को दो २ होंगे अश्विकादत्त की
 माने कहा फिर और कैद तो भरे चित्त नहीं चढ़ती सरस्वती
 ने कहा देखो उसी गुलवासाको बुलाऊंगी अश्विकादत्त की
 माताने कहा तनख, हक्या होगी सरस्वतीने कहा कि इमान-
 दार आदमी तो कम दरमा हे परमिलना कठिन है इनखोगोंको
 दो की जगह तीन देने गौ है परंतु लक्ष्मी ऐसीको आठआना
 देकर घर लुटवाना मंजूर नहीं है उससमयतो सासु बज्ज्यों
 ने मिलभूलके रसेई बनाली भोजनके पीछे सरस्वती यमुना
 अपनी नन्दकोते अटारीपर चली गई जबतक पण्डित शंकरदत्त

घररहे सरस्वतीने कौठे परसे उतरना वज्रत काम कर दिया था सिर्फ़ सुबह शामनीचे उतरतीथी बल्कि यमुनाको भी मना कर दिया था कि हर घड़ी नीचे मत जाया करो यमुना तो लड़की थी उसने पूँछा अच्छी भाभीजान क्यों न जावें सरस्वती ने कहा बड़ोंके सामनेहर घड़ी नहींचलते फिरते खानेकैपीके घरकेहिसाब किताब में शङ्करदत्त से और घरवालीसे लड़ाई होनेलगी बीबीकी यह शिक्षायतथी कि तुम खूँच वज्रत थोड़ा देतेहै। यहां शादीब्याह विरादरीका लेना देना आनाजाना सब सुभको करनापड़ता है शङ्करदत्तकहते थे कि बीसरूपया महीना थोडानहीं है तुमको घरगृहस्थी करनेका ढंग नहीं है इतनेमें शङ्करदत्तने यमुना को पुकारा यमुना आई कहा अपनीभाभी को बुलाताओ सरस्वतीने बुलाने की ख़ुबरसुनी तो आश्चर्यमें हुई कि इससमय क्यों बुलाया यमुना से पूँछा क्याहोरहा है यमुनाने कहा लड़ाई होरही है सरस्वती गई तो शंकरदत्तने कहा क्योंबेटी अबघरका बन्दोबस्त कौनकरे गा सरस्वतीने कहा अम्माजान करेगी जिसप्रकार अब तक करतीथीं शङ्करदत्तने कहा इनके बन्दोबस्तको देखलिया बीसरूपया महीना जिसघरमें आताहो उसघरकी यही सूरत है कि न अच्छाकोई बर्तनहै न इज्जतकी कोई चीज जो किसी समय एक चिमचा शरबत दरकार होतो परमेश्वरने चाहा उसका सामान भी घरमें न निकले सरस्वती ने कहा अम्मा जानका इसमें क्या दोष है लक्ष्मी मिश्रायन ने घरको सत्वा नाशकिया पण्डितशङ्करदत्तबोले इनमेंगृहस्थीके करनेकीबुद्धि होतीतो मिश्रायन का क्या दावा था मिश्रायन नौकरथी या घरकी मालिकनथी सरस्वती ने कहा पच्चीस वर्ष का जब पुराना नौकर लूटनेपर कमरबांधेतो उसके धोखेको कौनजान सका है ऐसे पुराने आदमीपर तो शुबहा भी नहीं हो सका शंकरदत्त बोले तुमको आखिर शुबहा हुआ या न हुआ सरस्वतीने कहा सुभको क्या शुबहाहुआ उसकी शामत और गुरे दिनके कि उसने सुभको छोड़के अपने ऊपर ख़राबी ली

इतनेमें सासबोली पचासमें तो तुम अपने अकेली दमके वास्ते तीसरूपया रखो और यहाँ कुनबेके लिये बीस रूपया शंकर दत्तने कहा घरका खर्च बाहरका खर्च वही बराबर हो सक्ता है तुमने तो सुझाओ अकेला समझ लिया और हिंदुस्तानगार मबारी मकान कपड़ा लत्ता भी तो इसीमें है जोरूने कहा कि सवारी और मकान तो सरकार से मिलता है शंकरदत्त ने कहा थोड़ा मिला दाना घास तो अपने गिरहसे खिलाना पड़ता है चार रूपयेका साईंश और मकान की मरम्मत फिर सरकार दरबारके सुआफ़िक्त है सियत देना लेना हजारबखेडे हैं नहीं मालूम मैं किसप्रकार निर्वाह करता हूँ सरस्वती ने साससे कहा अम्मा जान बीस रूपये में तकरार करने से क्या फायदा जितना मिलता है परमेश्वर का शुक्र करो यह बीस हमारे नज़दीक हजारोंके बराबरहैं सासने कहा बेटीसुझसे तो इस बीसमें घर नहीं चलता यह सुनकर सरस्वती ने सास को रोका और शंकरदत्त से कहा आप चाहिये दो रूपये और कमदीजिये परंतु जोकुछ दीजिये महीने २ मिला करे जिससमय पैसा नहीं होता तो उधारलेना पड़ता है और उधार से घरकी रही सही बरक़त भी उड़जाती है शंकरदत्तने कहा हिंदुस्तानी सरकारों में तलब मिलनेका दस्तूर बल्लत बुरा है कभी छठे महीने कभी बरसबेदिन तलब मिलतो है इस कारण खर्चका बंधेज नहीं हो सक्ता परंतु छदामीलाल से मैं कह जाऊंगा कि महीने के महीने बीस रूपया तुमको दै दिया करेगा सरस्वतीने पूछा कि महाजन बना जाइयेगा तो बस आप से खदमांगेगा शंकरदत्त ने कहा नहीं खद क्या लेगा हमारे सरकारमें भी इसका लेन देन है वहांसे ऊबल आजायगा सरस्वतीने कहा तो बल्लत उत्तम है इसप्रकार बीसरूपये तना खाह ठहरी परंतु अखिकादत्तकी माता को बुरा लगता और और अलग जाकर सरस्वतीसे गिला किया सरस्वती ने कहा कि घरतो बीस रूपयेमें मैं चला दूंगी इहका आपकुछ शोच न कीजिये और पण्डितजीतो तीसरूपये से कममें अपनी हैसि-

यत दुःखस्तनहो रखमको सुखतापी की नौकरीमें पहिली तो
 ऊपरसे आसदगी नहीं और जो ऊर्द भी तो पण्डितजी क्यों
 लेनेलगे अगर वह आप को शर्मे रहे और दोचार रुपया घरमें
 अधिक भी आये तो उचित नहीं यह बात सुनकर सासबुपुत्र
 रही सरस्वतीने गुलवासा मियायन को बुलाये जा और कह
 सुनकर दो रुपया खानेपर राजी करलिया और जता दिया
 कि गुलवासा कोई ऐसी बात नहो कि तुम्हारे भरोसेमें फाँक
 पड़े जिसप्रकार तुम्हारी बड़ी बहिन हमारे झैके में रहती है
 उसी प्रकार तुम रहना गुलवासा न कछा बेटी भगवान उस
 घड़ी मौत देवे कि पराये भातपर नजर कहां ज़रूरत हो तो
 तुमसे मांगकर खाऊं पर बेइकमत नोनक चखना दोष सम-
 झतीहूँ दूसरे दिन शंकरदत्त आगरेको सिधारे और ज़रूरत,
 को सबवस्तु सरस्वतीने इकट्ठीसंगवाली और सदायहदस्तर
 रखी कि सखी समय पर हर एक चीज ले रखती थी सिर्का
 धनियां अनाज, दाल, चावल, खांड, लकड़ी, कण्डा, आलू,
 अरई, सेवी, शलजम, सोयेका माग, हरचीज वक्तपर मोलकी
 जातीथी मियायन मिलाकर घरमें छः आदमी ये दोनों जून
 दालरोटी चावल और दो भांति की तर्कारी मियायन बना-
 लेती थी और सातवें दिन सादा पुताव और मीठे चांवलों
 के पकने का सालून था घरमें दोतीन प्रकार ओ चटनी कोई
 चाशनी दार, कोई अर्क नाना की कोई सिरकी की दो चार
 प्रकार का खुरक्का बना रक्खा इसके सिवाय शर्बत अनार
 नीबू शर्बत, शिकंजवीन शर्बत, बनफ़शा शर्बत, नीलाफ़र
 शर्बत, फ़ालसाकी एकर बोलन बनाली और हरतरहका ज-
 रुरी सामान घरमें मौजूदरहा करता था बावजूद इससामान
 के पन्द्रह से अधिक खर्च नहीं होताथा पांच रुपया जो बचते
 थे उसमें बड़े २ बर्तन और एक बर्तन चाह बनाने का मोल
 लिया दोसंइक बनाये गये दो अलमारियां अस बावकी को-
 ठरीमें बैठने की चौकी पुरानी होगई थी वह दुःखतऊई दोप-
 लंग तैयारहुये खुलासा यह कि सरस्वतीने इसबीस रुपये में

घरका बड़ी रौनकाली हर वस्तु में बन्दोबस्त और हर चीज में
 किफायतका देखलदिया लक्ष्मी मिश्रायनके समय में यमुनाके
 वास्ते दोचार पैसका नित्यसौदा बाजारसे आताथा इसवास्ते
 कि रसोई में कुकनहीं बचताथा अब सबरे की रसोई को कुक
 बन्दजाता था वह तीसरे पहर यमुनाके खानेकेलिये रखदिया
 जाताथा कभी यमुना को वह खाना दिया गया कभी नमक
 पारा बनादिये गये और जो आठवें दशवेंदिन यमुना काजी
 चाहा तो बाजारसे कुक मंगवादिया गया इस घरसे जन्मभर
 भिक्षुक को एक दिन चुटकी आटा या किसी अपाहिज को
 आधी रोटि नहीं मिलती थी अब दोनों समय दोर रोटियां
 फकीरोंको भीदी जातीहैं घरमें जो असबाब बेढंगी से साग
 भूलीकी तरह से पड़ा रहता था अब सब वस्तु ठिकाने लगी
 कपड़ों की गठरियोंमें तो कपड़े अच्छे प्रकार तह किये ऊँचे
 बंधेहैं अनाज पानी की कोठरी में हर एक चीज एहतियात
 सेरक्खीऊईहै बर्तन साफ सुधरेअपनीजगहरक्खे हैं फूलकेअलग
 और पीतलकासकुटके अलगगोया घरएककलधीजिसकीकील
 पुर्जेसबदुरुस्त और उसकलकी कुंजी सरस्वतीके हाथमेंथी जब
 कुकदियाकलअपने भासूलसेचलनेलगी जबसेसरस्वतीने घरका
 बन्दोबस्त अपने हाथमें लियाएधारलेना सौगन्धहोगया सर-
 स्वती घरका सबहिस्सा एककिताब में लिखा करती थी जब
 कोई वस्तुहोचुकी फिर आई और गुलबासा ने खबर की कि
 बीबी दोदिनकाधी औरहै सरस्वतीनेअपनी किताब निकाल
 करदेखा किकिदिन कितनाधी आयाथा और कितनेरोजके
 हिसाबसे खर्चऊँचा गुलबासा ऐसी इमानदार नौकर थी कि
 सुमकिन नहीं था कि कोई चीज फजूलखर्च होया बेहिसाब
 चठजाय पिसाई वालोंकी पिसाइयां और धोबिनकी धुवाईयां
 तकसरस्वतीकी किताबमें लिखीजातीथी जबहर एकचीजका
 बन्धेज होगया तो सरस्वतीने दूसरे कार्यों को देखना आरम्भ
 कियाअखिकादत्त पढ़ता लिखतातोथा परन्तु उस बेतदबीरी
 और बेशौक्री सेजिस तरह आज्ञादखुद मुखतार लड़के पढ़ा

करते हैं बाप तो इसके बाहर रहते थे बड़े भाई से भिन्न अठाई
वर्ष की कुटुम्बी थी इसलिये अम्बिकादत्त पर बड़े भाई का दबाव
कम था सुबह शाम अम्बिकादत्त सबका पढ़ लेता था और फिर
अपने हम जोलियों में गंजीफा शतरंज चौसर खेला करता था
बाक दफ्ताखेत में ऐसा मसरफ़ होता कि पहर रात गये घर आता
सरस्वती को यह हाल तो मालूम था परंतु मौक़ा ठूँटती थी कि
ऐसे ठबसे कहना चाहिये कि बरामालूम नहीं एक दिन बहुत
रात गये अम्बिकादत्त आया और शायद बाकी जीत कर आया
था इससे खुश था आते के साथ भोजन मांगा गुलबासा मिश्रायन
खाना गर्म करने दौड़ी गई अम्बिकादत्त समझा अभी मिश्रायन
पकार ही है पूछा मिश्रायन अभी तक तुम्हारी डेगची चूल्हे से नहीं
उतरी सरस्वती ने कहा कई बेर उतर कर चढ़ चुकी है ऐसे समय
तुम भोजन किया करते है कि सोई ठंडी होकर मिट्टी हो जाती
है तुम ऐसा उपाय क्यों नहीं करते कि सबेरे भोजन कर लिया
करो तुम्हारे इत्तिज़ार में अम्मा जान को भी नित क्लेश होता
है अम्बिकादत्त ने कहा अये तुम लोग मेरे आसरे बैठे रहते
हो मैं तो जानता था कि तुम भोजन कर लिया करते होगे सर-
स्वती ने कहा पुरुषों के पहले स्त्रियों को खाना कब उचित है
अम्बिकादत्त ने कहा दो चार दिन की बात होता कटसली है
इसमें हठ की क्या बात है तुम भोजन कर लिया करो सरस्वती
तो उस समय चुप हो रही परन्तु कोठे पर अम्बिकादत्त ने फिर
आप छेड़ कर इसी बात को कहा सरस्वती ने कहा आश्चर्य की
बात है तुम अपने दस्तूर के खिलाफ़ नहीं कर सक्ते और हम
लोगों से चाहते हो कि हम अपने दस्तूर के खिलाफ़ करें तुम्ही
सबेरे चले आया करो अम्बिकादत्त ने कहा भोजन पाने के पीछे
मेरा बाहर निकलने का जी नहीं चाहता और सुभ के नींद
देर को आती है घर में बेकाम कार्य पड़े २ जी घबराता है इस-
लिये मैं देर करके आता हूँ कि भोजन के पीछे सोरह सरस्वती
ने कहा कि काम कार्य तो अपने आधीन है अगर आदमी अ-
पने वक्तों का बन्दोबस्त करे तो हजारों काम है एक पढ़ने का

शगल क्या कम है मैं अपने बड़े भाईको देखाकरती थी कि आधीरात तक किताब देखते और जिसदिन संयोग से सो जातेतो बड़ा पछतावकिया करते थे तुमपढ़नेमें कमसनलगाते हो इसकारण बेशगलीसे तुम्हारा जीवबराता है अम्बिकादत्तने कहा और क्यासनलगाऊं दो नौ वक्त सबकपढ़लेताहूं यादकर लेताहूं सरस्वतीने कहा नहीं मालूम तुमको सापढ़नापढ़ते हो जिसदिनमिथ्यायनकाहिंसावकितोबहेताथा औरअव्याजान तुमसे हिंसाव पूछतीथीं तो तुम बतानहीं सक्ते थे सुभक्तोशर्म आतीथी अम्बिकादत्तने कहा हिंसाव दूसरी चीजहैमैंअरबी फारसीपढ़ताहूं उससे और हिंसावसे क्या तअसुक्त सरस्वती ने कहा पढ़ना लिखना इसी वास्ते होताहै कि अपना कोई काम अटका नरहे बड़े भाई अरबी फारसी बहुत पढ़गये हैं परन्तु नौकरी नहीं मिलती अब्बा कहा करते हैं कि जबतक हिंसाव किताब और कचहरीका काम नभीखोगे नौकरी का ध्यान मतकरो छोटाभाई रामदत्त मदर्समें पढ़ताहै और हिंसाव किताबमें बड़ेभाईसे जियादा होशियारहै और अव्या उससे बहुत खुशहैं और कहतेहैं कि चार वर्ष मदर्समेंऔर पढ़ो तो तुमको कहीं नौकर करादेंगे अम्बिकादत्त ने कहा मदर्समें कमउमरआदमीको भरतीकरतेहैं मेरी उमरअधिक है सरस्वतीने कहा मदर्समें जाने पर क्या है यों शहर में क्या लिखानेवाले नहीं है जितना समय तुम खेल कूदमें गंवातेहो पढ़ने लिखनेमें लगाओ अम्बिकादत्तने कहा खेलक्या मैं दिन रात खेलताहूं कभी घड़ी कभी दा बड़ीको बैठगवासरस्वती ने कहा खेलना अफ्रयून कीभी चाटहै थोड़ेसे शुरुअ होकर बढ़तीजातीहै इहांतक कि लत परजातीहै फिर कूटनाकठिन होताहै पहलेतो ये खेल दोषहैं दूसरे मनुष्योंको पढ़ने और कामकी बातें हासिल करनेसे रोक्तेहैं कामकार्य के मनुष्य ऐसे खेल नहीं खेलते निकम्मे लोग अलबत्ता इसप्रकार दिन काटतेहैं इनखेलोंमें जैसा दांवजीतनेसे मनप्रसन्नहोताहै हारनेमें दुःखभी बहुत प्राप्तहोताहै और जिसप्रकार उसआनन्द

की कुछ नइ नहों होती उसप्रकार यह दुःख भी नाहक का
 होता है और बड़धा खेतते २ आपसमें सुफ्तकी तक्रार भी
 होजाती है मेरी सलाहमाने तो इन खेतों का बिलकुल छोड़
 दो लोगतन्हा रहे खुहपरतो कुछनहीं कहते परन्तु पीछे चंकेते
 हैं परसोंकी बातहै कि तुमको कोई आदमी बुलानेआया था
 मिश्रायनने अन्दरसे जवाबदिया कि बाहर गये हैं सप्त पुरुषने
 अपने साथवाले से कहा कि मियां इसा मवखूश रं कीकमकान
 पर चलो वहां घातरंजके जमघटमें मिलेंगे अब्ब जानकाशहर
 में बडानाम है ऐसीजगह जाने से नास बढ़हेता है और मैंने
 अब्बाजानको अफसोसकरते सुना कि हाय हमारे भाग दो
 लड़कों में कोई ऐसा न छुआ कि उसको देखकर जी प्रसन्न
 होता परमेस्वरदीक्षको कुछ लिखाया पढ़ाया था वह अपनी
 नौकरीके पीछे ऐसा पड़ा है कि लिखना पढ़ना सब भूलगया
 है ये छोटे साहब हैं इनको खेलकूदसे छुट्टी नहीं बल्कि हमारे
 अब्बाकोभी किसीने इसकी खबर कर दी सुझसे पूछते थे मैंने
 कहा सब भूठ है अगर ऐसी बात होती तो सुझको मालूम
 होता सरस्वती की नसीहत ने अम्बिकादत्त पर बहुत असर
 किया और उसने खेतना बिलकुल छोड़दिया अब पहिले के
 वनिस्वत अरबी फारसीपर ज्यादा मेहनत करनेलगा और
 एक दस्तूरसे मदर्सके बाहर हिसाब किताब बगैरहमी सी-
 खना आरम्भ करदिया परमेस्वर ये समयमें बड़ी बर्कत दीहै
 उसको बंदोबस्तके साथ भरतने से अम्बिकादत्त की इस्तादाद
 अरबी और फारसी की बहुत दुस्त हो गई और हिसाब
 रयाजी कीभी कई किताबें निकल गईं अम्बिकादत्त तो इधर
 मसहूर रहा सरस्वतीने एक और कारखाना इसी बीचमें
 जारी किया इस महल्ले में पण्डित ईश्वरी प्रसाद बड़े नामी
 गिरामी आदमी थे ईश्वरी प्रसाद तो सरकार महाराजा
 बलिराम पुरमें दीवान थे परन्तु घरबार लड़के बच्चे सब इसी
 महल्ले में रहते थे मकान बाग नौकर चाकर बड़ा कारखाना
 था पण्डित ईश्वरीप्रसादके छोटे भाई अयोध्याप्रसादमहाराजा

कपूरधना के सरकार में सुदृढ़ तक सुखार कुल रहे जब उस
 सरकारमें दीवान रामयशको बड़ा अख्तियार हुआ मसल-
 हतबल, समझकर नौकरी छोड़कर घरबलेआये परन्तु लाखों
 रुपया घामेंथा नौकरी की कुछ परवाह न थी हजारों रुपये
 की गियासत शहर में खरीद करली थी सैकड़ों रुपये माह-
 वारी किराया चला आताथा बड़े शान से रहतेथे डोढीपर
 मिपाहियों का गारद अंदर बाहर तीस चालीस आदमी
 नौकर घोड़ा हाथी पालकी वगैरी सवारीको मौजूदअयोध्या
 प्रसाद कीदोबेटियां थीं गुलाब कुंअरि और सहताब कुंअरि
 गुलाबकुंवरिपण्डितचंडीदत्तके बेटेसेव्याहीगईथी परन्तुव्याहके
 पीछेसे नामवाफ़क़त कि मसुरालमें आना जाना बन्दहोगया
 सहताबकुंवरि की संगनी पण्डित रामप्रसाद दीवान महा
 राजा रीवांसे ठहरी हुईथी इन लड़कियोंकी मौसी गुलबास
 कुंअरि उस महल्लेमें रहतीथी जिसमें सरस्वतीका मैकाथा
 उस महल्लेमें तो सरस्वती की लियाकत का शुहराया गुल-
 बास कुंअरि सरस्वतीके हालसे खूब वाकिफ़थी कई मर्तबह
 उसको देखाथा गुलबास कुंअरि अपनीछोटी बहिन सह-
 ताब कुंअरि की मातासे मिलनेको आई संभारका दस्तूरहै
 कि कोई आदमी दुःखसे खाली नहीं और यह बात कुछ पर-
 मेश्वर की तरफ़ से है जो हरतरफ़ से आनन्द डाले आदमी
 परमेश्वरको भूलकरकेभी याद न करे और न अपनी तई पर-
 मेश्वरका दास समझे गुलबास कुंअरि की छोटी बहिन फूल
 कुंवरि को संभार के सब आनन्द प्राप्तथे परन्तु लड़कियों के
 तर्फ़से दुखी रहा करती थी उधर गुलाबकुंवरिव्याह बरात
 होने के पीछे घर आकर बैठी थी इधर सहताब कुंअरि के
 मिजाज की बुनियाद ऐसी बुरीपड़ी थी कि घर में सब से
 बिगाड़या न माताका लिहाज न बहिन का दबाव न पिता
 का डर नौकरहैं सो आप चिल्ला रहेहैं चेरियां हैं सो पनाह
 मांगतीहैं गर्ज कि सहताब कुंअरि सब घरको शिरपर उठाये
 रहती थी गुलबास कुंअरि के आने से चाहे कि बड़ी मौसी

समझ कर सहताव कुंअरि घड़ी दो घड़ी को चुप होकर बैठ जाती क्या चिकिर गुनबामकुंअरि को पालकीसे उतरते देर नहीं ऊँधी कि लगातार दोतीन फर्यादे आईं वसंती रोते ऊँचे आई कि देखिये छोटी साहबजादी ने मेरा नया डुपट्टा कर २ कर डाला लल्ली ने शोर मचाया कि सहताव कुंअरि ने मेरे गलेमें चकत्ता भरलिया मेहदिया बलबलाउठी कि मेरा कान नाच लिया दाई चिह्नाई कि देखिये मेरी लड़की के ऐसे जोर से लकड़ी मारी कि बाजूमें बड़ी पड़ गई रसेई से मियायन ने दुहाई दी कि देखिये पतीलियोंमें सुट्टी भर २ कर राख भोंकर रही है गुनबामकुंअरि ने पुकारा कि सहतावो यहाँ आवो मौसी की बोली पहिचान कर सहतावकुंअरि चली तो आई परंतु मलाम न प्रणाम हाथों में राख पावों में कीचड़ उसी प्रकार दौड़ मौसी से चिमट गई मौसी ने कहा सहतावो तुम बड़ी शोखी करने लगी सहतावकुंअरि ने कहा इसी लल्ली चुड़यल ने फर्याद की होगी यह कह कर मौसी के गोद से निकल लप भपकर लल्ली का शिर नाच खसेट लिया बड़तेरी मौसी ऐं २ करती रही एक न सुनी तब गुनबामकुंअरि अपनी बहिन से बोली कि फूलकुंअरि इस लड़की को परमेश्वर के लिये तो दुरस्त करो यह बेपढ़े दुरस्त नहीं होगी फूलकुंअरि ने कहा मैं महीनों से एक स्त्री की तलाश में हूँ जो पढ़ना लिखना सिखलावे पर नहीं मिलती गुनबामकुंअरि ने कहा कि तुम्हारे सहल्ले में पंडित शंकरदत्त की छोटी बहू लाख स्त्रियों में पढ़ी लिखी एक स्त्री है फूलकुंअरि ने कहा सुभक्तों आज तक खबर नहीं देखी मैं अभी आदमी भेजती हूँ यह कह कर अपने घर की मियायन को बुलाया और पूछा कि कोई पंडित शंकरदत्त इस सहल्ले में रहते हैं बहिन कहती है कि उनकी छोटी बहू बड़त पढ़ी लिखी हैं उनको लिवा लाओ अगर नौकरी करे तो खाना कपड़ा दशरथ ये महीना देने को हम हाजिर है और जब लड़की पढ़ लिख जायगी और अदब लायदा सीख जायगी तो दमाँड़े के अलावा हम उसमें कोई दूसरा काम नहीं देंगे मियायन ने शंकर

दत्त के घरमें आई और अभिकादत्तकी माता से पूछने लगी कि ईश्वरदत्तकी स्त्री तुम्हींही गुलवासा मिश्रायनने कहा है यही हैं आगेवैठों कहांसे आई मिश्रायनने कहा तुम्हारी छोटी बहू कहां हैं अभिकादत्तकी माता ने कहा कोठे पर हैं मिश्रायनने पूछा मैं उनके पास ऊपरजाऊं गुलवासा ने कहा आप अपना पता निश्चय बताइये बहू यहां आजांयगी मिश्रायनने कहा मैं पंडितचयोध्या प्रसाद के घरसे आई हूं अभिकादत्तकी माता ने सबछोटे बड़ोंकी खैरसल्लाहपूछी और मिश्रायनसे कहा बहूसे क्या काम है मिश्रायनने कहा बहू आगे तो कहूं जोकि सरस्वतीके नीचे उतरनेका समयभी आगया था थोड़ी देर पीछे सरस्वती नीचे उतर आई सरस्वतीको मिश्रायन ने देखा और बात चीतकी तो नौकरीकेवाले कहते ऊंचे संकोच किया परन्तु बातोंमें यह कह कि फूलकुं अरि को अपनी छोटी लड़कीका पढ़ाना संजूर है उनकी बहीबहिन गुलवासकुं अरि ने आप का जिकिर किया तो फूलकुं अरि ने सुभक्त को भेजा सरस्वतीने कहा दोनों बीबियोंका सेवेतर्कसे प्रणाम कहना और यह कहना जो कुछ भला बुरा सुभक्तको आता है उसके लिखाने पढ़ाने में किसी प्रकार संकोच नहीं इसवास्ते कि आदमी इसीलिये पढ़ता है कि दूसरेको फायदा पड़ जाय और गुलवासकुं अरि को तो मालूम होगा कि मैं अपनेमैंकेमें कितनी लड़कियों को पढ़ाती थी और मेरा जी बहुत चाहता है कि फूलकुं अरि की लड़कीको पढ़ाऊं परंतु क्या कहूं न तो फूलकुं अरि लड़कीको यहां भेजेंगी और न मेरा माना हो सकता है मिश्रायन ने दर्माहेका तो साफ़ नाम न लिया परन्तु दबी जवानसे कहा कि फूलकुं अरि सब प्रकारके खर्च पातकी जिम्मेदारी भी करनेको मै भूढ़ हूं सरस्वतीने कहा यह उनकी कृपा है और उनकी रियायत पर यही बात शोभित है परन्तु उनके पड़ोसमें हम गरीब भी पड़े हैं परमेश्वर मंगा भूखानही रखता है बेदासोंकी चरीबन कर सेवा करनेको मै हाजिर हूं और दर्माहादार पढ़ानेवाले दरकार हैं तो शहरमें बहुत मिलेंगे इसकी पीछे मिश्रायन ने

सरस्वती का हाल पूछा और जब यह सुना कि यह तहसील-
दार की बेटी है और पंडितशंकरदत्त भी पचास रुपये महीने के
नौकर हैं तो मिश्रायन को बहुत लज्जा हुई नौकरी का इशारा
नाहक किया परन्तु सरस्वती की बातचीत सुनकर मिश्रायन
लड़ू हो गई हरचंद अमीरी घर के कार खाने देखे लड़े थी परन्तु
सरस्वती के साफ और जीठे वचन सुनकर मोहित हो गई और
मन्त्रजिरत की कि बीबी सुभक्त को जाफ़ करना सरस्वती ने कहा
क्यों तुम सुभक्त को कांटों में घसीटती हो पहिले तो नौकरी कुछ
गाली नहीं ऐव नहीं दूसरे अनजान में जो तुमने पूछा क्या डर
है गर्ज मिश्रायन बिदा हुई और घर में आकर कहा कि बीबी
शंकरदत्त की बहू लाख पढ़ी हुई स्त्रियों में एक स्त्री है जिसकी
खुरत देखने से आदमी बन जाय पास बैठे मनुष्यता प्राप्त हो
झांझ पड़ जाने से गुण सीखे और हवा लग जाने से अदब पकड़े
नौकरी करने वाली नहीं तहसीलदार की बेटी है रईम आगरे
के सुखतार की बहू घर में मिश्रायन और टहलुई नौकर हैं
दालान में चांदनी बिछी है सोजनी गाव तकिया लगी है अच्छे
बिबिसे जीवन कर रही हैं मलाउन को नौकरी की क्वापरवाह
है गुलवास कुंवरि बोली सच है फूलकुंवरि तुमने मिश्रायन को
भेजा तो था परन्तु सुभक्त को भरोसा न था कि वे नौकरी करेंगी
मिश्रायन ने कहा परन्तु वे तो ऐसी अच्छी आदमी हैं कि सेतही
पढ़ाने से रांची हैं फूलकुंवरि ने पूछा कियहां आकर पढ़ायेगी
मिश्रायन ने कहा भला जो नौकरी की आसन नहीं रखता वह यहां
क्यों आने लगा फूलकुंवरि ने कहा फिर लड़की वहां जाया
करेगी गुलवास कुंवरि ने कहा इसमें क्या डर है दोऊदम पर तो
घर है और शंकरदत्त को क्या तुमने ऐसा बेइज्जत समझा है
हमारे भाई के ससुरे के चचेरे भाइयों से हैं फूलकुंवरि ने कहा
फिर तो हमारे जात पांत की हैं गुलवास कुंवरि ने कहा तो
परमेश्वर न करे कुछ ऐसीवैसी नहीं पहिले इनका काम खूब
बना हुआ था जबसे रईस बिगड़ा बिचारे गरीब हो गये फिर
भी दो एक आदमी सदा घर में नौकर रहते हैं फूलकुंवरि ने

कहा अच्छा सहतावकुंवरि वही चली जायाकरेगी अगले दिन गुलवास कुंवरि और फूलकुंवरि दोनों बहिन सहताव-कुंवरि को लेकर सरस्वती के घर आईं गोविंद सरस्वती के यहां गरीबी सामान था परंतु उसके इतिजास और बन्दोबस्त के ठंगसे उन दो स्त्रियों का वह आदरभाव हुआ कि सब प्रकार की वस्तु बैठे २ प्राप्त हो गईं दो चार प्रकारका इतर, चौबड़ा, इलाइची, चिकनी डली, बात की बात में सब आगया अच्छे २ मजे की गिलौरियां तैयार हो गईं दोनों बहिनों ने खाईं और सरस्वती से कहा कि छपा करके इस लड़की को मनसे पढ़ा दीजिये सरस्वती ने कहा पहिले तो आप सुभक्त का क्या आता है परंतु दो चार अच्छे बड़ों की छपासे आते हैं उसके बताने से अपनी शक्ति भर उठा न रखेंगी चलते जये फूलकुंवरि एक अशर्फी सरस्वती को देने लगी सरस्वती ने कहा कि इसकी कुछ जरूरत नहीं भला यह क्यों कर हो सक्ता है कि मैं पढ़वाई आपसे लूं फूलकुंवरि ने कहा भगवान २ करो पढ़वाई देने के वास्ते हमारा क्या सुंह है आज सहतावकुंवरि विद्या आ-रम्भ करेगी इसकी मिठाई जगाकर बच्चों को बांट दीजिये सर-स्वती ने अशर्फी फेर दी कहा एक अशर्फी की मिठाई क्या होगी सर आधसे मिठाई बांटने को बजत है यह कह कर गुलवासा मिथायन की तर्फ इशारा किया वह कोठरी में से एक पाली भरकर बताशे निकाल लाई सरस्वती ने गणेश का पूजन करके पाड़े २ बताशा गुलवास कुंवरि और फूलकुंवरि को दिये और फिर भरी हुई पाली गुलवासा को चटा दी कि बच्चों को बांट दो फूलकुंवरि ने कहा अच्छा तुमने सुभक्त का शर्मिन्दा किया सरस्वती ने कहा कि हम बिचारी गरीब किस लाय-क हैं परन्तु यहां जो कुछ है वह भी आप ही का है अलवत्ता मेरा देना वही है कि सहताव कुंवरि को पढ़ा दूं भगवान वह दिन करे कि मैं आप से सुख हूँ गर्ज लक्ष्मोपत्तो की बातें हो ऊध्रकर गुलवासकुंवरि और फूलकुंवरि चली गई और सहताव कुंवरि को सरस्वती को सौंप गईं सरस्वती ने जिस

ढंगपर महताबकुं अरि को पट्टाया जो वह विस्तार पूर्वक लिखा जाय तो एक अलग पोथी बनजाय परंतु संक्षेप हाल इस जगह लिखा जाता है कि महताबकुं अरि के बैठते ही महल्ले का महल्ला टूट पड़ा जिसको देखो अपनी लड़की को लिये चला आता है परंतु सरस्वती ने भले आदमी की लड़कियों को चुन लिया और कमीनों की लड़कियों को इस वहाने से टाल दिया कि मैं आय दिन अपनी माता के घर जाती रहती हूं पढ़ना पढ़ाना जब तक जमकर न हो बेफायदा है फिर भी बीस लड़कियां पढ़ने बैठी थीं परंतु सरस्वती को किसी लड़की से लेने लिखाने की सौगन्ध थी एक दो कपिया इनका लड़कियों पर खर्च हो जाता था सबेरे से दोपहर तक पढ़ना होता था और फिर भोजन के लिये चार घड़ी की छुट्टी इसके पीछे लिखना छः घड़ी दिन रहने से सीना सीने पिरोने का काम गुंजायी था इस कारण कि न सिर्फ सीना सिखलाया जाता था बल्कि अनेक प्रकार की जाली काढ़ी जाती थी अनेक भांति की सिलाई होती थी मसाला बताना और टांकना जाली काढ़ना पहले तो सरस्वती को सब सामग्री के इकट्ठा करने में दशरूपया खर्च हुआ परन्तु फिर तो उसी काम से बचत होने लगी जो काम लड़कियां बनाती गुलवासा उसको चुपके से बाजार में बेच लाती इस प्रकार धीरे २ पाठशाला की एक रक्कम जमा हो गई जो लड़की गरीबकं गाल होती उसी रक्कम से उसके बख्त बनाये जाते पुस्तकें मोल ले दी जातीं लड़कियों के पानी पिलाने और पंखा झूलने के लिये एक खुवासी नौकर थी और मदरसे की रक्कम से उसकी तलब मिलती थी लड़कियों का यह हाल था कि और स्त्री पढ़ाने वाली के पास लड़कियों का जाते ऊये प्राण निकलता था परन्तु सरस्वती की विद्यार्थिनी उस पर मोहित थीं अभी बह सेा के नहीं उठी आपसे आप आने शुरू हुई और पहर रात गये तक जम अरहती थीं और घरको बे मन जाती थीं इस कारण कि सरस्वती सबके साथ मन से प्यार करती थीं और पढ़ाने का क्वायदह ऐसा अच्छा रखा था कि बातों में

तालीम होती थी न यह कि सबरेसे रें रें का चर्खा जला तो
 दिन छिपेत कब नही होता जिस प्रकार सरस्वती को उसको
 बापने पढ़ाया था उसी प्रकार सरस्वती अपने निद्यार्थिनियों
 को पढ़ाती थी पस ये लड़कियां प्रागिर्द की प्रागिर्द और स-
 हेली की सहेली थीं अब किसी लड़की का व्याहृज्जा बहरे की
 रक्कमसे उसको थोड़ा बजत गहना दिया जाता था अगर सर-
 स्वती अपने पाठशाला को बढ़ाना चाहती तो सारे ग्राहर की
 लड़कियों के पाठशाला उजाड़ हो जाते सैकड़ों जियां अपने
 लड़कियों के हेतु चिरौरी और बिनती करती थीं और आप लड़-
 कियों दौड़ २ आती थीं इस कारण कि और पाठशालों में दिन
 भर की कौद पढ़ानेवालों की रुखी पढ़ना कम मार खाना और
 काम करना बजत दिन भर पढ़े तो सिर्फ दो अक्षर सबरे से
 संध्या तक मामूली मार और जहां चुपकी और पढ़ानेवाली
 की नजर पड़ गई आकृत आई और काम को पूछो तो तड़के
 आने के साथ घर में भाड़ दी बिछौना तहकिये और चार २
 पांचने मिलकर कक्ष्य भरी बोझल चारपाइयां उठाईं और
 फिर उस जगह बिछौना बिछाकर पढ़ने बैठीं जिस समय सुंह
 से आवाज निकली पढ़ानेवाली औरतने बनेठी फिकनी चारण
 कर दी और दो चार जो कि सू अच्छे का सुंह देखकर उठी थीं
 कामधंधे में लग गईं किसी ने पढ़ानेवाली औरत का लड़का
 गोद में लिया बोझ के मारे कूला टूटा जाता है परंतु मार के
 धरसे गर्दन पर बलासवार है और समय टालती फिरती हैं
 बैठी ऊई लड़कियों की आवाज कान में चली आती है दित है कि
 अन्दर ही अन्दर सहमा जाता है मार के आवाज से यह सुभीत
 भली मालूम होती है किसी ने रात के जूठे वर्तन माजने शुरू अ-
 किये कि घट्टे पड़ पड़ गये हैं और गन्धे रह रह जाते हैं परंतु
 छोटी बहिन पिटरही है और चिल्ला रही है कि अच्छी वो मैं
 सर गई अच्छी वो परमेश्वर के लिये छोड़ दो हायरी २ जय अम्मा
 जय वावा अच्छी मैं तुम पर वारी गई और दीदी है कि भांय
 भांय जल्दी २ वर्तन माजरही हैं इन कामों से फुरसत ऊई तो

सबाला पीसने आटा गूंधने आग सुलागाने का समय आया
फिर दो पहर को पंडितायन हैं कि सो रहीं हैं और सामूल
वही पंखाफूल रही हैं और दिलमें दुआमांग रहीं हैं कि पर-
मेश्वर ऐसीसेयें कि फिर नउठें गर्ज और मदरसोंमें यह सुती-
बत रहती है सरस्वती के यहां नजार न धाड़वड़ा डर यह था
कि सुनो तुम अपना सबक याद नहीं करती तो तुम्हारे सबब
से हमारी पाठशाले का नाम बद होता है मैं तुम्हारी माता को
बुलाकर कह दूंगी बी तुम्हारी लड़की यहां नहीं पढ़ती तुम
किसी दूसरी पाठशाले में पढ़वाओ इतना कहना था कि ल-
ड़की का दसनिकला फिर समझ है कि जवान पर याद है या
जिसने सबक याद नहीं किया उस से कहा कि आज तुमने
सबक याद नहीं किया और लड़कियां दोपहर के बाद सियेंगी
और तुम पढ़ना यह कहना था कि उसने जल्दी सबक याद कर
लिया न यहां पाठशाला में भाडू देनी है न बिछौने उठाने है
न चारपाइयां डोनी हैं न बर्तन माजने न किसी की सेवा करनी
है बल्कि इन लड़कियों पर एक टहलुई नौकर है इस पाठशाले
में पढ़ना लिखना सीना तीन काम लड़कियों को सिखलाये
जाते हैं इन्द्रकुं अरि एक स्त्री इस सहली में रहती थी चांदकुं अरि
उसकी बेटो कोई दशवर्ष की होगी उस चांदकुं अरि को पढ़ने
और लिखने और सीने पियेने का बड़ा शौक था इन्द्रकुं अरि यह
चाहती कि चांदकुं अरि सारे घर में भाडू देली पेपोते बर्तन माज
ऐसे कार्यों में चांदकुं अरि का जीवन लगता माता के कहने सुनने
से करती देती मगर वे मनसे इन्द्रकुं अरि जो एक दिन चांद
कुं अरि से नाराज हुई तो सायले जाकर सरस्वती की पाठशाला
में बैठा आई और कहा बीबी यह लड़की बड़ी निकम्बी है जिस
कार्य को कहती हूं ठकासा जवाब दे देती है इसको ऐसा
अदब सिखावो कि घर के कामकाज पर इसका चीलगे सरस्वती ने
जो देखा तो चांदकुं अरि को अपने ठकका पाया उधर चांद-
कुं अरि को पढ़ाने वाली अपनी मर्जी के अनुसार मिलीनूर के
तड़के आती तो दो पहर को भोजन करने जाती भोजन खाया

और भागी पानी पाठशाला में आकर पीती और तीसरे पहर की आईर कहीं चार घड़ी रात गये जाती कभीर इन्द्रकुंअर इसकी सुध लेने पाठशाला में आती तो कई बार उसको लड़कियों के साथ गुड़ियां खेलते देखा दो चार बार हिंडकुलिया पकाते एक दिन चार घड़ी रात गई होगी चांदकुंअरि को जाने में देर हुई इन्द्रकुंअरि उसको लेने आई तो क्या देखती है कि यशुना कहानियां कह रही है और पाठशाला की सब लड़कियां आस पास बैठी और सरस्वती भी लड़कियों में बैठी हुई कहानियां सुन रही है तब तो इन्द्रकुंअरि का जो जलकर खाक हो गया और बोली बाह बीबी अच्छा तुमने लड़कियों को नाश कर रक्खा है जब कभी मैं चांदकुंअरि को देखने आई कभी इसको मैंने पढ़ते न पाया पाठशाला क्या है यह तो अच्छा खेल घर है तभी तो लड़कियां दौड़र आती हैं सरस्वती ने कहा कि बीबी जो तुम्हारी मर्जी के अनुसार तुम्हारी लड़की की तालीम नहीं होती तो तुमको अखुतियार है अपनी लड़की को उठाले जाओ परंतु पाठशाला में वे अर्थ का दोष मत लगाओ भला मैं तुमसे पूछती हों कि चांदकुंअरि ने बाईजी की पाठशाला में कितने दिन पढ़ा इन्द्रकुंअरि ने कहा तीन महीने सरस्वती ने पूछा बाईजी के यहां चांदकुंअरि ने क्या पढ़ा इन्द्रकुंअरि ने कहा अक्षर अध्यास सरस्वती ने कहा तीन महीने में अक्षर अध्यास पढ़ा और यहां चार महीने से तुम्हारी लड़की पढ़ती है चौबाई भाग विष्णु सहस्र नाम और दो पुस्तक नागरी यहां पढ़ चुकी है बाईजी की पाठशाला से कितना अधिक होता है और जब चांदकुंअरि यहां आई थी तो काली तकौर तक इसको खींचनी नहीं आती थी अब नाम और थोड़ी बज्ज बचिंद्री लिख लेती है कि साय बसुजिव अक्षर भी बुरे नहीं होते बीम तक पूरी गिनती नहीं जानती थी अब पन्द्रहका पहाड़ा याद करती है सीना कुकुर नहीं आता था अब इसके हाथ का बखिया देखो लाइयो चांदकुंअरि वह करती जिसमें तूने बखिया किया है वेग अपनी माता को दिखला चांदकुंअरि ने जिसमें बखिया

किया था और टोपियां जिसमें चमेली का जाल किया था और कामदानी आदि जो काढी थीं दौड़ीर उठालाई और अपनी माताको दिखाया इन्द्रकुंअरि एक बातके दशर उत्तर पाकर हक्का बक्कासी रह गई सरस्वतीने कहा तो बी कुछ न्यावभी है चार महीनेमें तुम्हारी लड़की और क्या सीखलेगी इन्द्रकुंअरि ऐसी खिसियानी हुई कि बड़ों पानी पड़ गया अब सरस्वती के सामने आख नहीं भिलासक्ती थी इन्द्रकुंअरि के आजाने से यमुना की कहानी तो रह गई और सब लड़कियां इसके ओर घूरकर देखने लगीं इन्द्रकुंअरि ने कहा बीबी सुभको इसकी क्या खबर थी चांदकुंअरि दिनभर तो यहां रहती है रातको ऐसी देरकर जाती है कि भोजन खाया और सोरही सुभको इससे पूछना गालना कभी पड़ानहीं दो चार फेरजो मैं इधर को आनिकली तो कभी गुड़िया खेलते पाया कभी हिंडकु लिया पकाते कभी कहानियां सुनते इससे सुभको ख्याल हुआ कि यह अपना समय खेल कूदमें खेती है अब तो मेरे सुंह से एक बात निकल गई जमाकीजिये सरस्वतीने कहा तुम्हारा भंदेह भी अलुचित नहीं था परन्तु मैं इन्हीं खेलकी बातों में इनको कामकी बातें सिखाती हूं हिंडकुलियोंमें लड़कियां अनेक प्रकारके भोजन बनानेकी युक्ति सीखती हैं मसाले का अन्दाज नमक की अटकल खाद की पहिचान इनको आती है क्यों चांदकुंअरि परसों तुम लड़कियोंने मिलाकर कितना जर्दी पकाया था उसकी युक्ति और सबहिमाब किताब है तो हमको सुना दो चांदकुंअरिने कहा हिमाब तो यमुना ने अपनी पुस्तकमें लिखरक्खा है परन्तु युक्ति तो आपकी आज्ञा नुसार मैंने खूब ध्यान लगाकर देखली है और अच्छे प्रकार मेरे समक्ष में आ गई है सेर भर चावल से पहिले उनको एक तमले पानीमें भिगा दिया घेलेकी हरसिंधारकी डंडियां मंगवाईं तीन पैसे भर मिली थीं उनको कोई डेढ़सेर पानीमें जोष किया जब उबाल आ गया और रंगत कट गई तो छानकर अरक में चावल भिगा दिया चावल जब अधकचड़े

होगये और एक कनी रह गई तो चावलोंको कपड़े पर फैला
 दिया कि पानी भर निकल जाय फिर आध पाव धी डेगचीमें
 लौंगों का बघार देकर कड़ कड़ाया और चावल छोड़ दिये
 ऊपरसे चावलोंके बराबर झकुर डाल दी और अट कलसे इतना
 पानी डाल दिया कि चावलों की एक कनी जो रह गई थी
 गल जाय फिर एक छटांक कि क्षिप्त धीमें कड़ कड़ा जब फूल गई
 चावलों में छोड़ दी और ऊपर तले अंगारे रखकर दम दे
 दिया सरस्वतीने चांदकुंअरिसे कहा युक्ति तो दुखस्त है परन्तु
 चावलों को जो मैंने देखा था तो बैठ गये थे मालूम होता है कि
 तुमने कपड़े पर फैलाकर ठंढे पानीसे धुनका धोया नहीं था
 फिर सरस्वती इन्द्रकुंअरि की ओर देखकर बोली कि क्यों जी
 जर्दा तो तुम्हारी लड़की ने ठीक प्रकार काया यह सब हिडकुलिया का
 कारण है फिर यमुनासे कहा तुम अपने जर्दे का हिसाब तो
 सुनाओ यमुनाजी हिसाब की बही उठालाई कहा भाभीजान
 छःसेरी चानल सेर भर पौने तीन आने के और एक पैसे की हर
 सिंघार की डंडियाँ और लौंगें दो सेर का धी है पौन पाव मंगाया
 आध पाव बघार तेवक्त डाला और छटांक भर कि क्षिप्त कड़-
 कड़ाकर दम दे तेवक्त डेढ़ आने का धी ऊँचा और चौसेरी झकुर
 सेर भर चार आने की एक पैसे की कि क्षिप्त कुल पौने ग्यारह
 आने पैसे खर्च ऊँचे दण्ड कियों का साकाया पौने दो आने तो
 मेरे थे और एक आना और लड़कियों का सरस्वती ने कहा
 तुमने हिसाब में धोखा खाया यमुना सोची तो कहा भाभीजी
 चावलों में कौड़ियां बचीं बनिये ने हलस कीं अय हय डंडियां
 और लौंगें उसमें आजातीं तो एक पैसे बचता गुल बासा बिआ-
 यन जा तू बनिये से कौड़ियां ले आ सरस्वती ने कहा अय
 हय क्या करती हो कौड़ियों का सुआ मिला परसों की बात
 अब कुछ न कह तुम्हारे भूल की सजा है अब सरस्वती मह-
 ताव कुंअरि से बोली जर्दे की युक्ति और लागत तो मालूम
 ऊई भला सेर भर जर्दा तुम सबने क्या किया महताव कुंअरि
 ने जवाब दिया मझोले दो प्याले भरकर परमेश्वर के नाम दे

दिये फिर छः तश्तरीयां भरी गईं दशलड़कियों में से दोर ने
 एकर तश्तरी ली और ऊठी तश्तरी में मैं अकेली थी सरस्वती
 ने पूछा क्या तुमने दोहरा भागलिया महतावकुंअरि बोली
 नहीं मेरी तश्तरी आधी थी सबसे पूछलीजिये सरस्वतीने कहा
 फिर तुम बिरादरी से अलग क्यों रही महतावकुंअरि तो चुप
 ऊई चांदकुंअरि ने कहा इनको सबके साथ खाते धिन आती
 है महतावकुंअरिने कहा धिनकी बात नहीं है मैं सबसे पीछे
 आई इससे अकेली रह गई आप यसुना से पूछ लीजिये चांद
 कुंअरि ने कहा तुम तो अभी थोड़ी देर ऊई बेरा जूठा पानी
 पीने पर लड़चुकी है महतावकुंअरि ने कहा मैं लड़ी थी या
 इतनी बात कही थी कि जितनी प्यास ऊआकरै उतना पानी
 लिया करो गिनास मैं जूठा पानी छोड़ देना ऐब की बात है
 फिर सरस्वती ने यसुना से पूछा कि वह पुस्तक जिसमें भो
 जन बनाने की युक्तें लिखी ऊई हैं और जो तुमको मैंने दी है
 उसमें की सब भोजन बनाने की युक्तें तुम देख चुकी या अभी
 नहीं यसुना ने थोड़ी देर शोच कर कहा मैं अपनी समझ में
 वह सब भोजन बनवा चुकी हों वल्कि कईर बेर नौबत पक-
 वाने की आचुकी है और जितनी बड़ीर लड़कियां हैं सामूली
 खानों की युक्ति सबको मालूम है इसके सिवाय पुलाव जर्दा
 सुतनजन समोसे मीठे सलोने कसमी बड़े दहीबड़े सुहाल
 सेव घीकी तलीदाल मोठ चौकड़ियां पापड़ बूदानी तसमई
 हिलवा साहन पपड़ी नर्म अन्दसे की गोलियां बगैरह सब
 चीजें बज्जत बेर पक चुकी हैं और सब लड़कियों ने पकते
 देखी हैं वल्कि अपने हाथों पकाई हैं और महतावकुंअरिका
 तो चटनी और मुरब्बा से तो बड़ा शौक है ये चीजें जैसी
 वह बनाती है वैसा और लड़कियां कम जानती हैं इसके
 पीछे सरस्वती ने इंदरकुंअरि से कहा कि बीबी अब तुमको
 यहां के हिंडकुलियों का फायदा तो मालूम होगया होगा
 रात ज्यादाह गई बाज लड़कियों के घर दूर हैं अगर कल
 आओ तो गुडियों की सैर भी तुमको दिखायें और शाम तक

रहो तो कहानियां भी सुनवाये सब लोग विदा ज्ञये अगले दिन जो इन्दरकुंअरि आई तो लड़कियों के कसीदे और लड़कियों के विनेज्जये गोटे लड़कियों के मोड़े ज्ञये गुखुल लड़कियों की बनाई ज्ञई टोपियां और यमुना लड़कियों के व्योत किये ज्ञये और सिये ज्ञये मर्दाने जनाने कपड़े सरस्वतीने सब दिखाये जिसके देखने से इन्दरकुंअरि को बड़ा अचंभा हुआ इसके पीछे लड़कियों के गुड़ियों के घर दिखाये इन घरों में गृहस्थी का सब समान फर्श फरूष गाउतकिया उगातदान चिलमची आफतावा पिटारी पर्दा चिलमन छत गीरी पंखा मसेहरी पलंग हर प्रकार के बर्तन हर प्रकार का सामान आरा यश अपने ठिकाने से रक्खा हुआ था गुड़ियां ऐसी सजी ज्ञई थीं कि आन मान जैसे व्याह के घर में पाऊन जमा है जब गुड़ियों के घरों को देख चुकी तो सरस्वतीने इन्दरकुंअरि से कहा कि लड़कियों के सब खेलों में सुभको गुड़ियों का खेल बज्जत प्रिय है इसके वसीले से लड़कियां सीना पिरोना कपड़ों की व्योत और गृहस्थी का बन्दोबस्त हर त्योहारों के दस्तूर छठी खीर चढ़ाई दूध चढ़ाई व्याह बरात वगैरह की रीति रस्मों से वक प्रियत हासिल करती हैं तुम्हारी लड़की अभी घोड़े दिनों से आई है जो लड़कियां मेरी पाठशाला में बज्जत दिनों से पढ़ी हैं जैसे मेरी नन्द यमुना और महताबकुंअरि हैं मैं सौ गन्धवा कर कहती हूँ जो इनको इसी समय किसी बड़े भरेपुरे घर का बन्दोबस्त सौ प्र दिया जाय तो परमेश्वर रखे ऐसा करेगी जैसे कोई बड़ी सयानी पढ़ी लिखी स्त्री करती है मैं तो पढ़ने पर ताकीद नहीं करती बल्कि इनको संसार के काम बतानी हूँ जो घोड़े दिन पीछे इनके शिर पर पड़ेगा यह कह कर सरस्वतीने महताबकुंअरि को बुलाया और कहा कि बुआ तुम्हारी गुड़ियों का घर तो अच्छे प्रकार आरास्ता है पर एक कसर है कि तुम्हारी गुड़ियों के पास रंगीन जोड़े नहीं मालूम होते शायद तुमको रंग नानहीं आता महताबकुंअरिने कहा रंग तो यमुनाने सुभको बज्जत सखादिये हैं योही नहीं रंगे सरस्वती ने कहा भला बतओ

सहीतो सहताव कुं अरि बोली बसीत के रंग सुख नारजी,
 गुलनार, गुले, गफतालू, सईई, धानी जदा और जाड़े के गेंदई
 जोयिय, उन्नाची, काही, तेलिया, काकरेची, सियाह, नीला
 गुलाबी, जाफरानी, काकई, करंजी, और गमी के पियाजी,
 आबी, चम्पई, कपासी बदासी, काफूरी, दूधिया, खुशखाभी,
 फालसई हिंदरिया, रंगतो और बज्जत हैं मगर मैंने वही बयान
 किये जो अकसर पहने जाते हैं सरस्वतीने पूछा रंगों के नाम तो
 तुमने बज्जत से गिनवा दिये भला यह तो बताओ यह सब रंग तुम
 को रंगने आते हैं सहताव कुं अरि ने कहा मैंने उन्ही रंगों का
 नाम लिया जो सुंझ के रंगने आते हैं सरस्वतीने कहा भला बता-
 ओ सईई क्यों कर रंगते हैं सहताव कुं अरि ने कहा काही कंद
 अच्छे गहरे रंग की आध गज संग वाइये और पानी खुब जोश कर के
 फिटकिरी डाल दे ऊपर से कंद का टुकड़ा डाल कर हिला दिया
 फिटकिरी की तासीर से कंद का रंग कट जायगा पस उनमें कपड़ा
 रंग लिया सरस्वतीने कहा भला और जो कंद न मिले सह-
 ताव कुं अरि ने कहा तो टेसू के फूलों को जोश कर के फिटकिरी
 पीस कर मिला दी सईई हो जायगी परंतु हलका कपासी अच्छा
 सईई वे कंद के रंग नही जाता अगर कंद की जगह बानात का
 रंग काटा जाय तो बज्जत अच्छा रंग आता है परंतु इन दिनों
 मजीटन ऐसा चीला है कि सब रंगों को मात किया है कपड़े तो
 कपड़े सिंठाई खाने का गोटा मजीटन में बज्जत अच्छा रंग
 जाता है बड़ी वहिन ने मजीटन के रंग का जर्दा बनाया था
 जाफरान से अच्छा रंग था सरस्वतीने घबड़ा कर पूछा सह-
 ताव कुं अरि कहीं तुमने तो मजीटन के रंगे जूये चावल नहीं
 खाये सहताव कुं अरि ने कहा मैंने खाये तो नहीं परंतु खाने
 से क्या ककबुरी बात है सरस्वतीने कहा अयहय मजीटन में
 संखिया पड़ती है खबरदार कोई बीज मजीटन की रंगी जई
 जावान पर मत रखना सहताव कुं अरि ने कहा मैंने तो मजीटन का
 रंग जूआ गोटा बज्जत खाया है सरस्वतीने कहा क्या जूआ
 थोड़े मजीटन में तो बज्जत रंग जाता है इस कारण से

तुमको कुछ बुझसान नहीं किया परंतु याद रखो कि इसमें
 जहर है महताबकुं अरि ने कहा मजीठन की रंगीऊ ई मिठाई
 लोग महीनों खाते हैं सरस्वती ने उत्तर दिया बहुत बुरा करते
 हैं जहर जब मियाद पर पड़ च जायगा जहर असर करेगा
 शाम हुई तो लड़कियां अपने कसीदे और पुस्तकें रखरखा मा-
 मल वमन वि खेलने और खाने और पहेलियां कहने सुनने को
 आवैठी सरस्वती ने इंदरकुं अरि से कहा कि हां चुडु चिडियां
 की कहानियां नहीं होती हैं कहानियों की एक बहुत अच्छी
 पुस्तक है जिसमें बड़ी अच्छी कहानियां हैं हर एक कहानी
 से एक नसीहत की बात निकाली है इस पुस्तक की जवान
 भी बहुत सीठी है अब यह लड़कियां सभी पुस्तक की कहा-
 नियों से जी बहलेंगी कहानियां कहने से इनकी बात चीत
 साफ होती है मतलब की बात की खूब सूरती से बयान करने की
 ताकत बढ़ती जाती है जब कभी सुझको सावकाश होता है
 तो मैं कहानियों के बीच में इनसे उलझती जाती हूं और जैसी
 इनकी समझ है मेरी बात का जवाब देती हैं अगर नादुरुस्त
 होता है मैं बता देती हूं पहेलियों के बूझने से इनकी बुद्धि बढ़
 ती है और इनके जिहन को तेजी होती है तुम इनमें बैठकर
 सैर देखो सुझको आज अलपक अरि की माता ने बुला भेजा
 है उनके बच्चे का जी अच्छा नहीं है बहुत २ विरौरी बिनती
 कहला भेजी है न जाऊंगी तो बुरा मानेगी और आप मेरा जी
 भी नहीं मानता इंदरकुं अरि बोली हां मैंने भी सुना है कि
 उनके लड़के ने कई दिन से दूध नहीं पिया अब हय परमेश्वर
 करे जीतारहे दशवर्ष पीछे भगवान ने वह बच्चा दिया है इस
 के पीछे इंदरकुं अरि ने कहा बीबी तुमको उन्होंने इलाज के
 हेतु बुलाया होगा सरस्वती ने कहा इलाज बलाज तो सुझको
 कुछ भी नहीं आता एकवार पहिले इस लड़के को प्यास हो
 गई थी मैंने जहर सुहरा, बंसलोचन, गुलाब काजीरा, छोटी
 इलायची, जीरे की गरी, कबाबचीनी, खुरमा, इस प्रकार चार
 पांच दवाइयां बता दी थीं परमेश्वर की कृपा से लड़का अच्छा हो

गया इन्द्रकुंअरिने कहा तुमबीबी सब गुणोंमें पूरी है सर-
स्वती बोली इसमें गुणकी क्या बात है हमारे मैकेमें दवादर्शन
होती रहती है जबमें छोटी थी जो दवा आती महीं उसको छानती
बनाती और ध्यान रखती इस प्रकार पर सुनी सुनाई दो चार
दवायाद हैं जिसको जखूरत जड़ बतादी और बच्चोंका इलाज
तो त्रियां कर करालेती हैं जब ऐसी सुशक्ति आ पड़ती है
तब वैद डाक्टर के पास ले जाती हैं इन्द्रकुंअरि ने कहा
बीबी तुमने ऊपा करिके सुभक्तो अपनी पाठशाला का बन्दो-
बस्त तो दिखाया परन्तु परमेश्वर के लिये तनिक क्षण भर
ठहर जाओ तो मैं देखूँ कि लड़कियां किस प्रकार कहा-
नियां कहती हैं और कहानी में तुम किस प्रकार सिखाती
है सरस्वती ने कहा सुभक्तो देर होती है पर खैर तुम्हारी
खातिर है अच्छा लड़कियो आज किसकी बारी है यमुना
ने कहा बारी तो इन्द्र रानी की है परन्तु चांदकुंअरि से
कह लाइये सरस्वती ने कहा अच्छा चांदकुंअरि कोई छोटी
सी कहानी कहो चांदकुंअरि ने कहानी आरम्भ की एक
बादशाह था सरस्वती ने पूछा बादशाह किसीको कहते हैं
चांदकुंअरि बोली जैसे लखनऊ में वाजिदअली शाह थे सर-
स्वती, यह तुमने ऐसी बात कही जो लखनऊ और वाजिद
अली शाह को जानता हो वही समझे चांदकुंअरि ने कहा
बादशाह हाकिम को कहते हैं सरस्वती, तो कोतवाल और
धानेदार भी बादशाह हैं चांदकुंअरि, नहीं कोतवाल धाने-
दार तो बादशाह नहीं हैं ये तो बादशाह के नौकर हैं सर-
स्वती, क्या कोतवाल हाकिम नहीं है चांदकुंअरि हाकिम तो
है परन्तु बादशाह सब से बड़ा हाकिम होता है और सब
पर ज़ब्त चलाता है सरस्वती हमारा बादशाह कौन है
चांदकुंअरि जब से अंगरेजों ने वाजिदअली शाह से तख्त
की नलियां और वाजिदअली शाह कलकत्ते चले गये तब से
तो कोई बादशाह नहीं यह सुन कर सब लड़कियां हंस
पड़ीं सरस्वती ने कहा चांदकुंअरि तुम बड़ी ना समझ हो

तुमने आप कहा जो सब से बड़ा हाकिम हो और सब पर हुक्म चलावे वही बादशाह होता है और यह भी जानती हो कि बाजिदअली शाह से अंगरेजों ने तरस लीन लिया तो अंगरेज बादशाह हुये या न हुये चांदकुंअरि, हां हुये तो सही सरस्वती, अच्छा अब बताओ हमारा कौन बादशाह है चांदकुंअरि, अंगरेज, सरस्वती, क्या अंगरेज किसी एक पुरुष का नाम है चांदकुंअरि, नहीं सैकड़ों हजारों अंगरेज हैं सरस्वती, क्या सब अंगरेज बादशाह हैं चांदकुंअरि, और क्या यह सुनकर फिर लड़कियां हंसी सरस्वती ने महताबकुंअरि की ओर देखकर कहा कि तुम जब दो महताबकुंअरि ने कहा हमारा बादशाह मलका बिकोरिया है सरस्वती ने कहा पुरुष हैं या स्त्री महताबकुंअरि, स्त्री हैं सरस्वती, कहां रहती हैं महताबकुंअरि, लंदन में सरस्वती, लंदन कहां है महताबकुंअरि, अंगरेजों की बलायत में एक बहुत बड़ा शहर है सरस्वती, कितनी दूर होगा महताबकुंअरि, मैंने एक पुस्तक में पांच हजार कोस लिखा देखा है सरस्वती, कोस कितना लम्बा होता है महताबकुंअरि, कन्धारी बाजार से गुसाईं गंज को सात कोस कहते हैं यह सुनकर यमुना हंसी और कहा १७६० सत्तरह सौ साठ गज का मील और दो मील का कोस होता है सरस्वती ने यमुना से पूछा कि पारसाल जो मैं नीम पारण्य के मेला में गई थीं तुम भी मेरे साथ गई थीं तुमने भी देखा था घोड़े २ दूर सड़क पर पत्थर गढ़े थे और पत्थरों पर कुछ लिखा हुआ था वह पत्थर कैसे थे यमुना, मैंने अटकल से यही समझाया कि कोसों के पत्थर हैं परंतु गाड़ी ऐसी तेज जाती थी कि पत्थरों पर निगाह नहीं जमती थी मैं खूब नही पढ़ सकी कि उन पर क्या लिखा था सरस्वती, वह कोसों के पत्थर नहीं थे मीलों के पत्थर थे चाहे कोस का मील होता है और हर मील पर पत्थर गड़ा है उसमें यही लिखा होता है कि यहां से लखनऊ इतने मील है और नीम पार इतने मील है सरस्वती ने फिर महताबकुंअरि की ओर

हे शास्त्र और पूछा कि हां लन्दन किसदिशा में है महताबकुं अरि,
 उत्तर में है सरस्वती, वह सुल्का गर्म है या ठंडा महताबकुं-
 अरि, यह तो मैं नहीं जानती यशुना, बड़ा ठंडा है जितना
 उत्तरको जाओ गर्मी कम है और जितना दक्षिण को चलो
 गर्मी अधिक होती जाती है इन्दरकुं अरि, अच्छी बीबी बाद
 शाह है सरस्वती, इसमें आश्चर्य की क्या बात है इन्दरकुं अरि,
 आश्चर्य की बात क्यों नहीं है स्त्री जात क्या करती होगी सर-
 स्वती, जैसे पुरुष राज्य करते हैं वैसेही स्त्री करती हैं सुल्का
 का बन्दोबस्त रैयत का पालना इन्दरकुं अरि, स्त्री तो क्या
 करती होगी करते सब कुछ अंगरेजों होंगे बराबर नाम स्त्रीको
 बादशाह बना रक्खा होगा सरस्वती, वह सब अंगरेज मलि-
 का के नौकर हैं हर एक का काम अलग है हर एक का
 अधिकार जुदा है अपनेर काम पर सब सुस्तैद रहते हैं और
 आखिर जब पुरुष बादशाह होते हैं तबभी मंत्री नौकर
 चाकर सब काम किया करते हैं इन्दरकुं अरि, मेरा जी तो
 अंगीकार नहीं करता कि स्त्री जात राज्य कर सके सरस्वती,
 भूपाल की बेगम का नाम तुमने सुना है इन्दरकुं अरि, सुना
 क्यों नहीं खुद मेरे ससुरे भूपाल ताल में नौकर हैं सरस्वती,
 इस प्रकार समझलो भूपाल घोड़ासा सुल्का है और मलिका
 बिक्होरिया के पास बड़ा राज्य है जिस प्रकार भूपाल की
 बेगम अपने छोटे राज्य का बन्दोबस्त करती है मलिका बि-
 क्होरिया अपने बड़े राज्य का बन्दोबस्त करती है भूपाल
 छोटी सरकार है नौकर चाकर काम हैं घोड़ी तलब पाते हैं
 मलिका बिक्होरिया की बड़ी सरकार है बड़े कारखाने हैं
 लाखों नौकर तनख्दा हैं भी अधिक हैं इन्दरकुं अरि, अच्छी बी
 मलिका का कोई मियां है सरस्वती, हां मगर मौत पर किसी
 का कुछ बस नहीं चलता चांद को भी परमेश्वर ने दागलगा
 दिया है कई वर्ष ऊँचे मलिका रांड होगई इन्दरकुं अरि
 मलिका के सन्तान हैं सरस्वती हां परमेश्वर रक्खे बेटे पोते,
 मलिका के सन्तान हैं सरस्वती हां परमेश्वर रक्खे बेटे पोते,

तुमने आप कहा जो सब से बड़ा हाकिम हो और सब पर हुक्म चलावे वही बादशाह होता है और यह भी जानती हो कि बानिदअली शाह से अंगरेजों ने तख्त छीन लिया तो अंगरेज बादशाह जूये या न जूये चांदकुंअरि, हां जूये तो सही सरस्वती, अच्छा अब बताओ हमारा कौन बादशाह है चांदकुंअरि, अंगरेज, सरस्वती, क्या अंगरेज किसी एक पुरुष का नाम है चांदकुंअरि, नहीं सैकड़ों हजारों अंगरेज हैं सरस्वती, क्या सब अंगरेज बादशाह हैं चांदकुंअरि, और क्या यह सुनकर फिर लड़कियां हंसीं सरस्वती ने महताबकुंअरि की ओर देखकर कहा कि तुम जबब दो महताबकुंअरि ने कहा हमारा बादशाह मलका बिकोरिया है सरस्वती ने कहा पुरुष हैं या स्त्री महताबकुंअरि, स्त्री हैं सरस्वती, कहां रहती हैं महताबकुंअरि, लंदन में सरस्वती, लंदन कहां है महताबकुंअरि, अंगरेजों की बलायत में एक बहुत बड़ा शहर है सरस्वती, कितनी दूर होगा महताबकुंअरि, मैंने एक पुस्तक में पांच हजार कोस लिखा देखा है सरस्वती, कोस कितना लम्बा होता है महताबकुंअरि, कन्नारी बाजार से गुसाईं गंज को सात कोस कहते हैं यह सुनकर यमुना हंसी और कहा १७ ई० सत्तर हत्तौ साठ गज कामील और दोसील का कोस होता है सरस्वती ने यमुना से पूछा कि पारसाल जो मैं नीमघारण्य के मैदान में गई थीं तुम भी मेरे साथ गई थीं तुमने भी देखा था घोड़े २ दूर सड़क पर पत्थर गड़े थे और पत्थरों पर कुछ लिखा हुआ था वह पत्थर कैसे थे यमुना, मैंने अटकल से यही समझा था कि कोसों के पत्थर हैं परंतु गाड़ी ऐसी तेज जाती थी कि पत्थरों पर निगम नहीं जसती थी मैं खूब नहीं पढ़ सकी कि उनपर क्या लिखा था सरस्वती, वह कोसों के पत्थर नहीं थे मीलों के पत्थर थे चाधे कोस का मील होता है और हर मील पर पत्थर गड़ा है उसमें यही लिखा होता है कि यहां से लखनऊ इतने मील है और नीमघार इतने मील है सरस्वती ने फिर महताबकुंअरि की ओर

देखा और पूछा कि हां लन्दन किसदिशामें है महताबकुंअरि,
 उत्तर में है सरस्वती, वह सुल्का गर्म है या ठंडा महताबकुं-
 अरि, यह तो मैं नहीं जानती यमुना, बड़ा ठंडा है जितना
 उत्तरको जाओ गर्मी कम है और जितना दक्षिण को चलो
 गर्मी अधिक होती जाती है इन्दरकुंअरि, अच्छी बीबी बाद
 शाह है सरस्वती, इसमें आश्चर्य की क्या बात है इन्दरकुंअरि,
 आश्चर्य की बात क्यों नहीं है स्त्री जात क्या करती होगी सर-
 स्वती, जैसे पुरुष राज्य करते हैं वैसेही स्त्री करती हैं सुल्का
 का बन्दोबस्त रैयत का पालना इन्दरकुंअरि, स्त्री तो क्या
 करती होगी करते सब कुछ अंगरेज होंगे बरायनाम स्त्रीको
 बादशाह बना रक्खा होगा सरस्वती, यह सब अंगरेज मलि-
 का के नौकर हैं हर एक का काम अलग है हर एक का
 अधिकार जुदा है अपनेर काम पर सब सुस्तैद रहते हैं और
 आखिर जब पुरुष बादशाह होते हैं तबभी मंत्री नौकर
 चाकर सब काम किया करते हैं इन्दरकुंअरि, मेरा जी तो
 अंगीकार नहीं करता कि स्त्री जात राज्य करसके सरस्वती,
 भूपाल की बेगम का नाम तुमने सुना है इन्दरकुंअरि, सुना
 क्यों नहीं खुदा मेरे ससुरे भूपाल ताल में नौकर हैं सरस्वती,
 इस प्रकार समझलो भूपाल थोड़ासा सुल्का है और मलिका
 बिक्होरिया के पास बड़ा राज्य है जिस प्रकार भूपाल की
 बेगम अपने छोटे राज्य का बन्दोबस्त करती है मलिका बि-
 क्होरिया अपने बड़े राज्य का बन्दोबस्त करती है भूपाल
 छोटी सरकार है नौकर चाकर कम हैं थोड़ी तलब पाते हैं
 मलिका बिक्होरिया की बड़ी सरकार है बड़े कारखाने हैं
 लाखों नौकर तनख्दा हैं भी अधिक हैं इन्दरकुंअरि, अच्छी बी
 मलिका का कोई भियां है सरस्वती, हां मगर मौत पर किसी
 का कुछ बस नहीं चलता चांद को भी परमेश्वर ने दागलगा
 दिया है कई वर्ष लूटे मलिका रांड होगई इन्दरकुंअरि
 मलिकाके सन्तान है सरस्वती हां परमेश्वर रखे बेटे पोते,

में क्यों नहीं आती सरस्वती, वहां भी बड़ा राज्य है वहां के
 कामों से छुट्टी नहीं मिलती इन्द्रकुंअरि, अच्छी मलिका को
 हजारों कोस दूर बैठे यहां की क्या खबर होती होगी सर-
 स्वती, क्यों नहीं तनिकर भी खबर होती है डाक और तार
 बिजली पर रात दिन खबर आती जाती है हजारों अखबार
 बलायत जाते हैं इन्द्रकुंअरि, मलिका को किस प्रकार देखें
 सरस्वती, क्यों कर बताऊं परंतु उनकी तसवीर अलबत्ता देख
 सकती हो इन्द्रकुंअरि, खैर तसवीर ही देख लेती सरस्वती
 बोली वीवी तुम भी आजब तमाशे की औरत हो क्या तुमने
 रुपया नहीं देखा इन्द्रकुंअरि, क्यों नहीं देखा सरस्वती
 स्त्री का चेहरा जो बना है वह मलिका को तसवीर है
 चिट्ठियों की टिकट पर मलिका की तसवीर है बल्कि मेरे
 पास मलिका की एक बड़ी अच्छी तसवीर और है यमुना
 मेरा सेंद्रकचा तो उठा ला सो यमुना दौड़ी गई और उठा
 लाई सेंद्रकचे में से सरस्वती ने मलिका की तसवीर निकाल
 कर दिखलाई और सब लड़कियों ने अति प्रेमसे मलिका की
 तसवीर को देखा इन्द्रकुंअरि, क्या अच्छी तसवीर है अयन
 मयन मलिका खड़ी है सरस्वती बोली यह तसवीर हू बहू
 मलिका की है रुपये के चेहरे से मिलाकर देखो कितना फाक
 है यह तसवीर हाथ की बनाई हुई नहीं है एक आयना होता
 है उसको कुछ मसाला लगाकर सामने रख देते हैं खुद बखुद
 जैसी की तैसी सूरत उतर आती है इन्द्रकुंअरि, सहतावकुं-
 अरि ने लंदन को पांच हजार कोस दूर बताया तो कहीं बर्षों
 में यहां से वहां आते जाते होंगे सरस्वती, नहीं समुद्र एक
 महीने में अच्छे प्रकार से पङ्च जाते हैं इन्द्रकुंअरि, अय-
 नय समुद्र होकर जाना पड़ता है अंगरेजों के भी कैसे मन है
 इनको समुद्र से डर नहीं लगता मेरे तो समुद्र के नाम सुनने से
 रोंगटे खड़े होते हैं सरस्वती, समुद्र से डरने की क्या बात है
 आनन्द से जहाज पर बैठ लिया अच्छा खासा चलता हुआ
 घर मिल गया इन्द्रकुंअरि, आनन्द से चलता हुआ कितना बड़ा

डर है जो पार सात की बात है कि गुलजारीमल महाजन कुनवे
 समेत द्वारका को गया था और मेरी मौनिया सास भी उन
 यात्रियों के साथ गई थी जहाज पर चढ़ना था कि एक दो दिन
 पीछे जहाज डूब गया घर लौटना नसीब न हुआ सरस्वती,
 हां संयोग की बात है जहाज कभी कभी डूब भी जाते हैं परंतु
 परमेश्वर न करे आय दिन डूबा करते तो दरिया के यात्रा का
 कोई नाम भी न लेता अब तो दरिया का रास्ता खुश की के
 सड़कों से ज्यादा आवाद हो रहा है हजारों लाखों जहाज
 निश्चिंत दिन आते जाते रहते हैं अंगरेज और उनके बीबी बच्चे
 और कुल अंगरेजी असबाब सब जहाज के ऊपर यहां आता
 है इन्दरकुंआरि, अंगरेजों की स्त्रियों का क्या जिकिर वह तो
 कुछ और ही प्रकार की स्त्रियां हैं उनकी क्या रीस वह तो बा-
 हर फिरती हैं सुनती हैं नब्बे बच्चों का वलायत भेज देती हैं
 और उनका मन नहीं कुढ़ता नहीं मानूस किस तरह की
 मायें हैं और किस प्रकार उनके मन को संतोष आता है फिर
 बाहर की फिरनेवालियां और पत्थर के दिल इनको एक समुद्र
 बड़ा पवन पर उड़ना भी कुछ कठिन नहीं सरस्वती, बाहर की
 फिरने की तुमने जो कही तो उनके देश में परदे का चाल नहीं
 बलव के दिनों में हम लोग एक गांव में भाग कर गये थे वहां
 भी पर्दे की चाल चलन न था सब की बहू बेटियां बाहर नि-
 कलती थीं मैं तो चार सहीने वहां रही बाहर के फिरनेवालों
 में वह लाल और शरम देखी कि परमेश्वर सब पर्देवालों
 को देवे और बच्चों का वलायत भेज देने से तुमने क्यों कर समझा
 कि उनको प्रीति नहीं कि सन्तान को पढ़ने से रोकें गुण न
 प्राप्त करने दें नाम को तो प्रीति और हकीकत में सन्तान के हक
 में कांटे बेती हैं और बच्चों को सुख अज्ञान रखतीं और प्रीति
 का नाम बदनाम करती हैं यहां पड़चकर सब चुपड़ाई तो
 चांदकुंआरि ने अपनी कहानी आरंभ की और उस बादशाह
 के कोई बेटा न था बादशाह ने यह समझ कर कि मेरे पीछे
 यही लड़की वारिसराज्य की होगी उस लड़की को खूब पढ़ाया

लिखवाया और राजनीति की विधि अच्छे प्रकार सिखाई और अपने जीतेजी उसको राज पाट सौंप दिया चांदकुंअरि यहां तक पहुँची थी कि सरस्वतीने कहा तुम ऊपर कहानी कहती जाती हो और मेरे जीमें पूछनेका हजारों बातें भरी हैं पर क्या कुछ दिन हो चुकनेपर आया और सुभको अलप कुंअरि के घर जाना अवश्य है संध्याके समय किसीके घर खबर को जाना भी वर्जित है मैं तो अब ठहर नहीं सकती तुम लड़कियां आपसमें कहो सुनो इन्द्रकुंअरि से कहा बोव आ मैं तो जाती हूँ तुम्हारा जी चाहे तो बैठी रहो या कहूँ फिर आ जाना यहां तो रोज यही ऊआ करता है सरस्वती यह कह कर अलप कुंअरि के घर सिधारी और इन्द्रकुंअरि ऐसीरीझी कि पहर रात तक लड़कियों में बैठी रह गई सरस्वती के पीछे यमुना और सहतावकुंअरि ने सख्ख की बातें कहानी में निकाली सरस्वती सहतावकुंअरि को बहुत चाहती थी और उससे अधिक अपनी नन्द यमुना को सरस्वती ने सहतावकुंअरि को इस तरह पर पड़ाया कि दो वर्ष में हिंदी भाषा की बड़ी पुस्तक पढ़ने लगी और चिट्ठी और हिसाब लिख लेती थी वह बहमिजानी सहतावकुंअरि की वाक्की रही न वह चिड़ चिड़ा पन बड़ी सीधी साधी लिखी पढ़ी गुणवन्ती प्यारी लड़की बन गई गुलावकुंअरि का जिस प्रकार पर उजड़ा ऊआ घर सरस्वती ने बसाया अगर उसका व्योरा लिखा जावे तो दूसरी पुस्तक बन जाय अर्थात् यह कि परिहित अयोध्या प्रसाद का सब घर छोटे बड़े सरस्वती के चरण धो धो पीते थे सहतावकुंअरि की माने लाख र यत्न की कि सरस्वती कुछ ले पर उसने कुछ नहीं लिया जब कि सहतावकुंअरि का व्याह होने लगा तब परिहित अयोध्या प्रसाद ने परिहित शंकरदत्त का दवाउ डाल कर सरस्वती को हजार रुपये के नड़ाऊ कड़े दिये और कहा सुनो तुम मेरी पोती और निवासी के बराबर है मैं तुमको पढ़वाई नहीं देता बल्कि अपना वच्चा समझ कर देता हूँ उधर शंकरदत्त ने समझाया तो सरस्वती ने

कहते जो लिये इधर तो सरस्वती अपनी पाठशाळा के बंदो-
बस्त से यो उधर अम्बिकादत्त बेरोजगारी से घबड़ाता या
एकादिन सरस्वती से कहने लगा कि अब मेरा जी बज्जत घब-
ड़ाता है अगर तुम्हारी सलाह हो तो मैं तहसीलदार साहब
के पास पहाड़ पर चला जाऊँ और उनके वसीले से नौकरी की
तलाश करूँ सरस्वती ने थोड़ी देर सोचकर के कहा कि नौकरी
करनी तो बज्जत अवश्य है इस कारण कि तुम देखते हो कि
कौन सी तंगी से घर में गुज़ार देती है अब्बा जान अब बूढ़े
हुये उचित यह है कि वह घर में बैठें और तुम कामाकर
उनकी सेवा करो सिवाय इसके यमुना बड़ी होती जाती है
मैं उसकी संगी के चिंता में हूँ और मनो कामना यह है
कि बज्जत ऊँचे जगह इसका व्याह हो और मैं यत्न कर रही
हूँ परमेश्वर ने चाहा तो इसी साल में इसकी बात चीत
ठहरी जाती है परन्तु इसके लिये बड़ा सामान दरकार होगा
और इस समय तक किसी प्रकार की कोई वस्तु घर में मौजूद
नहीं है भाईजान पहिले तो अलग हैं फिर ऐसी थोड़ी नौक-
री में उनसे अपना निबाह नहीं हो सक्ता वह दूसरे को
कहाँ से देखते हैं फिर सिवाय इसके कि तुम नौकरी करो
कोई ख़रत नहीं परन्तु पहाड़ पर जाने की मेरी सलाह नहीं
अब्बा तो तुम्हारे वास्ते कौशिल्य करेंगे और निश्चय है कि
शक्यतर तुमको नौकरी मिल जाय परन्तु किसी का सहारा
पकड़ कर नौकरी करना कुछ ठीक बात नहीं बला से थोड़ी
हो पर अपने पराक्रम से हो जाना अब्बा कोई ग़ौर नहीं है
रिश्ते में भी तुमसे बड़े हैं उनसे लेना क्या बल्कि मांगना भी
ऐव नहीं फिर भी परमेश्वर किसी का इहसानमन्द न करे
सदाकी आंख भ्रमक जाती है उन्होंने ने सुंह पर न रखा तो
कुनबे में परमेश्वर रखे सौ आदमी हैं सुंहदर सुंह न कहेंगे
तो पीठ पीछे अवश्य कहेंगे कि देखो ससुरे के सहारे से
नौकरी ऊई अम्बिकादत्त ने कहा फिर क्या करूँ आगरा चला
जाऊँ सरस्वती ने कहा आगरा में क्या है रईसकी सरकार तो

आप तबाह है नहीं मालूम अब्बाजानको पहले का लिहाज व सुखीवत मानकर पचास रुपया वह किस तरह देता है नये आदमियों की गुंजायश उसके सरकारमें कहां, अब्बिकादत्त ने कहा और बहुत सरकारें है सरस्वती ने कहा जब से अंगरेजी ऊई सब रईस ऐसेही तबाह है और पिछले नाम नमूद को सब निवाहते हैं इससे दस पांच खरतें उनके यहां लगी लिपटीरहती हैं सोभी क्या खाक, वसीं तनखाह नहीं मिलती अब्बिकादत्त ने कहा फिर क्या इलाज, सरस्वती ने कहा अंगरेजी नौकरी तलाश करो अब्बिकादत्त ने कहा अंगरेजी नौकरी तो वे सई सिफारश नहीं मिलती हजारों लाखों आदमी मुझसे बेहतर २ मारे २ फिरते हैं कोई नहीं पूछता सरस्वतीने कहा हां यह सच है परंतु जब आदमी किसी बातकी इच्छा करे तो परमेश्वर पर भरोसा करके निरास न हो मैंने माना कि हजारों नौकरी के तलाश में फिरते हैं परंतु जो नौकर हैं वह भी तुम्ही ऐसे आदमी हैं और सौ बात की कि एक बात तो यह है कि नौकरी भाग्य से मिलती है बड़े आदमी देखते रह जाते हैं और अगर परमेश्वर का देना मंजूर होता है तो न बसीजा है न लियाकत छप्पर फाड़कर देता है घासे बलाकर नौकर रख लेते हैं अब्बिकादत्त ने कहा तो गरज यह है कि घर बैठा रहूं सरस्वतीने कहा यह हर्गिज मेरा मतलब नहीं है जहां तक अपने से हो सके यत्न करना चाहिये अब्बिकादत्त ने कहा यही तो कठिन है क्या यत्न करूं सरस्वती ने कहा जो लोग नौकरी पेशा हैं उनसे मुलाकात पैदा करो उनसे हित और प्रेम बढ़ाओ उनके वसीले से तुमको नौकरी की खुबर लगती रहेगी उन्हीं के वसीले से तुम किसी हाकिस तक पहुंच जाओगे अब्बिकादत्त ने यही किया कि नौकरी वालों से मुलाकात करना शुरू की यहां तक कि सरिश्तेदार तहसीलदार ऐसे लोगों में आने जाने लगा रोज के आने जाने से सबको मालूम हुआ कि यह भी नौकरी के तलाश में है यहां तक लाजा रुद्रप्रसाद

ने जो कचहरी में रोवकार नबीव ये अम्बिकादत्त से कहा कि अगर नौकरी की तलाश है तो मेरे साथ कचहरी चला करो थोड़े दिन उम्मीदवारी करो सरिस्ते के कामसे वाक-फ्रियत हासिल करो हाकिमों को खुरत दिखाओ इसी प्रकार कहीं न कहीं ठक लगे जायगा उसके कहनेसे अम्बिकादत्त कचहरी जाने लगा और बद्रप्रसाद के साथ काम किया करता था यहां तक कि हाकिम से दरखुस्त करा जाता हाकिम लोग उसको जानने लगे इसी बीचमें छोटे २ उहड़े दारानकी दो चार एवजियां अम्बिकादत्तको मिल गईं किसी अमले को रखसत की ज़रूरत हुई वह आधी तिहाई तन-ख़ाह पर इसको एवज दे गया यहां तक कि संयोग से एक दश रुपये का सुहरिंद पेसी तीन महीने की रखसत पर गया था सो तीन महीनेके पीछे उसने इस्तीफ़ा भेज दिया पण्डित अम्बिकादत्त उसकी जगह पर सुकर रहे गया परंतु कभी २ सरस्वती से झिंकार आता तो अम्बिकादत्त हिंकारत के साथ कहा करता कि क्या बाहियात नौकरी है दिन भर पीसना और दश रुपया और न ऊपर से कुछ पैदा है न आगे का बढ़ने की आस मैं तो इसको छोड़ दूंगा सरस्वती सदा ऐसे ख़यालात पर उसको लानत लगात करती और कहती कि तुम बड़ी ना शुकारी करते हो बड़ दिन भूतगये कि उम्मीदवारी भी नबीव नथी या अब नौकर होतौ नौकरी की क़दर भी नहीं करते घरके घर बैठे क्या दश रुपये कम हैं अपने बड़े भाई को देखो कि कई वर्ष तक सौदागर के यहां दश रुपये की नौकरी करते रहे और जब तुम्हारा नौकरी में मन नहीं लगता तो तुम से काम क्या खाक होता होगा आखिर को नौकरी खुद छूट जायगी इसी प्रकार थोड़े से बड़त भी होता है हमारे अम्मा पण्डित आठ रुपये महीने के मक़ल नबीव ये अब परमेश्वर की कृपासे तहसीलदार हैं और भगवानने चाहा तो और भी बढ़ेगी ऊपर की आमदनी पर कभी मत नौकर

हर्गिज बरकत नहीं होती भाग से बढकर मिल नहीं सक्ता फिर आदमी अपनी नियत को छामाछोल क्यों करे जो इससे अधिक मिलने वाला है तो परमेश्वर यों हलालसे भी देसक्ता है राज सरस्वती नित्य अम्बिकादत्त को समझाती रहताथी यहां तक कि जिस हाकिस के पास अम्बिकादत्त नौकर था वह डिप्टी कमिश्नर देहली का सुकरार हुआ यह हाकिस अम्बिकादत्त परबहुत मेहरबानी करताथा दिन को कचहरी में यह हाल अम्बिकादत्त को मालूम हुआ शाम को अम्बिकादत्त घरमें आयातो बहुत उदास था सरस्वती ने पूछा खैरियत है आज क्यों उदास है अम्बिकादत्त ने कहा क्या बताऊं मिस्टर उड साहब की बदली दिल्ली को होगई वह तो एक अपने जानने वाले हाकिस थे अब कचहरी में रहने का मजा नहीं सरस्वती बहुत देर तक सोच में रही फिर कहा बेशक मिस्टर उड साहब का बदल जाना अफ-सोस की बात है परन्तु न इस कदर कि जितना तुमको है जो उसकी जगह आवेगा परमेश्वर उसके दिलमें भी रहस डाल देगा आदमी को आदमी पर भरोसा नहीं करना चाहिये सरस्वती ने पूछा मिस्टर उड साहब का क्या जायगे अम्बिकादत्त ने कहा कल शामको डाक पर सवार हो जायंगे सरस्वतीने कहा तुम उनके बंगलेपर नहीं गये अम्बिकादत्त ने कहा अब क्या जाता सरस्वती ने कहा यही तो मिलने का समय है और कुछ न होगा तो कोई चिट्ठी परवाना तुम को दे जायगे अम्बिकादत्तने कहा अच्छा सब देको जाऊंगा बहुत तडके कपड़े पहिये पहना अम्बिकादत्त मिस्टर उड साहब के बंगलेपर गया मिस्टर उड साहब ने कहा अम्बिकादत्त हम अब दिल्ली को जाता है और हम तुमसे बहुत राशी था अब तुम चाहे तो हमारे साथ दिल्ली को चले हम तुमको वहां नौकरी देगा और जबतक नौकरी न होगी हम अपने पास से पन्द्रह रुपये देगा अम्बिकादत्त ने सोचकर कहा कि

मासे पूछलूं बारन अम्बिकादत्त घरलौट कर आया तो जिकर
 किया कि मिसर उडसाहब सुभको सायलिये जाते हैं अम्बिका
 दत्त की जाने तो खुतेही शुलभचाया सरस्वती भी सन्नाटे
 में हो गई आखिर अम्बिकादत्तने पूछा कि साहबो वताओ मैं
 जाकर क्या जवाब दूं अम्बिकादत्तकी भावोती जवाबक्या देना
 है अब क्या तेरेलिये वह बैठारहेगा या तेरेलिये सिपाही
 भेज रहा है अम्बिकादत्तने कहा अच्छा मैं उससे इत्तार
 आनेका कर आया हूं अपने जीमें कहेगा कि हिंदुस्तानीको से
 खुदमतखी है तेहें मजतेयक्त हमसे झूठवाला अम्बिकादत्त
 से मानेकहा अच्छा जिकर कह आओ कि साहब मेरा जाना
 नहीं होसकता अम्बिकादत्त सरस्वती से पूछा क्यों जी तुम्हारी
 क्या सलाह है सरस्वती ने कहा सलाह और होती है मनकी
 अभिलाषा तो यह थी कि तुम यहाँ रहे घरका बन्दो बस्त सिर्फ
 तुम्हारे दमसे है और आखिर घरमें कोई मनुष्य भी चाहिये
 और सलाह पूछो तो जाना उचित है जब एक हाकिम खुद
 बेकहेसुने तुमको साथ लेजाता है तो जरूर अपनी जगह पंज-
 कार बहतलक करेगा अम्बिकादत्तने कहा पांचरुपयेके वास्ते
 क्या दो तीन सौ कोसका सफर कहां मेरा तो दिल जाने को
 नहीं चाहता वह मउल है कि घरकी आधी न चाहूँ का
 सारी सरस्वती ने कहा यों तुमको अखतियार है परंतु ऐसी
 समय भागोंसे मिलता है फिर हाथ न आयेगा और सफरको न
 नहीं करता हमारे तुम्हारे अच्छा देखा इन लोगों ने सफर में
 उमर ते कर दी और अभी तुमने पांचरुपये सुनलिये पीके देखे-
 गे कितने पांच हैं और जो नहीं जाते तो फिर दश रुपये से
 बेदिलीमत बाहिर करना अम्बिकादत्त ने कहा तो यहां की
 नौकरी का इस्तीफा दे जाऊं और फर्ज किया कि वहां कोई
 सरत न ऊई तो इधरसे भी गया और उधरसे भी गया सर-
 स्वती ने कहा कि अबल तो यह मानलेना कि वहां कुछ सूरत
 न निकलेगी बुद्धिके बरखिलाफ है उडसाहब इतना बड़ा हा-
 किम तुमको काम देना चाहे और सूरत न निकले मेरे समक्ष

में नहीं आता और फिर इसीफा क्यों दोमहीने दोमहीनेकी
 कुट्टी लो अम्बिकादत्त ने कहा हां रखसत मंजूर ऊई पड़ी है
 सरस्वती ने कहा मंजूर होनेको क्या ऊआ उसी मिस्टर उड
 साहब से कहो वह चिट्ठी लिखदेगा शरज सरस्वती ने
 जबरदस्ती जात कर अम्बिकादत्त को जाने पर राजी किया
 और अपने पाससे पचास रुपया नकद दिया और कः जोड़ने से
 कपड़े बनादिये रामलाल रामदेई मिश्रायन के बेटे को साथ कर
 दिया पण्डित अम्बिकादत्त दिल्ली को रवाना ऊये सरस्वती ने
 पण्डित शंकरदत्त को यह सारा हाल चिट्ठी में लिखा और
 यह भी कह दिया कि उड साहब दिल्ली को आगरे होकर
 जायगे अगर ऐसा होसके कि आप वहां उनसे मुलाकात
 करके उनकी सिफारिश कुछ रईस से करादे तो बहुत अच्छा
 होगा पण्डित शंकरदत्त ने मिस्टर उड साहब की तलाश की
 और रईस के कुछ गांव जिलअ देहली में भी ये शंकरदत्त ने
 रईस की तर्फ से साहब की दावत की रईस के बाग में ठह-
 राया खाने के पीछे साहब और रईस दोनों बैठे ऊये बातें कर
 रहे थे कि पण्डित शंकरदत्त ने साहब से कहा कि लखनऊ
 के रियाया को आप की जुदाई का बहुत रंज है अगर्चि आप
 सिर्फ दो वर्ष लखनऊ में हाकिम रहे परन्तु आप के इन्साफ
 और आपके शुफा परवरी से वहां के सब लोग राजी थे एक
 बन्दा जादा भी आपके खिदमत में हाजिर था उसके लिखने
 से सब हाल मालूम रहता था साहब ने पूछा क्या कोई
 आप का लड़का भी मेरी कचहरी में था शंकरदत्त ने कहा
 अम्बिकादत्त साहब ने कहा वह तो हमारे साथ आता है
 वह आप का बेटा है शंकरदत्त ने कहा आप का गुलाम है
 रईस ने इस समय कहा कि पण्डित शंकरदत्त हमारे रिया-
 सत के बहुत पुराने नौकर हैं और हमको उनकी परवरिश
 हर तरह मंजूर रहती है परन्तु आप तो जानते हैं कि हमारे
 यहां अब गुंजायश नहीं पस अगर आप इनके बेटे की परव-
 रिश फर्मायेंगे तो हम आपके बड़े इहसानमन्द होंगे मिस्टर

उड साहब पहिले से अम्बिकादत्त के हाथ पर मेहरवान था अब ऐसी समय सिफारिश होने से मिस्टर उड साहब को अम्बिकादत्त का बहुत बड़ा ख्याल होगया पहिले तो अम्बिकादत्त जवान नौ उमर दूसरे भले आदमी का बेटा तीसरे रईस का सिफारशी चौथे खुद साहब का रफ़ीक़ पांचवें लायक़ अब इतने हक़ अम्बिकादत्त को हासिल होगये साहब ने पहिले राज़ कचहरी करतेही अम्बिकादत्त को पचास रुपये का नायब सरिश्तदार किया और पण्डित शंकर दत्त को खुत लिखा कि बिल फ़ौल हमने अम्बिकादत्त को पचास रुपये की नौकरी दी है हम जल्द इसकी तरकी करेंगे आप रईस की खुदमतमें इसकी इत्तिला कर दीजिये शंकर दत्त ने नज़ार बर सुनासिव साहब का शुकरिया अदा किया और वह अम्बिकादत्त जो कभी उम्मीदवारी का सुहताज था और छोटे ओहदेदारों की एवज़ियां करता था और सिर्फ़ दश रुपये महीने का सुहरिंर था और पन्द्रह रुपये महीने के वादे पर सरखती के जोतने से उड साहब के साथ दिल्ली गया था अब एक दमसे पचास रुपये का ओहदेदार होगया अम्बिकादत्त की माता अर्गर्चि जाने से नाराज़ हुई थीं पर पचास का नाम सुनकर उनकी भी बाछें खुल गईं अब तो घरमें चौगुनी बरक़त हो गई सरखती का बन्दोबस्त और बीस की जगह अब साठ रुपये महीना घरमें आने लगा क्या पूछना है अम्बिकादत्त आखिर एकही वर्ष में सरिश्तहदार होगया परन्तु सरिश्तहदार होने तक सन्धला ऊँचा था ख़ुर्च भी बराबर आता था चिट्ठी भी बराबर चली आती थी आखिर जवान आदमी था खुद सुलार होकर रहा संगति बुरी मिल गई बहं क चला चिट्ठियों में कमी होनी शुरू हुई सरखती तो बड़ी बुद्धिमान थी समझ गई कि कुछ दाल में काला है बहुतदिन तक सरखती चिन्ता में रही कि अब क्या यत्न करूं अन्तको सिवाय इसके कुछ समझ में न आया कि आपजाना चाहिये हरचन्द सरखती ने दिल्ली जाने का दिलमें पक्का इ-

राधा करलिया था परंतु सलाह के वास्ते जयजयवन्ती को
 बुला भेजा और सब वृत्तान्त उससे कहा जयजयवन्ती ने कहा
 बहिन दीवानी ऊई है अपना वतन छोड़कर अब कहां दिल्ली
 जाती फिरेगी सरस्वती ने कहा सुभक्तों जन्मभूमि से क्या
 प्रयोजन है जिसके साथ मेरा सम्बन्ध है जहां वह है वही मेरा
 घर है जयजयवन्ती ने कहा अब हय कुनबेवाले क्या कहेंगे
 हमारे कुनबे में से कोई आज तक बाहर नहीं गया सरस्वती
 ने कहा इसमें एककी क्या बात है आखिर यही कहेंगे कि खू-
 सल के पास चली गई तो बुरा क्या कहा और कुनबे की रीति
 जो पूछी तो पिछले दिनों कड़ा कधी न रेल न रखे आवादये
 स्त्रियों का सफ़र करना बहुत कठिन था इस कारण लोग नहीं
 जाते थे अब क्या कठिन है जो आज शाज को रेलपर बैठें और
 परमेश्वर असल खैर रखे तो परसें दिल्ली दाखिल गोया खू-
 सल से बिठुर गये जयजयवन्ती ने कहा क्या बुलाये की चिट्ठी
 आई है सरस्वती ने कहा चिट्ठी तो नहीं आई है जयजय-
 वन्ती ने कहा वे बुलाये जाना भी उचित नहीं सरस्वती ने
 कहा तुम उचित और गैर उचित को देखती हो और मैं
 कहती हूं जो मैं न जाऊंगी तो जन्म भर के तिले घर बिगड़
 जावेगा जयजयवन्ती बोली अब बहिन ऐसी तुम क्यों गिरी
 पड़ती हो तुमको उनकी क्या परवाह है परमेश्वर तुम्हारे पाठ-
 शाले को सलामत रखे तुम दण्ड को रोटी खिलासती हो सर-
 स्वती ने कहा बाह आपकी क्या समझ है यह पाठशाला तो
 मैंने अपनाजी बहनादेके वास्ते सुझाए करलिया है कुछ सुभक्तों
 इससे कमाई करनी मंजूर नहीं भगवान जाने तुमको निश्चय
 होय या न होय पाठशाले की रकमसे आज तक एक पैसा मैंने
 अपने ऊपर खर्च नहीं किया जब वह दिल्ली गये थे तो पचास
 रुपया नक़द और बीस रुपये के कापड़े उसी जायदादसे उनको
 बनवा दिये बाकी कौड़ी २ का हिसाब लिखा हुआ मौजूद
 है देखा स्त्रियों की कमाई भी कौई कमाई है जो स्त्रियों की
 कमाई से घर बसा करे तो पुरुष क्यों हों जयजयवन्ती ने

कहा बहिन ऐसी भरी वर्षात में कहां जाओगी जाइ
 आनेदो असवक्त खुले सौ मस में देखलेना सरस्वती ने कहा
 अयहम देर करना तो गलत है अब जो काम समझानेसे नि-
 कलेगा फिर बड़ी भागड़ी से न मिटेगा जयजयवन्ती ने कहा
 अब बहिन घर छोड़ते ऊँचे तुम्हाराजी नहीं कुढ़ता सरस्वतीने
 कहा क्यों नहीं कुढ़ता क्या मैं आदमी नहीं हूँ परन्तु यह
 थोड़ी देर तक कुढ़ना बेहतर था जन्म भरका जलापा बेह-
 तर जयजयवन्तीने कहा तुमने अपनी साससेभी आजा लैली
 है सरस्वती ने कहा अला यह क्या आजादेगी परन्तु हमारी
 सास विचारी सीधी आदमी है मैं समझा दूंगी तो विश्वास
 है कि न बोके गराज यह कह सरस्वतीने अपनी इच्छा जाने
 की और उसका प्रयोजन अपनी साससे एकदिन कहा बात
 तो नेकथी उसमें कौन मनाकर सक्ता था सरस्वती का जाना
 ठहर गया एकदिन सरस्वती सब कच्चा हाल अपनी माता से
 भी कह आई और विदा हो आई पाठशाला के लिये लड़कियों
 को समझा दिया कि यद्युना तुम सबको पढ़ाने को बद्धत है मैं
 दो महीनेके लिये जाती हूँ सब लड़कियां बंदस्तूर आयाकरें
 सरस्वती विदा होनेके लिये अपनी बड़ी पहिन परमेश्वरी के
 पासभी गई वहां परमेश्वरीदत्त ने पूछा क्योंजी तुम जाती हो
 पाठशाला को क्या कर चली सरस्वतीने कहा पाठशाला और
 घर सब आपका सौंपे जाती हूँ परमेश्वरीदत्तने कहा वाह क्या
 खूब सुझाव न घरसे प्रयोजन न पाठशालासे वास्ता मैं क्या कर
 सक्ता हूँ सरस्वतीने कहा प्रयोजन रखना और न रखना सब
 आपके आधीन में है परमेश्वरीदत्त ने कहा यह बात तुमको
 कहनी उचित नहीं भला मेरा क्या अखुतियार है घर तुम्हारी
 बहिनने छुड़वाया रहा पाठशाला से लड़कियोंका है लड़का
 का पाठशाला होता तो मैं सबको पढ़ादिया करता सरस्वतीने
 कहा अब आप और बहिन दोनों घरमें चलकर रहियेअम्मा
 जान अकेली हूँ परमेश्वरीदत्तने कहा अपनी बहिनको समझावो
 सरस्वतीने कहा समझानेकी क्या आजत है वहतो आपजानती

समझती हैं यहाँ अकेले उनको लेश होता है न बच्चों का कोई
 सम्हालने वाला न घर का कोई देखने वाला दुःख सुख आदमी के
 साथ है बेजखरत अलग रहना उचित नहीं और पिछली बातें
 अब गई गुजरी हुई आपुनकी नाइतिफाजी क्या और इसका
 रंजया परमेखुरी अलग घर करने का मजा खूब चख चुकी थी
 और बहाना ढूँढती थी कि फिर साथ रहने का कोई कहे तुरंत
 राजी होगई सरस्वती अपने साथ दोनों को लिये लाई अश्वि-
 कादत्त की माँ का सरस्वती के जाने का बहुत रंजया अब उसकी
 भी तसल्ली होगई कि एक बह गई तो दूसरी मौजूद है यमुना को
 अलग बना बड़ा शोच हुआ कि देखिये क्या हो परंतु सरस्वती ने
 उधर तो यमुना की तसल्ली की और समझा दिया कि अब
 वह बातें नहीं हैं इधर अपनी बहिन को समझा दिया कि यमुना
 अब बड़ी होगई है कोई बात कड़ी न कहियेगा पाठशाले के
 हेत परमेखुरी दत्त से इतना कह दिया कि पढ़ाना लिखाना
 सब यमुना कर लिया करेगी आप सिर्फ ऊपर के बंदोबस्त
 की खूबर लै लिया की जिये और पाठशाले का हिसाब यमुना
 को लिखवा दिया की जियेगा गरज सरस्वती इस तरह से बिदा
 हुई और रेल पर सवार हो दिल्ली पड़ंची यहाँ अश्विकादत्त को
 सरस्वती के अचानक पड़ंचने से बड़ा आश्चर्य हुआ पूछा कुशल
 तो है कहीं अम्मा से तो नहीं लड़ आई सरस्वती ने कहा परमे-
 खुर २ करो क्या अम्मा जान मेरी बराबर की थी जो मैं उनसे
 लड़ती इस चार वर्ष में कभी तुमने मुझको उनसे या किसी से
 लड़ते देखा यहाँ अश्विकादत्त ने खूब हाथ पांवनिकाले थे और
 बुरी संगति में फंसा हुआ था ठकुर सुहातिये जमाये और उसको
 उल्लू बनाए लिये थे बाजार घूमका गर्म था नाच रंगतमाशा
 निशि दिन लड़ा करता था अमीरी ठाठ थे और तनखाह से
 चौगुना खर्च यही हाल कुछ दिनों और रहता तो जरूर मिस्ती
 उड़ साहब को शक पैदा होता आखिर को नौकरी जाती रहती
 अच्छे समय सरस्वती जा पड़ंची तुरंत उसने हर एक ओर से
 बंदोबस्त करना आरंभ किया और समझाया कि तुमको पर-

मेश्वर ने सौ का नौ कर कर दिया उसका यही बदला है कि तुमको उस पर संतोष नहीं अम्बिकादत्त ने कहा जो खुशीसे दे उसके लेने में क्या हर्ज है सरस्वती ने कहा क्या खूब रुपया भी ऐसी चीज है कि कोई उसको बेप्रयोजन खुशीसे देता है इन दिनों लोग रुपया को ऐसा जानते हैं कि इज्जत तक की परवाह नहीं करते परंतु रुपया नहीं छोड़ते आदमी अपने ऊपर समझे कि हम किसी को क्या दिया करते हैं तुमको तो एक रुपया भी बेप्रयोजन देना बुरा मालूम होता है फिर लोगों के पास ऐसा कहां का खजाना भरा पड़ा है कि वह बेप्रयोजन दे जाते हैं जब देखते हैं कि काम बिगड़ता है न देंगे तो सुक्रहमा खुराव होगा लाचार उधार लेकर घरवालों के गहने बेंच जमीन गिरों रख कर घूस देते हैं अम्बिकादत्त ने कहा मैं आप नहीं मांगता वह आप देते हैं तो क्या फिर इसमें डर है सरस्वती बोली पहले तो घूस छिप नहीं सकती सिवाय इसके आदमी परप्रगट न ऊई परमेश्वर जो अंदर बाहर का हाल देखता है वह तो जानता है पर आदमियों को पाप जमय कराना और परलोक के लिये अधर्म की गठरी बांधना क्या जरूर है गरज ऊंच नीच समझा कर सरस्वती ने अम्बिकादत्त से तो वह करा के थोड़े दिन पीछे सरस्वती ने पूछा ये चार आदमी जिनको बाहर सीधा जाता है कौन आदमी हैं अम्बिकादत्त ने कहा नौकरी के उम्मीदवार विचारे परदेशी हैं मैंने कहा अच्छा जब तक तुम्हारी नौकरी न लगे मेरे पास रहो सरस्वती ने पूछा फिर अब तक क्या इनको नौकरी नहीं मिली अम्बिकादत्त ने कहा नौकरी मिलती है पर उनकी हैसियत से कम है सरस्वती ने कहा जब उनकी यहां तक दशा पड़ची कि दूसरे घर पड़े ऊये रोटियां खाते हैं तो हैसियत की क्या बात रही थोड़ी बड़बत जो मिले कर लें अम्बिकादत्त ने कहा परमेश्वर जाने तुम क्या कहती हो इज्जत से घटकर कैसे कम दर्जे की नौकरी करें सरस्वती ने कहा कम दर्जे की नौकरी में बेइज्जती होती है और दूसरे के शिरदही

देने में बेइज्जी नहीं जब इन लोगों में इतनी लज्जा नहीं
 तो और सुभावभी इनमें अवश्य बुरे होंगे इनका साथ रहना
 अच्छा नहीं चखूर तुम्हारे नाम से यह भी लीते होंगे इनसे
 कहा या नौकरी करें या स्थिरे अम्बिकादत्त ने कहा मेरी
 सुरक्षित तो यह नहीं चाहती कि मैं जवाबद्वं सरस्वती ने कहा
 जब उनमें सुरक्षित नहीं तो तुमको सुरक्षित का लिहाज क्या
 चखूर है अगर तुमसे बचे तो कुनवे में बहुत से अजीज हैं
 उनका हक गैरों से पहिले है और औरों में भी ऐसी को
 देने से क्या हासिल और यह चखूर नहीं कि तुम सखी से
 जवाब दो किसी तौर उनको समझा दो खुदासा यह किये
 लोग अम्बिकादत्त के बिगाड़ने वाले थे सरस्वती ने हिक्मत
 से उनको निकलवा दिया नौकरों में से जो २ बड़े चलन थे
 कांट २ कर निकलवा दिये गये छेढ़ वर्ष सरस्वती ने रह कर
 भीतर बाहर सब बन्दोबस्त कर दिया अब दुर्गादत्त का व्याह
 होने वाला था सरस्वती के बुलावे में चिट्ठी गई जयजयवन्ती
 ने जल्द आनेको लिखा सरस्वतीको गये छेढ़ भी बहुत दिन हो
 चुके थे सरस्वती ने इरादा लखनऊ आने का किया परंतु अपने
 मनमें सोची कि अम्बिकादत्त को अकेला छोड़ना योग्य नहीं
 अम्बिकादत्त से कहा कि परदेश में अकेला रहना उचित
 नहीं अब कोई अपना सख्खी साथ रहना चखूर है मेरे
 समझ में तुम अपने चचेरे भाई रामसहायको बुलाय लो वह
 यहां तुम्हारे पास कचहरी का काम सीखेगा और पढ़ेगा भी
 और कदाचित् कहीं उसकी नौकरी भी लग जाय पण्डित
 शिवदत्त चचा को अम्बिकादत्त को चिट्ठी गई और सरस्वती
 के रहते रामसहाय पड़च गये यह खेड़का बहुत नेक बख्श था
 और अम्बिकादत्त से सिर्फ दो वर्ष छोटा था अब सरस्वती
 को सब तरह विश्वास हो गया कि दिल्ली से बिदा होकर आ-
 गरा पड़ची यहां शंकरदत्त के पास दश दिन रही शंकरदत्त
 को चमर बासठवर्ष की थी और सुखारी की नौकरी में बहुत
 मेहनत थी सब हाकिमों की कचहरी में जाकर रईस के

सुकृद्दमात की खबर लेना और सुबह शाम अमलों में जाना
बेचारे पण्डित जी रातको जो आते थे तो बहुत थक जाते थे
सरस्वतीने कहा अब आपका समय नौकरी करनेका नहीं
है सुनासिन्हा है कि आप घर बैठिये एक पुस्तकमें बैठने पढ़ा है
कि आदमी अवस्था के तीन भाग करै पहला भाग गुण और
विद्या सीखनेका दूसरा भाग संसारके कामोंके बन्दोबस्तका
तीसरा भाग आनन्द से रहने और परमात्मा के भजनका पस
आप घर चलाकर आनन्द से बैठें पण्डित शङ्करदत्त ने कहा
पहले तो रईस छोड़ता नहीं और दूसरे चाखिर मेरी जगह
कोई कामभी करनेवाला चाहिये सरस्वतीने कहा जब आप
अपने बुढ़ापे का हाल बर्णन कीजियेगा तो निश्चय है कि
अवश्यमान जायगा और काम करने का तो भाई जान क्या
काम है पण्डितजीने कहा वह कचहरी दरबार का दस्तूर
क्या जानें सरस्वतीने कहा थोड़े दिन उनको बुलाकर साथ
रखिये देखने भालने से सब मालूम होजायगा पण्डितजी को
सरस्वतीकी बात पसन्द आई सरस्वती तो लखनऊ पहुंची
और पण्डित शङ्करदत्त ने परमेश्वरीदत्त को बुला भेजा थोड़े
कालमें परमेश्वरीदत्तने बापका सब काम उठा लिया और रईस
को अपनी सेवासे बहुत प्रसन्न किया तब शङ्करदत्तने रईस से
कहा कि अब यह लड़का हज़ूर में हाज़िर रहेगा सुभको
आज्ञा दीजिये कि घरमें बैठकर परमेश्वर का भजन करूं
रईस दिल चला या उसने पण्डित जी की बात मानली और
बीस रुपये महीना पण्डितजीकी पियूष करदी और पण्डित
शङ्करदत्त की जगह परमेश्वरीदत्त को पूरी तनखाह पर
नौकर रखलिया सरस्वती लखनऊ में आई तो उसने यमुना
की मंगनी की फिकिर की महताबकुंअरि रीवांसे अपने घर
आई ऊई थी और उन्हीं दिनों गुलाबकुंअरि भी ससुराल से
छोटीबहिन से मिलने आई थी पण्डित अयोध्या प्रसाद का तो
तमाम घर सरस्वती का चेला था दोनों बहिनें सरस्वती के
आनेके समाचार सुनकर दौड़ी आईं गुलाबकुंअरि ने कहा

किं बीबी कैसाजी तुममें पड़ा था बयान नहीं होसक्ता भला
 महताबकुंअरि तो तुम्हारी विद्यार्थिन है परंतु मैं आगिदी
 से भी अधिक हूं मेरा उजड़ाऊआ घर तुम्हींने बसाया सर-
 खती ने कहा मैं किस लायक हूं गुलाबकुंअरि ने कहा
 बाह २ जी तुम कैसी बातें कहती है मैं तो जीतेजी तुम्हारा
 सलूक नहीं भूलूंगी और क्या कहूं तुम तो हम लोगों की
 सेवा किसी प्रकार ग्रहण नहीं करती नहीं तो अपने खाल
 की कूतियां तुम को बनवा देती तब भी शायद तुम्हारा हक
 अदा न होता सरखतीने कहा पहिले तो मुझसे कोई काम
 बननहीं पड़ा और अगर कोई काम मेरा तुम्हारे पसंदइआ
 तो परमेश्वरने तुमको सब क्वाबिल बनाया है हम गरीबों को
 खुशकरदेना कौन बड़ी बात है महताबकुंअरि बोली अथ
 हय अपने सुंह कैसी बात कहती हो सरखती बोली कि
 परमेश्वर रक्खे उधर तुमतो घातडोंके अमीर और अमीरों
 के शिरताज और इधर यह सरदार और सरदारों की बेटी
 अबतो इस शहरमें तुमसे बढ़कर दूसरा अमीर नहीं तुमतक
 जो आदमी पल्लुचकर निरास रहे तो उसके भाग का दोष
 है महताबकुंअरि ने कहा अच्छी बी क्या बात है सरखती
 ने कहा बड़ा कठिन काम है तुम करारकरो कि हम निरास
 न करेंगी तो मैं कहूं महताबकुंअरि और गुलाबकुंअरिने
 जाना किसी की नौकरी चाकरी के लिये कहेंगी दोनों ने
 कहा बीबी परमेश्वर की सौगंध तुम्हारे लिये हम दिलोजान
 से हाजिर हैं हमको तो बड़ी आरजू है कि तुम हम से कुछ
 फर्मायश करो सरखती ने कहा वह काम तो मेरे नजदीक
 बड़ा है परन्तु अगर तुम दोनों बहिनें जीसे कोशिश करो तो
 बड़ा नहीं है दोनों बहिनोंने परमेश्वर की सौगंध खाई और
 कहा जो हमसे हो सकेगा तो हम अपनी शक्तिभर उठा न
 रक्खेंगे सरखतीने कहा मेरी यह अनिलाषा है कि यमुना
 की मगनी द्वारिका प्रसादसे होजाय यह सुनकर दोनों बहि-
 नें चुप हुईं फिर इधर उधर की बातें होने लगीं जब दोनों

बहिने उठनेको ऊईं तो सरस्वतीने सहताबकुंअरिका दुपड़ा पकड़ा और दूसरे हाथसे गुलाबकुंअरिका और कहाकि मैं अपना हस्त आगड़कर लूंगी और जब तक मेरा सवाल पूरा न होगा परमेश्वर की सौगंध जाने न दूंगी सहताबकुंअरि बोली भला बीबी हममें हमारा क्या अखुतिबार है अभी तो हारिका प्रसाद लड़का है दूसरे ऐसी बातोंमें या बापके होते बहिनों को क्या देखते हैं सरस्वती ने कहा बड़ी और ब्याही ऊईं बहिनें माताके बराबर होती हैं रिश्ते नाते वे सब की सलाहके नहीं होते ऐसा सुमकिननहीं है कि तुमसे सलाह न हो सहताबकुंअरि ने कहा अभी हमारे यहां तो कुछ दूस बात का चर्चा नहीं है इसी प्रकार बातमें और बातहोने लगी सरस्वतीने कहा बीबियो मेरा मतलब तो रहा जाता है हां ना का सुझको उत्तर दीजिये गुलाबकुंअरि ने कहा भला हम क्योंकर हमी भरसक्ती हैं सरस्वतीने कहा संपत्ति स्वरूप स्वभाव तीन बातें चाहियें सो संपत्तितो हम बारीबों के पास नामको नहीं रही स्वभाव सो सहताबकुंअरि तुम यमुना को अच्छे प्रकार जानती हो दो वर्ष तुम्हारा उसका साथ रहा तुम सच कहना लाज संकोच सुशीलता अदबनेक-बाली लिखना पढ़ना सीना पिरोना अच्छे भोजन बनाना और सब प्रकारकी बातें यमुनामें हैं या नहीं क्यों सहताब कुंअरि मैं झूठ कहती हूं तो तुम बोलो सहताबकुंअरि ने कहा बीबी भला चांदपर कोई खाक डालसक्ता है यमुना को परमेश्वर जीता रखे बड़े घरोंमें तो भला कोई यमुना का पासवतो होले सरस्वतीने कहा कि अबरहा स्वरूप सो नाक कान आंख जैसे आदमी में होते हैं वैसेही यमुना में भी हैं वह भी आदमी का बच्चा है जवान ऊँचे पीछे इससे अच्छी स्वरत निकल आये गी गुलाबकुंअरि बोली ऐ बीबी यमुना को तुम आदमी का बच्चा कहती हो परमेश्वर की सौगंध यमुना हजारों सुन्दर लड़कियों में अपना दुसरिहा नहीं रखती है बड़े घरों में ऊंची दूकान फीक पकवान हम

ने तो कोई स्वरूपवान न देखा देखो हम दोनों बहिनें सौ-
 जूद हैं भगवान सौगंधवाज लौडियां हमसे अच्छी हैं और य-
 सुना तो चन्दे आफताब चन्दे माहताब इसस्वरत की स्त्री
 कहां देखने में आई सरस्वती ने कहा फिर बुआ सिवाय
 गरीबी के और हममें क्या बुराई है महताब कुंअरि ने कहा
 अच्छा आन हम इस बातका चर्चा अपनी माता से करेंगी
 सरस्वती ने कहा बात चीत तो मैं भी कर सकती हूं तुम मन
 से इसमें सहायता करो और अब यह बात जो छेड़ी है तो
 ऐसा हो कि पूरी होजाय दोनों बहिनों ने बचन दिया कि बी-
 बी जैसा आपका मन चाहता है वैसा ही होगा गरज कि उस
 समय दोनों बहिनें विदा हुईं दूसरे दिन सरस्वती अब फूल
 कुंअरिसे मिलनेको गई तीन सौ रुपयेका बज्रत अच्छा शाली
 रूमाल कामदार जो दिखी से लाई थी फूलकुंअरि को भेंट
 दिया फूलकुंअरि ने कहा तुम हमको बज्रत शर्मिन्दा करती
 हो हमको तुम्हारी टहल करनी चाहिये न कि छलटा तुमसे
 लें सरस्वती ने कहा यह रूमाल अवश्य कर मैंने आपही के
 लिये बनवाया था डेढ़ वर्ष से इसी हेतु मैंने गठरी में बांध
 रक्खा था कि लखनऊ चलकर मैं आपको दूंगी फूलकुंअरिने
 कहा मैं इसको लेती हूं परंतु सुभको परमेश्वर की सौ-
 गन्ध लाज आती है कभी आपने भी तो फर्मायश की होती
 मेरा जी प्रसन्न होता इतना सहारा पाकर सरस्वती हाथबांध
 कर खड़ी होगई और अपनी मनोकामना बयान की फूलकुं-
 अरिने कहा अच्छा आप बैठिये तो सही सरस्वतीने कहा अब
 मैं अपनी दृष्टा पूर्ण करके बैठूंगी फूलकुंअरिने हाथ पकड़
 कर बैठा लिया और कहा बेटा बज्रओं के काम कठिन हैं कुं-
 न्हार से दमड़ी का सिकोरा लेते हैं तो ठोक बजा कर लेते
 हैं और यह तो जन्म भर कमाइयोंके व्योहार हैं शोचसमझ
 कर सलाह सशविरा करके ऐसे काम होते हैं अब इसका तुम
 ने चर्चा किया अब मैं इनके पितासे और अपनी बही भगिनी
 और कुनवे वालों से पूछूंगी जैसा होगा देखा जायगा अभी

तो दारिकाप्रसाद लड़का है सरस्वती ने कहा मैंने अपने हौ-
सिले से बढकर सवाल किया है मेरे पास गरीबी और आ-
जिजीके सिवाय देने लेनेको कुछ नहीं है अगर्चि फूलकुंअरि
ने जवान से न कहा परंतु अन्दाज से माजूम हुआ कि बात
बुरी नहीं लगी चलते समय सरस्वती गुलाबकुंअरि सहताव
कुंअरि से कहती गई कि अब इसका निवाह तुम्हारे आ-
धीन है सरस्वतीके जाने पीछे दोनों बहिनोंने यमुना की बड़ी
तारीफ की फूलकुंअरि थोड़ी सी बातोंमें राजी हो गई और
अपनी लड़कियों से बोली कि असल तो लड़की को देखना
है परमेश्वरकी लपासे हमारे घरमें किसी वस्तु की कमी नहीं
सहतावकुंअरि बोली गो उनके घर में गरीबी है परंतु सर-
स्वती बड़ी चालकी स्त्री है सुंहसे नहीं कहती तो क्या है परंतु
समयपर बड़त बड़ चढ़कर करेगी फूलकुंअरि बोली अच्छा
वह आयें उनसे पूछा जाय संध्या समय पण्डित अयोध्या प्रसाद
आये तो गुलाबकुंअरि सहतावकुंअरि ने यमुना के सुक्रहमे
को इस तरह पेश किया जैसे कचहरीमें वकील अपने सुक्रा-
हमोंको पेश करते हैं गरज बड़त शोच विचार करके पण्डित
अयोध्या प्रसाद ने यमुना की बात को पसन्द किया दूसरे दिन
गुलाबकुंअरि सहतावकुंअरि दोनों बहिनें पास सरस्वतीके
आईं और कहा बीबी सुवारक हमारा इनाम दिलवाइये
सरस्वतीने कहा परमेश्वर तुम सबको भी सुवारक करे और
इनाम देने का मेरा क्या सुह है मेरा इनाम है आश बाँद सो
रात दिन तुम्हारे लिये मैं करती हूँ सहतावकुंअरि ने कहा नहीं
आज तो अवश्य कर सुंह भीठा करना चाहिये सरस्वतीने कहा
बैठिये मिठाई खाइयेगा गुलवासाको बुलाया और पांचरूपये
निकाल उसके हाथ दिये कहा कि पांच रूपये की अच्छी मि-
ठाई पांच चार प्रकारकी ले आओ और दोनों बहिनोंको पान
दिये इतनेमें मिठाईकी टोकरीभी आ गई सरस्वती परमेश्वरी
सहतावकुंअरि गुलाबकुंअरि सबने मिलकर खाई और जो
बची पाठशालामें भेज दी अब सरस्वतीने कहा इस समय तक

मैंने अस्माजान को खबर तक नहीं की थी अब उनसे चर्चा करके परसें अच्छी आयत अच्छा लम्ब सुहृत् है परमेश्वरने चाहा तो रीतरख संगनी की होजायगी दोनों बहिन बिदा ऊईं तो सरस्वतीने नीचे उतरकर सासुके पास बैठकर कहा कि अस्माजान कुछ आप को यमुना के व्याहकाभी शोच है सासबोली क्या शोच कहां कहीं से बातभी आई सरस्वती ने कहा मैंने एक बात शोची है जो आपको पसंद हो तो चर्चा चलाऊं अम्बिकादत्त की माताने पूछा वह क्या सरस्वती बोली पण्डित अयोध्या प्रसादके लड़के से अम्बिकादत्तकी म-बोली भना बेटो भोपड़े का रहना महलों का ख़ाब देखना कहां पण्डितजी का घर आज उनके यहां वह सम्पदा है कि शहर में उनका दुसरिहा नहीं और हम शरीर कि रहने तक का भोपड़ा दुरुस्त नहीं यहां की बात क्या उनके जीमें आवेगी दृष्टा कहकर बात खानी है सरस्वतीने कहा वह धन वाली हैं तो अपने लिये हैं परमेश्वर न करै हम क्या उनका आसरा रखती हैं वह अपने पुलाउ ज़र्दा में मगन हैं तो हम अपनी दाग दलिया में प्रसन्न हैं जात पांतमें हम उनसे हेठी नहीं गुण जो यमुना में है वह उनके बड़ोंका भी नसीब न ऊँचा होगा अम्बिकादत्त की माता ने कहा बेटो सम्पति के आगे गुण हाथ बांधे खड़ा रहता है सोनेके छपरखट बनवाऊं तो उनसे बातकहूं तुम इसका ध्यान मत करो सरस्वतीने कहा हजार सम्पति की एक सम्पति सुन्दरताई है यमुनासे अच्छा अपने कुनवे में तो ढूँढ़ले अम्बिकादत्त की माता बोली तुम कौसी लड़कियों की कौसी बात करती हो पहले खरूपभी बराबरी में पूछा जाता है दूसरे यह बात सुँडसे कहने की है कि हमारी बेटो सुन्दर है और फिर सुन्दरई क्या बला है बड़े २ स्वरूप वालोंका देखा है कि जूतियों के समान आदर है और कुछेपे हैं कि लाखोंके लाल बने बैठे हैं सरस्वतीने कहा सुन्दरताईभी ऐसी चीज है कि आदमी उस पर मोहित न हो परन्तु बड़त आदमी जिनकी सूरत अच्छी ऊई पर प्रकृति

उनकी बुरी और स्वभाव निकम्मे होते हैं और मनमें घमण्ड होता है इस कारण उनकी दाल कहीं गलने नहीं पाती उनकी प्रकृति उनका मित्राज उनकी सुन्दरई के खेल को घटा देता है जैसे कोई घोड़ा है रंगत का साफ हाथ पांव का अच्छा बाल भौंरी से निर्दोष जीवन का दुख ल परन्तु चाल का बुरा कट्टा है दुलसी अलग चलाता है खड़ा होकर चलट जाता है ऐसे घोड़े को कोई स्वरत देख कर क्या करे और जो अच्छे स्वरत के साथ कदम बाज गरीब भी होता अमोल है तैसे मेरी नन्द यमुना गुणस्वरूप और स्वभावमें अपना दुमरिहा नहीं रखती अश्विकादत्त की माता ने कहा फिर कुछ देने को भी चाहिये हम गरीबों के पास उनके देने योग्य सामान कहां है माना जा बात भी ठहरी और वहां आंखों में लड़की निरादर रही तो कुछ हासिल नहीं सरस्वती ने कहा इज्जत और आदर दहेज पर नहीं होता है स्त्री पुरुष के खेल मिलाप पर है गुलाबकुंअरि क्या घोड़ा दहेज लेकर गई थी परन्तु बहुत दिनों ससुरालमें एक दिन भी रहना न मिला और दूर क्यों जाओ हमारी बड़ी बहिन को देखो कि उनको भी हमारे बराबर दहेज मिलाया फिर क्यों रोज लड़ाई होती रहती है यह तो अपना २ स्वभाव और अपना २ गुण है अश्विकादत्त की माता बोली यह तो मैंने माना कि भियां बीबी का प्यार मिलाप जहेज पर नहीं है परन्तु कुनबे के लोग कम मानते हैं लड़के ने खयाल न किया तो क्या है सास नन्दे तो कभी समय पाकर कह गुजरेंगी आखिर जीको बुरा लगता ही है एक तो बेठी बाले का योंही शिर नीचा होता है उसपर दान दहेजवाजी वाजवी यह बेल मड़ये चढ़ते दिखाई नहीं देती सरस्वती ने कहा कुनबे वालों से क्या प्रयोजन कुनबे वाले क्या सदा घोड़े ही पास बैठे रहते हैं हां सास नन्दों के रात दिन के ताने बज्जधा क्लेश का सामना है सो गुलाबकुंअरि सहताव कुंअरि क्याताने देंगी ऐसा क्या अंधेर है ब्याह होने पीछे क्या आंखों पर ठिकरो रख लेंगी सहतावकुंअरि को जैस

मैंने अस्माजान को खबर तक नहीं की थी अब उनसे चर्चा करके परसें अच्छी मायत अच्छा लग्न सुहृत् है परमेश्वरने चाहा तो रीतरस्य-संगनी की होजायगी दोनों बहिन विदा ऊईं तो सरस्वतीने नीचे उतरकर सासुके पास बैठकर कहा कि अस्माजान कुछ आप को यमुना के व्याहकाभी शोच है सासबोली क्या शोच कहें कहीं से बातभी आई सरस्वती ने कहा मैंने एक बात शोची है जो आपको पसंद हो तो चर्चा चलाऊं अम्बिकादत्त की माताने पूछा वह क्या सरस्वती बोली पण्डित अयोध्या प्रसादके लड़के से अम्बिकादत्तकी म-बोली भत्ता बेटी ओपड़े का रहना सहजों का खाव देखना कहां पण्डितजी का घर आज उनके यहां वह सम्मदा है कि शहर में उनका दुसरिहा नहीं और हम गरीब कि रहने तक का ओपड़ा दुखस्त नहीं यहां की बात क्या उनके जीमें आवेगी टुथा कहकर बात खानी है सरस्वतीने कहा वह धन वाली हैं तो अपने लिये हैं परमेश्वर न करै हम क्या उनका आसरा रखती हैं वह अपने पुलाउ जर्दा में मगन हैं तो हम अपनी दाल दलिया में प्रसन्न हैं जात पांतमें हम उनसे हेठी नहीं गुण जो यमुना में है वह उनके बड़ोंकाभी नसीब न ऊँचा होगा अम्बिकादत्त की माता ने कहा बेटी सम्पत्ति के आगे गुण हाथ बांधे खड़ा रहता है सोनेके छपरखट बनवाऊं तो उनसे बात कहूं तुम इसका ध्यान मत करो सरस्वतीने कहा हजार सम्पत्ति की एक सम्पत्ति सुन्दरताई है यमुनासे अच्छा अपने कुनवे में तो ढूँढ़ ले अम्बिकादत्त की माता बोली तुम कैसी लड़कियों की कैसी बात करती हो पहले स्वरूपभी बराबरी में पूछा जाता है दूसरे यह बात सुँडसे कहने की है कि हमारी बेटी सुन्दर है और फिर सुन्दरताई क्या बतला है वडे २ स्वरूप वालोंका देखा है कि जूतियों के समान आदर है और कहते हैं कि लाखोंके लाल बने बैठे हैं सरस्वतीने कहा सुन्दरताईभी ऐसी चीज है कि आदमी उस पर मोहित न हो परन्तु बज्रत आदमी जिनकी सूरत अच्छी ऊईं पर प्रकृति

उनकी बुरी और स्वभाव निकम्मे होते हैं और मनमें घमण्ड होता है इस कारण उनकी दाल कहीं गलने नहीं पाती उनकी प्रकृति उनका मिजाज उनकी सुन्दरई के लोचन को घटा देता है जैसे कोई घोड़ा है रंगत का साफ हाथ पांव का अच्छा बाल भौरी से निर्दोष जीवन का दुख ल परन्तु चाल का बुरा कट्टर है दुलसी अलग चलाता है खड़ा होकर चलत जाता है ऐसे घोड़े की कोई स्त्रिय देखकर क्या करे और जो अच्छे स्त्रिय के साथ कदम बाज गरीब भी होता अमोल है तैसे मेरी नन्द यमुना गुणद्वय और साभावमें अपना दुस्मिहा नहीं रखती अश्विकादत्त की माता ने कहा फिर कुछ देने को भी चाहिये हम गरीबों के पास उनके देने योग्य सामान कहां है माना जा बात भी ठहरी और वहां आंखों में लड़की निरादर रही तो कुछ हासिल नहीं सरस्वती ने कहा इज्जत और आदर दहेज पर नहीं होता है स्त्री पुरुष के मेल मिलाप पर है गुलाबकुंअरि क्या घोड़ा दहेज लेकर गई थी परन्तु ब्रह्म दिनो ससुरालमें एक दिन भी रहना न मिला और दूर क्यों जाओ हमारी बड़ी बहिन को देखो कि उनको भी हमारे बराबर दहेज मिलाया फिर क्यों रोज लड़ाई होती रहती है यह तो अपना २ स्वभाव और अपना २ गुण है अश्विकादत्त की माता बोली यह तो मैंने माना कि मियां बीबी का प्यार मिलाप जहेज पर नहीं है परन्तु कुनबे के लोग कम मानते हैं लड़के ने खयाल न किया तो क्या है सास नन्दें तो कभी समय पाकर कह गुजरेंगी आखिर जीको बुरा लगता ही है एक तो बेटी बाले का योंही शिर नीचा होता है उसपर दान दहेज बाजबी बाजबी यह बेल मड़ये चढ़ते दिखाई नहीं देती सरस्वती ने कहा कुनबे वालों से क्या प्रयोजन कुनबे वाले क्या सदा घोड़े ही पास बैठे रहते हैं हां सास नन्दों के रात दिन के ताने ब्रह्मधा क्लेश का सामना है सो गुलाबकुंअरि महताब कुंअरि क्या ताने देंगी ऐसा क्या अंधेर है ब्याह होने पीछे क्या आंखों पर ठिकरो रख लेंगी महताबकुंअरि को जैसे

मित्रताई यमुनाके साथ है आप देखती हीरही गुलाबकुं अरि परमेश्वर जाने जाहिर में जब वह मिलती हैं बिछी जाती हैं मैं भी तो आखिर जीती बैठी हूं यमुना को जो बुरी प्रकार देखेंगी सुभको क्या सुं ह दिखावेंगी और सौ बात की एक बात मैं यह जानती हूं कि सास नन्दे भी हवा देखा करती हैं लड़के का रीझा हुआ देखेंगी तो किसी की सामर्थ्य नहीं कि कोई यमुना को आंख उठाकर देखे अम्बिकादत्त की माता ने कहा भला तुम्हारी मर्जी क्या है ठांको के पत्ते पर पांव पूजदं सरस्वती ने कहा यह तो मैं भी नहीं कहती परन्तु न होन में क्या बेटा बेटो के काम काज इस प्रकार नहीं करते देनादि लाना एक रीति रस्सा संसार की है जितनी चादर देखे उतना पांव फैलावे जितना मक्का दूर हो और जो बन पड़ा दिया और जो न हो सका न दिया नाम निशान के पीछे घर का दिवाला निकालना बुद्धि के विरुद्ध है मेरी पाठशाला में एक शहजाद कुं अरि लड़की पढ़ती थी उसके पिता को बलवे की खैरखाही में सरकार से पन्द्रह हजार रुपये इनाम मिले थे किसी अंग-रेज की जान बचाई थी पन्द्रह हजार रुपया उनको इतना था कि जन्म भर इज्जत से रहते एक बेटा और एक बेटो व्याहने को उठी शेखी में आकर पन्द्रह हजार सरकार का दिया हुआ उठा बैठे और दो हजार रुपया ऊपर से उधार लेकर लगा दिया उस समय तो चारों ओर बाहर ऊई अब घर में इस प्रकार लेशमेटेर करते हैं कि भोजन तक का भी ठिकाना बज्जत कठिन से लगता है व्याह में सुभको भी गुलाबा आया था सामान और तैयारी देखकर मेरी तो होश की चिड़ियां उड़ गईं बल्कि शहजाद कुं अरि की माता ने बुरा भी माना हो इस-लिये कि मैंने तो उस समय कह दिया था कि बीबी बेटा बेटो का देना आंखों सुअकलेजे ठंडकथी कहा गया खिचड़ी में परन्तु अपनी चंडिया की खैर मनानी अवश्य है कहने का तो मैं कह गूजरी पीछे सुभको भी पकतावा आया कि शहजाद कुं अरि कहैगी कि लेना एक न देना दो यह बे प्रयोजन

भांजी मारती है अश्विकादत्त की माने कहा हां सच है अगर कमबख्त संसार में रहना है क्या करें कहां जाय हो न हो कर नाही पड़ता है संसार कीसी न करें तो नख्ख कौन बने गरीबी सारी बे इज्जती कराती है सरस्वती बोली गरीबी की क्या बात है संसार में तो गरीब लोग अधिक हैं जो गरीब होना बेइज्जती की बात है तो जगत में वे इज्जत वज्जत हैं गरीबी अमीरी सब अपनी अपने भाग से है सब एकसे क्यों कर हो जाय अश्विकादत्त की माता बोली अय हय शादी व्याह में अगर वज्जत खर्च करने की अंगरेजी सरकार से मनाही हो जाती तो भगड़ा मिटता सरस्वती, अखवार से तो प्रकट होता है कि अंगरेज कुछ बन्दोबस्त करने वाले हैं और कहीं २ कुछ बन्दोबस्त हो गया है और व्याह में खर्च की एक छह बांधी गई है परंतु यह काम हम लोगों के करने का है सब एका करके जितने खर्च के फजूल हैं छोड़ दे, अश्विकादत्त की माता बोली खर्च के फजूल होने की जातुमने कही सो जिसको परमेश्वरने दिया है कुछ फजूल नहीं हां जिसकी गांठ पैसा कौड़ी नहीं उसको तो सभी फजूल है सरस्वती, यह न कहिये शादी व्याह में तो बाजिवी खर्च काम है फजूल बातों में अधिक रुपया उठ जाता है जैसे नाच, तमाशा, बाजा गाजा, आत-शवाजी, आरायश, नौबत, नज़ारा, चौथी, चाली, वज्जत भारी जोड़े जड़ाऊ गहना सभी फजूल है अश्विकादत्त की माता बोली तो सीधी यही एक बात क्यों नहीं कहती कि व्याही फजूल है सरस्वती हंसने लगी और कहा व्याह तो फजूल नहीं है परंतु उसके ऊपर के सब सामान निरे ठकौ-सले हैं अश्विकादत्त की माता भला रखें तो रखें तुम तो कपड़े गहने को भी बाहियात बतलाती हो सरस्वती निरे कपड़े और निरा गहना तो काम की चीज है परंतु भारी भारी जोड़े आपभी शोचिये कि किस काम आते हैं मेरे जोड़े पड़े २ सड़ते हैं घर में पहनने से कमबख्त दिल कुढ़ता है कभी कभाड़ शादी व्याह में पहन गये या त्योहार को पहन लिया

बाकी बारह महीने गठरीमें बंधे रखे रहते हैं उसपर यह बखेड़ा कि आय दिन धूपदेना और जो बेचने जाओ तो भाल का भाल नहीं मिलता ममाला गोटा किनारी के दाम तक नहीं खड़े होते यही हाल जड़ाऊ गहनेका है पण्डित सुन्दर दास की बेटीका व्याह्र आपने सुना है सुझाए तो ऐसे व्याह्र भाते हैं अम्बिकादत्त की माता बोली कौन पंडित सुन्दरदास सरस्वती, लड़कियों के मदर्स के अफसर अम्बिकादत्त की मा बोली वह तो शहरके रहने वाले नहीं सरस्वती, नहीं पटने के ओर के रहने वाले हैं स्त्री और बच्चों को अपने पास बुला लिया है मगनी इसी शहरमें की थी घरवाली चाहती थी कि अपने देश जाकर अपनी बेटी का व्याह्र करें यहां से बरात जाय पंडितजीने स्त्रियोंको समझा बुझा यहीं करनेको राजी कर लिया एक दिन चार मेल मिलाप वालों को बुला भेजा वो जो घरमें पड़ंचे तो सुना कि घरमें बेटीका व्याह्र है थोड़ी देर के पीछे समधी पुरोहित नाई लड़के को साधलिये आ मौजूद जये व्याह्र हो गया व्याह्र के पीछे पण्डित सुन्दरदास ने हजार रुपये नक़द बेटी दामाद के आगे लाकर रखदिये और कहा भाई मेरी कमाई में तुम्हारे भाग्य का इतना नहीं था जो मैं चाहता तो इसमें विरादरीकी और आस पड़ोसकी जिवनार भी कर देता और संसार के व्योहारके अनुसार एक दो भारी जोड़े भी बना देता परंतु जो शोचा तो यही उचित दिखाई दिया कि नक़द तुमको दे दूं अब तुम चाहो जिस प्रकार अपने काम में जावो अम्बिकादत्त की माता बोली कि हूं परदेश में पण्डितजी ने जो मनभाया सो किया कहने सुनने वाला कौन था सरस्वती, क्यों कहने सुनने वाला घरवाली थी परदेश पर क्या है हिम्मत चाहिये करने वाला हो तो शहर में भी कर गुजारे कहने वालोंको बकने दिया अपने काम से काम रक्खा अम्बिकादत्त की माता बोली क्या तुम ने यमुना का इस प्रकार ऊँघता उदास व्याह्र करना बिचारा है सरस्वती, मैं तो सीगों के कहने सुनने की परवाह नहीं करती

मेरा बधचले तो यमुना का व्याह पण्डित सुन्दरदास की बेटी के अनुसार कहां उन्होंने तो दो चार महमान बुलाये थे और मैं तो इसकी भी कुछ जखूरत नहीं जानती अम्बिकादत्त की माता बोली न बेटी परमेश्वर के लिये तो ऐसा अंधेर मत करो इस बुढ़ौती में मेरी यही एक बच्ची व्याहने को है अब क्या मैं सरघट से किसी का व्याह करने फिर आजंगी सरस्वती, नहीं ऐसा तो मैं नहीं कहूंगी परंतु यह बात मैंने जीमें ठान रखी है कि न तो एक पैसा उधार लिया जाय और न कोई जायदाद गिरों रखी जाय जो कुछ जोड़ा बटोड़ा यमुना के नाम रक्खा है और जो कुछ उसके भागसे समयपर मिल जाय वही बजत है अम्बिकादत्त की माता ऐसा होता क्या बात है परंतु जब दूसरे तर्फवाले हामी भरें सरस्वती ने कहा जो वह राजी हो जाय अम्बिकादत्त की माता बोली उनका मान लेना क्या हंसी ठट्ठा है परमेश्वर रखे एक बेटा नहीं मालूम क्या २ चौंसिले उनके मनोमें हैं वह तो बराबर के टक्कर का देखकर बात करेंगे और सब अरमान निकालेंगे सरस्वती ने कहा जबसे मैं दिल्लीसे आई हूं इस बात की फिर किरकार रही हूं उधर सब बातचीत ठीकठाक हो गई है अभी गुलाब कंअरि महताब कंअरि दोनों भागी ऊई आई थीं फूल कंअरि और पण्डित अयोध्याप्रसाद ने मान लिया है अब बिलंब नहीं करना चाहिये परसें अच्छा बार भी है और अच्छी सायत सुहृत् भी है इधरसे मिठाई भेजी जाय और बात पक्की हो जाय फिर व्याह देखा जायगा परमेश्वरदत्त की मा यह बात सुनकर आश्चर्यमें रह गई और कहा बात तो अच्छी है हमारी प्रतिष्ठासे कहीं अधिक हैं परन्तु उनके योग्य सामान तमसे होना कठिन है सरस्वती ने कहा जब यमुना का भाग्य ऐसे ऊंचे घरमें लड़ा है तो परमेश्वर समय पर सब सामग्री भी इकट्ठा कर देगा इतनेमें पण्डित शङ्करदत्त बाहर से आये सो वह भी मगनी का हाल सुनकर बजत प्रसन्न हुये और कहा बे शोचे साचे परसें मिठाई भेज दो अर्थात् बजत अच्छी दो

मन मिठाई चालीस रुपये की घालियों में भरकर भेज दो मगनी का होना था पण्डित अयोध्याप्रसाद ने ब्याह का तक्राजा करना आरम्भ कर दिया और पण्डित शङ्करदत्त से कहला भेजा कि ब्रजत दिन से मेरी मनोकामना यह है कि तीर्थ यात्रा कहां और केवल इसी बात का इतिजार् है कि द्वारिका प्रसाद का जल्द ब्याह हो जाय क्योंकि जीवने का भरोसा नही पण्डित शङ्करदत्त ने सरस्वती से पूछा कि क्या जवाब कहला भेजें सरस्वती ने कहा इस समय यह कहला भेजना चाहिये कि हम भी इसी चिन्ता में हैं जहां तक होसला है यत्न करते हैं सामान जो देना संजूर है इकट्ठा हो जाय तो हमको भी यह काम कर देना है जितना बेग हो जावे उतना ही उत्तम है पण्डित अयोध्याप्रसाद ने इसके उत्तर में यह कहला भेजा कि मैंने दान दहेज लेने के लिये आपके यहां नातेदारी नहीं की सुझाव केवल लड़की चाहिये इधर से जवाब गया ब्रजत अच्छा हमको भी वैशाख में ब्याह कर देना संजूर है अर्थात् वैशाख शुदी तीज लग्न सुहृत् ब्याह का ठीक हुआ और दोनों और से सामान होने लगा सामान का आरम्भ होना था कि पण्डित शङ्करदत्त को चिन्ता आई किसी समय कहते थे कदामी लालसे उधार लूं कभी सोचते थे कि रुई का कटरा बेच डालूं सरस्वती ने पण्डित शङ्करदत्त को दुर्चित्ता देखकर पूछा कि आपने खर्च का क्या यत्न किया है पण्डित शङ्करदत्त ने कहा क्या बताऊं कि ब्याह का दिन शिर पर चला आता है रुपये का यत्न कही से बन नहीं पड़ता कदामी लालसे मैंने उधार मांगा था वह भी टाल टाल गया रुई कटरा बेच डालने को सोचा था कोई गाहक नहीं ठहरता सरस्वती ने कहा कभी आप व्याह्रिया का नाम न लीजें और न रुई कटरा बेचियेगा उधार से कोई वस्तु बुरी नहीं है और जायदाद का बेच डालना कौन कठिन है परन्तु उसका मिलना फिर ब्रजत दुर्लभ है पण्डित शङ्करदत्त ने कहा ऋण तो लूं नहीं और कोई वस्तु बेचूं नहीं तो क्या मैं रसायन बनाना जानता हूं रुपया कहां से

आवे सरस्वती ने कहा पहिले घर का हिसाव देखिये कपड़े तो कुछ पहिले से तैयार हैं सिर्फ थोड़ा ससाता लेना होगा सो मेरे जोड़े में कोई २ बज्जत भारी हैं उनमें से कम करके इतना ससाता निकल आवेगा कि यमुना के जोड़ों में पूरा होजाय बर्तन भांडा मौजूद है कोई सोल लेना नहीं काठकवाड़ यह सब मैं अपना दे दूंगी वे प्रयोजन पड़ा सत्यानाश होता है और रुपया आखिर आपके पास भी कुछ होगा पण्डित शङ्कर दत्त ने कहा मेरे पास तो पांच सौ रुपये हैं सरस्वती ने कहा बस बज्जत हैं जा मैं दिल्ली जाने लगी थी तो पाठशाले की रकम में चार सौ रुपये थे वह अबतक रखे हैं मेरे पीछे दो सौ रुपये और छये आधा दीदी का हिस्सा है और आधा यमुना का यह मिल कर पाठशाले की रकम पांच सौ होजायगी यमुना के छोटे भाई को मैंने चिट्ठी लिखी है और तीन सौ रुपये मंगवाये हैं दो सौ रुपये भाई जानने भेजने को लिखा है इस प्रकार डेढ़ हजार नकद इस समय मौजूद है हजार के काड़े जो सहता वकुं अरि के व्याह में सुभके मिले थे मेरे किस काम के हैं मैंने चाहा था कि यमुना को व्याह में दे दूँ परन्तु फिर शोचा कि उसी घर के काड़े उसी घर में जाने उचित नहीं मैं इनको बेच डालूंगी जयजय वन्ती के वसीले से बाजार में भेज दूँ कल्लुमल जौहरी तेरह सौ रुपये देता था यमुना के भाग्य में शायद आगे अधिक का गांठ का मिल जाय और एक यह मेरे मन में बैठी है कि आप भाई जान के लाने को आगरा जाइये और रईस से उनका कुट्टी दिलाने में व्याह का जिकर कर दीजिये रईस बड़ा हौसलेवाला है विश्वास होता है कि वह भी कुछ सहायता करे इसलिये कि सदा से हिंदुस्तानी सरकारों की यह रीति है कि शादी व्याह में अपने पुराने सेवकों के सहायक होते हैं सरस्वती की सलाह से पण्डित शङ्कर दत्त आगरा गये तो रईस ने पूछा कि पण्डित जी किस कारण आये पण्डित जी ने कहा कि मेरी लड़की का व्याह है पस इस हेतु आया हूँ कि आप परमेश्वरी दत्त को एक महीने की छुट्टी देवें और यह तो अर्ज नहीं कर सका

कि जहूर के कुनबेसे कोई शरीक होवे परंतु दीवान साहब
 जो इन दिनों लखनऊमें हैं सरकार की तरफसे शादीमें तश-
 रीफ लावेंतो बराबर वालोंमें बड़ी इज्जत बढ़ेगी रईसने पर-
 मेश्वरीदत्तकी कुट्टी मंजूरकी और पण्डित शंकरदत्तके आने
 जानेका खर्च दिया और दीवान जीको ऊकल भेज दिया कि
 हमारे तरफ से पण्डित जीके यहां जाना और पांचसौ रुपये
 न्योता देना सरस्वतीके सलाहसे यह पांच सौ बे बैठे बैठे
 सुफ्त आगये उधर जड़ाऊ कड़े जयजयवन्तीके मारफत म-
 लिका जहां के पास पड़ंचे तो वह देखकर लोट पोट हो गई
 और आंख बन्द करके दाँतोड़े हवाले कर दिये अब तो रुपये
 की चारों ओर से रेल पेल हो गई सरस्वती के अच्छे बन्दो-
 बस्त से बहुत अच्छे जोड़े तैयार किये और जो गहना बना
 वह दोहरा तेहरा बना पण्डित शंकरदत्तके तो कई पुस्तोंमें
 ऐसा व्याह नहीं हुआ था समधियाने वाले भी यह सामान
 देखकर दंग हो गये गहने जो २ दिये गये व्योरा उसका सं-
 क्षेप से यह है नाक में नथ और कील माथे में टीका कानमें
 पत्ते जड़ाऊ और सादे कपके की बालियां, मगर, सुरकियां,
 विजुलियां, करनफूल, कुसके, गलेमें चम्पाकली, गुलशी, तोड़ा,
 धुका धुकी, चन्दनहार, कण्ठमाला, पचलड़ी, भुजापर जौशन
 नौरत्न, भुजबन्द, नौनगे, हाथों में कड़े नौगरही, चुहीदं-
 तियां, पड़ंचियां, जहांगीरियां, अंगुलियों में अंगूठी कुल्ले आ-
 रभी पांवमें पायजोब कड़े कारचोबी जालदार मसालेदार
 मिलाकर बहुत से जोड़े और सौसे अधिक बर्तन और उपरी
 सामान भी बहुत अच्छा इसी प्रकार का दिया अर्थात् बड़े
 धूम धाम से यमुनाका व्याह हुआ यमुना सुखपाल परबिदा
 ऊँई पण्डित अयोध्या प्रसाद व्याह हुए पीछे थोड़े दिनों तक
 बहू का रंग ढंग देखते थे यहां क्या देखना था यमुना तो
 सरस्वती के खराद परचढ़ चुकी थी किसी प्रकार कोर कसर
 इसमें नहीं रही थी पण्डितजी ने जितना बहू को परखा गुणी
 चतुर पाया पण्डितजीको जब अच्छा विश्वास हुआ कि यमुना

सब विधि घरको सन्हाल लेगी तो पण्डित अयोध्या प्रसाद ने तीर्थ यात्रा का सामान शुरू कर दिया नक़द रूपिया तो आप अपने साथ लिया सकानात, दुकानात, गंज गांव गिराव, सब बेटे के नाम लिख दिये और आप स्त्री सहित तीर्थ यात्रा को निकल खड़े ऊँचे यमुनाका यद्यपि व्याह होचु का था परंतु यमुना सरस्वती का पहले से भी अधिक लिहाज करती थी ज़रा २ सी बात में सरस्वती से सलाह लेती अब सरस्वती को अपने बुद्धि के प्रकाश का अच्छा समय मिला बड़ा कारखाना बड़े कार्य वो बन्दोबस्त किये कि द्वारिका प्रसाद को परमेश्वर भूठन बुलवाये समयका राजा महाराजा बना दिया अभी तक तो सरस्वती गरीबीकी दशामें थी नंगी क्या नहायेक्या निचोड़े परंतु अब परमेश्वर रक्खे दौलतधन सम्पदा उसकै नंदको मिली तो फिर उसके बन्दोबस्त करनेका मनमाना समय सरस्वतीको मिल गया ऐसे समयमें जोर काम सरस्वती ने किये वह प्रलय कालतक लोगोंकी ज़वानपर रहेंगे मगर अफसोस है कि उसके लिखनेका सावकाश नहीं रहा जो नसीहत मानने वाला हो और बातका सुनने समझने वाला हो तो जितना लिखजा चुका है वह भी कुछ कम नहीं अनेक प्रकार की बात और अनेक प्रकारकी शिक्षा इसमें मौजूद कहने का तो कहानी किस्सा है परंतु हकीकत में नसीहत व हिदायत है अब इस पुस्तकके समाप्त करनेके पहिले एक बात यह लिखनी अवश्य है कि सरस्वती बहूतसी छोटी अवस्थामें पुत्रवती हो गई थी सो सरस्वतीके सन्तानोंका चर्चा इस पुस्तक में नहीं हुआ अब उसका जिक्र कर किया जाता है सरस्वतीके लड़के तो बहुत ऊँचे परमेश्वर की माया से जीते कम रहे एक लड़का महेश दत्त आखिर में जीता रहा कई लड़कों के ऊपर यह लड़का हुआ था इस लड़के के उत्पन्नसे पहिले एक बेटा मंगल प्रसाद और एक बेटी मैना मर चुकी थी बच्चोंके पालनेमें एहति यात बहूत होती होती थी सदीर्ग गर्मी का बचाव खाने तक के समय सुक़र रहे और बंधा हुआ अन्दाज और खबरदारी ऐसी

भारी कि खुराच कीज कहीं सुं हमें न डालने पावें जब दांत निकले सत्तहा में नस्तर दिया गया कि ऐसा नहो कि दांतों के लेशको बज्जान सम्हाल सके जब बालक चार वर्ष का हुआ तुरंत चंचक के बचावके लिये टीका लगवा दिया गरजा जहा तक मनुष्य की बुद्धि काम करती है सब प्रकार का बन्दोबस्त किया जाता था परंतु तत्कालीन के आगे तदबीर नहीं चलती मंगलप्रसाद चार वर्ष का होकर मरा पंचिष ऊई दस्त बन्द करने की दवा दी बुखार आने लगा सरसाम हो गया पला पलाया बालक हाथसे जाता रहा यह दाग मिटा न था कि मैना सात वर्ष की होकर बीमार पड़ी और कुछ ऐसे बला के दस्त छूटे कि प्राण ले कर बन्द हुए दुनियां जहान की दवायें ऊईं परन्तु मौत कब दवा को मानती है मैना के मरने का सरस्वती को बहुत बड़ा दुःख हुआ पहिले तो लड़की दूसरे कुछ मरने वाली थी अपनी माता पर ऐसी मोहित थी कि एक क्षण मात्र अलग न होती साथ सेना संग उठना माता की दवा तक हो तो अवश्य चीख लेना और छोटी सी उमरमें बस पढ़ने में ध्यान जब मंगलप्रसाद मरा था तो स्त्रियों ने सरस्वती के इमान में खुलल डालना चाहा था कोई कहती कोख का खुलल है प्रदुमनमिश्र का इलाज करो कोई कहती दूध पर नजार है चौराहे में उतारा रखवाओ कोई कहती घर अच्छा नहीं ललन ओझा से किलवाओ कोई कहती सफरमें आई गई हो कोई चुड़यल लपट गई है किछौछे चलोगंड़े ताबीज अमल मंत्र टोने टटके सारे दुनियां जहां के लोग बतलाते थे परंतु बाहरी सरस्वती यों ऊपर तले दो बच्चे मरे लेकिन सदा परमेश्वर पर भरोसा रखती थी किसी ने कुछ कहा भी तो यही उत्तर दिया कि जब परमेश्वर की इच्छा होगी तो यों भी वह अपनी कृपा करसक्ता है मैना के मरने की खबर जब देवीदत्त को कांगड़े में पहुंची तो बहुत घबड़ाये और उस घबड़ाहट की दशामें बेटी के नाम उन्होंने यह चिट्ठी लिखी ॥

स्वस्ति श्री चिरंजीविनी सरस्वती को देवीदत्त का आशीष

प्राप्त होवै इस समय सुभको लखनऊ की चिट्ठीसे मैनाके मरने का हाल मालूम हुआ मैं इस बातसे इनकार नहीं करता कि सुभको लेश नहीं हुआ परंतु मेरी बुद्धि ऐसी बैठकाने नहीं हुई कि ना समझपुरुषों के प्रकार मैं सन्तोष न कर सका सुभको तुम्हारा बड़ा शोच है तुमपर यह दुख बड़ा भारी हुआ होगा परंतु हर एक समयमें मनुष्यको बुद्धि से सम्पत्ति लेना चाहिये बुद्धि हम लोगोंको इसी हेतु परमेश्वर ने दी है कि दुख में हम अपनी बुद्धिसे सहायता लें मनुष्योंको संसारकी दशा पर विचार करना अवश्य है और यह शोचप्रयोजन से खाली न नहीं है पृथ्वी आकाश पहाड़ बन नदी मनुष्य पशु पक्षी वृक्ष अनेक प्रकार की वस्तु संसार में हैं और इस संसार का बड़ा भारी फैलाव है दिनमें एक समय पर सूर्यका निकलना रात्रि का होना चन्द्रमा और तारागणोंका चमकना कभी सर्दी कभी गर्मी कभी बर्सात और जल के प्रभाव से भांति २ के फलफलका उत्पन्न होना यह सब बातें विचार करने वाले को वर्षों तक शोचने को बहृत हैं आप मनुष्यको अपनी दशा शोच विचार करने को क्या कम है किस प्रकार मनुष्य उत्पन्न होता है और किस भांति पलता और सयाना होता है और क्योंकर बालापन और युवा और वृद्ध का समय इस पर व्यतीत होता है और किस प्रकार अन्तमें संसारको त्याग करता है यह बड़ी उत्तम और कठिन बात विचार करने योग्य है यह सब कारखाना किसी हेतुसे परमेश्वरने जारी कर रक्खा है और जब तक वह चाहेगा यह रचना इसी प्रकार रचा रहेगा संसारके खाने शुमारीसे प्रगट होता है कि एक घंटेमें साढ़े तीन हजार मनुष्य संसार में मरते हैं याने एक पलमें एक आदमी और इतनेही उत्पन्न भी होते होंगे अब हिसाब करो कि एक महीनेमें कौलाख मनुष्य मरते और पैदा होते हैं और शोचो कि लाखों वर्षसे यही तार चला आता है पस अनगिन्त आदमी अब तक संसारमें मर चुके हैं मौत एक मामली और जल्दरी बात है बड़े २ बलवान राजा महाराजा

और बड़े ऋषि मुनि तपस्वी योगी पण्डित आचार्य बड़े जो
 कि संसार में सुदौंको जिला सक्ते थे आप कालके चबेना हो-
 गये संसार में जो पैदा हुआ है यह परमेश्वर की आज्ञा है कि
 वह एक दिन मरे फिर जो यह आज्ञा किसी दिन हमपर या
 हमारे किसी सम्बन्धी या नातेदार पर जारी की जाय तो
 हमको कोई कारण दुःख माननेका नहीं है यह बात खूब शोच
 करनेके योग्य है और जब तुमको मृत्युका भेद प्रकट हो जावेगा
 तो सुझके भरोसा है कि तुमभी मेरे प्रकार समझोगी कि
 किसीके मरनेपर शोक करना व्यर्थ है किसीके मौतपर दुःखित
 होना दिलके लगाओ पर है जो हम सुनें कि ब्रह्मा का वाद-
 शाह मर गया हमपर उसका कुछ खेद नहीं होगा इसलिये
 कि हमको उससे कुछ प्रयोजन न था बल्कि महत्ता और प-
 डोस में जो कोई गौर आदमी मर जाय जिससे किसीतरह का
 वास्ता न हो तो हमको बहुत कम दुःख होता है फिर हमको
 लेश सी शख्सके मरनेका होता है जिससे हमको तअल्लु क है
 और जितना तअल्लु क है भारी है उसी कदर रंज भी भारी है
 नानी के भतीजी के पोते बहू पर विवासे के बेटे की जाहू जो
 मरे तो क्या दूरका वास्ता दूर के सम्बन्ध रिश्ते नाते पर कुछ
 नहीं बल्कि मेल मिलापमें भी दुःख होता है अब शोचना चा-
 हिये कि संसार में हमको किससे अधिक तअल्लु क है इसके
 वास्ते कोई दस्तूर सुकरार नहीं है नजदीक का रिश्ता हो
 और सदा लडाइयां और सदा बिगाड़ रहता हो तो ऐसे रिश्ते
 दार गौर समझें जाते हैं या अपना मोत नहीं और सम्बन्ध नहीं
 परन्तु प्रीति मेल मिलाप है तो उनके मरनेसे बहुत दुःख होता
 है और हर एक शख्स अपने हालत के मुवाफिक तअल्लु क
 रखता है यह संसार के बन्धन सब प्रयोजन अर्थ होते हैं जो
 अपना सम्बन्धी हमारे फायदे में बिघु डाले अवश्य कि वह
 हमसे कूट जाय जो गौर आदमी हमारे काम आवे अवश्य है
 वह मिलान अपनोंके प्यारा हो परन्तु वह अर्थ जिससे तअल्लु क
 प्रकट होता है लकर नहीं कि रुपये पैसेका हो यद्यपि बहुधा

ऐसे प्रकार का होता है परन्तु कभी उच्छेद से भी तत्पुत्र का पैदा होता है वज्रतल्लो ग हमारे भित्त हैं जो हमको कुछ देते नहीं परन्तु यह आसरा है जो हमको कभी किसी प्रकार की चारुत होगी तो यह काम आनेवाले हैं तत्पुत्र के पैदा होने के कई कारण होते हैं मैं इस बात को अब वज्रतल्लो ग नहीं बढ़ाता प्रयोजन मेरा इस चिट्ठी में संतान के तत्पुत्र के लिखने से है यह तत्पुत्र जो संतान से है सर्वत्र है कोई मा बाप बल्कि कोई पशु पक्षी तक इससे निवृत्त नहीं है इससे मातृम होता है कि केवल अर्थ और प्रयोजन पर इसकी बुनियाद नहीं है बल्कि परमेश्वर चाहता है कि माता पिता को अपने संतान की प्रीति हो क्योंकि संतान थोड़े दिनों तक सहताज पालने की होती है इसलिये यह प्रीति माता पिता को परमेश्वर ने लगा दी है कि इस प्रीति के लगाव से मा बाप बच्चों का पालन और बड़ा करें यहां तक कि वह बड़े होकर आप संसार में रहने सहने लगे यह संतान का पालन देना इतना तत्पुत्र को परमेश्वर के तर्फ से माता पिता को दिया गया अवश्य है यह बखड़े कि अब संतान की तमन्ना है नहीं है तो दवा है इलाज है मंत्र तत्पुत्र गंडा है संतान ऊर्ध्व तो यह चिन्ता है कि बेटे हों बेटियां न हों या जो हों जीते रहें यह खूद मनुष्यों की अपने हवसकी बातें हैं रहीं यह बात कि संतान के आस जो मनुष्य ने पग्नेश्वर की इच्छा से अधिक अपने मन में प्रगट की निम्न दे अपने अर्थ और प्रयोजन के हेतु होती है अर्थ भी कई प्रकार के हैं बाज मनुष्य यह समझते हैं कि संतान से नाम चलता है वज्रतेरे जानते हैं कि बुढ़ापे में हमारी सेवा करेंगे बच्चों को यह ध्यान होता है कि हमारी सम्पत्ति धन को चारे पीछे लेंगे अब इन खयालों पर शोच करो कि जो वाहियात और झूठे हैं नाम चलता क्या जानी कि लो यह जानें कि फलाने के बेटे और फलाने के पोते हैं यदि तो हम जब आप संसार में ब रहे तो जो किसीने हम जाना तो क्या और न जाना तो क्या अब विचार करे नाम कहां तक चलता है किसी

मनुष्यसे उसके बाप दादोंके नाम पूछी तो कदाचित् परदादे तक सब कोई बता सकेगा इसके ऊपर संतान का नहीं मा-
 लूम होगा कि हमारे सगरदादा कौन थे दूसरे मनुष्यों को
 उनके सुरदोंकी हड्डियाँ उखाड़नेकी क्या जरूरत है फिर जो
 नामभी चला तो दोतीन पीढीतक आगे कुशल जेम और दो
 तीन पुस्त तक नाम चलनाभी एक खयाली बात है दश वर्षसे
 मैं इस जिले में हूँ हजारों आदमी सुझको जानते हैं और
 हजारोंको मैं जानता हूँ परन्तु न मैं उनके बापको जानता
 हूँ और न वह मेरे बापको जानते हैं दूसरा कारण संतानके
 अभिलाषा का यह है कि बुढ़ापे में सेवा करें यह ध्यान कि-
 तना बाहियात है यह क्योंकर निश्चय है कि उनके बड़े होने
 तक हम जीते रहेंगे और माना कि हम जीतेभी रहे तो
 उनके निश्चयत यह ध्यान करना कि बुढ़ापे में हमारी सेवा
 करेंगे एक मन समझौता है इस कलियुगमें हम ऐसी संतान
 बहुत कम पाते हैं जिनको माता पिता का अदब और सेवा
 करनेका ध्यान होता है अदब और सेवा का तो अलग रहने
 दो इनदिनों तो बहुधा संतान से माता पिता का दुःख लेश
 पङ्चता है जिस संतान की मनुष्य अभिलाषा करते हैं अन्त
 में उनके हाथोंसे दुःख पाते हैं जब तक छोटे हैं पालना एक
 सुभीता आज आखें दुखती हैं कभी पसुलीका दुःख कभी दस्त
 जारी कभी दान निकलते हैं कभी चैचक निकलती है परमेश्वर र
 कारको बड़े ऊँचे तो उनके खाने कपड़े का शोच आदमी नहीं
 मालूम किस हाल में है नौकर है या नहीं पैसा पास है या
 नहीं इनको जहाँसे पैसे देना जरूर मातापिताको उपास
 हो तो हो इनको कुत्त हो तो दसड़ी छदाम रोज के चने
 चाहिये अब माबाप मानें हैं कि लड़का काम सीखे पढ़े
 लिखे और पूत कपूत है कि इनके नामसे कोसों भागता है
 जब तक मदर्से के चार लड़के पकाड़ के घसीट न ले जाय
 जाना सौगन्ध है और वहाँ गये रास्तरकी आंख बची कहीं
 चौराहे जा निकला कहीं सड़क खड़े गेड़ियाँ खेतते हैं

कहीं बाजारोंमें खाक छानते फिरते हैं और तनिक बड़े ऊँचे
माता पिताको जवाब देने लगे लुत्तोंकी संगति और बदमासों
का साथ न नाचसे परहेज न बुरी सुहवत से बचाव पुरुषों के
नाम बदनाम करते फिरते हैं इसी प्रकार बल्लभालङ्क के चार जू-
आरी ऐयाश औवाश गंजे डी भंगे डी होजाते हैं अब संतानव्या-
हने योग्य हुई सारा शहर छान मारा कहीं ठबकी बात नहीं
मिलती मेल मिलापवाले हारकर बैठरहे कुनबेके लोग एक २
से कह चुके कोई हामी नहीं भरता एक दुरदशा में प्राण हैं
माता विचारी मंदिरों में मानता मांगती फिरती है नजूसी
जोतिषी से जन्म पत्रादिखाती है और हरवक्त परमेश्वरसे यह
मांगती है कि शीव से किसी को भोज परमेश्वर २ करके कहीं
बातचीत ठहरे तो माता विचारीके पास चांदी तककातार
नहीं समझियाने वाले सोने चांदी का गहना मांगते हैं कोई
बिधि घरको उजाड़ पजाड़बेंचवांचकर व्याह किया चिड़िया
की जान गई खाने वालों को स्वाद नहीं मिला दहेज है कि
फेंका २ फिरता है समझिन कहती है क्या दिया ऐसे न होतमें
बेटी जननी क्या जाकर थी कोई वस्तु आंख तले नहीं आती
बात २ में ताना तिथना है दामाद जो आये उनके मिजाज
नहीं मिलते व्याहको चार दिन नहीं ऊँचे कि जोड़ू खुसम में
जूती पैजार हेनेलगी बेटीकी बेटे दी और लड़ाई कीलड़ाई
मोतली फिर यह नहीं कि यह लड़ाई एक दिन है बल्कि जन्म
भरकी सुसीबतका चर्खाचला बेटीके संतानहोने का लगगा
लगगा माता बे दामोंकी चेती बे दर्माहे की दाई बन गई जन्म
भर अपने लहकों के पालने के दुख सहती रही अब परमेश्वर
परमेश्वर करके दो वर्ष से आराम मिला था कि बेटे के चेंगे
पोटे सम्हालने पड़े जो बल्लभाई तो भगड़े की गांठ लड़ाईकी
पोट सासका तो जूतीके समान नहीं समझती नन्दोंकानयनों
में प्राण कर रक्खा है न जेठसे शर्म न ससुरेकी लाज स्त्री है कि
पुरुषों की पगों चतारे लेती है परमेश्वर पनाहमें रखे बेटे
नालायक को देखिये कि बीबीने तो यह उधम जोतरक्खी है

यह भड़ुआ बीबीके पल्लपर है उलटा माता पितासे लड़ता है
 यहाँ तक कि माता पिता घर छोड़कर अलग भारेके मकान
 में जा रहे यह फल इस समयके संतानसे माता पिताको मि-
 लता है बहुत थोड़े हैं वह मनुष्य जो सन्तान से सुख पाते हैं
 फिर हम लोग अपनी अज्ञानतासे सन्तानकी अभिलाष करते
 हैं गोया हम लेश दुखकी काँजा करके बुलाते हैं अवरुद्ध यह
 हाल कि मान और सम्पत्ति का कोई वारिस हो इस कारण
 से पुत्रकी जालभा की जाय यह ध्यान कितना पूर्य है क्योंकि
 जब आदमी आप संसारसे चठ गया तो उसके धन दौलतको
 जो उनके बेटों ने लिया तो क्या अथवा मान लावारिस होकर
 सरकारमें गया तो क्या यह दौलत सम्पत्ति परलोक में कुछ
 काम न आवैगी परंतु उतनीही काम आवेगी कि जितनी
 परमेश्वरके राहमें हम आप खर्च कर जाय या हमारे पीछे
 हमारे नामसे परमेश्वर के राहमें खर्च हो जब हमने धन दौ-
 लतको आप खर्च नहीं किया और ऐसा बहुरी काम सन्तान
 के लिये छोड़ गये तो हमसे अधिक कोई निर्बुद्धि नहीं है
 जो सन्तान माता पिताके जमअकी ऊई संपत्ति से त मंत पा-
 जाते हैं उसके खर्च करनेमें उनको शोच नहीं होता मनुष्य
 उसी धनका आदर करता है जिसको वह खुद अपनी सेह-
 नत और बगसे पैदा करता है प्रेम माता पिता तो सन्तान के
 लिये संपत्ति छोड़ गये और उसने नाच रंगमें उड़ानी शुरू अ-
 कर दी और इतना भी नहीं होता कि पिताके नाम एक सीधा
 भी किसी माधू या किसी अतिथि को दे क्या ऐसे सैकड़ों ह-
 चारों कड़ानी संसार में नहीं हैं कि लोग जन्मभर एकट्ठा
 करते रह गये सन्तानने दौलत पाते ही वह गुलछरे उड़ाये
 कि घोड़े दिनोंमें बापकी जमाकी ऊई दौलत उठाकर बैठ रहे
 इस बातसे तुमको प्रकट होगा कि जितना अधिक बंधन अपने
 मनसे तुमने सन्तान में बढा लिया है वह हमारे हल्लमें बहुत
 लेश देने वाला है हमको सन्तानसे इतने बंधन रखने की आ-
 जा है कि जब तक वह हमारी सहायताके सुहता जरहें हम

उनकी पालना करें और इस पालनमें भी इस बात की तमन्ना अपने मनमें न आन दें कि सन्तान बड़ी होकर इस पालनके बदले में कभी हमारी सेवा करेगी यह अभिलाष प्रगट करना बड़ी ना समझी की बात है बल्कि यह समझना चाहिये कि परमेश्वरने जो हमारा मातृक है उनकी पालनेकी सेवा हम से तत्परा की है हम संतानको पालते हैं परमेश्वरकी आज्ञा की तामील करते हैं यह फलवाड़ी परमेश्वर की है और हम उसकी ओर से इस फलवाड़ीके माली हैं जो फलवाड़ीका मातृक किसी टुकड़े का कर्म कराने अथवा काट डालनेकी आज्ञा दे माली यह कब कहसक्ता है कि मैंने इस टुकड़े को बड़े यत्न और लोभसे पाला है यह क्यों काटा और कर्मल किया जाता है संसार के सब बन्धन केवल इतने लिये है कि आदमी एक दूसरे को लाभ पड़नावे हम थोड़े दिनों के लिये संसार में भेजे गये हैं और यहां हमको किसी का पिता किसी का पुत्र बनादिया है इसलिये कि वह लोग हमारी और हम उन लोगों की सहायता करें और भेल मिलान से अपने जीवन के दिन पूरे करजाय संसार हमारा घर नहीं है हमको ऐसी जगह भी जाना होगा कि जहां न कोई हमारा है न हम किसी के हैं जो हम किसी के पिता हैं तो केवल थोड़े दिनों के लिये और जो किसी के बेटे हैं तो भी थोड़े दिनों के लिये फिर हम किसी को मरता देखें तो दुःख लेश उठानेकी क्या बात है लेश तो जब हम करें जब हम यहां बैठे हैं हमके खूद भी तो जाना है नहीं मालूम किस बड़ी बुलावा हुआ और चलना ठहर जाय फिर सब से कठिन यह है कि मरना केवल यही नहीं है कि शरीर से प्राण निकल गया बल्कि वहां जाकर बात २ का लेखा देना होगा जमान भूठ और गाली और बेहदह बकवाद की जवाबदिली करेगी आंख नजर लड़ाने की सजा पायेगी कानको किसी की बदी और बुरी बातों के सुनने की सजा दी जायगी हाथसे किसी पर जादती की है या पराया माल चुराया है काटा जायगा

पांव जो बेराह चले हैं शिकंजे में कसे जायंगे बड़ा टेढ़ा समय होगा परमेश्वर अपनी दया से बेड़ापार करे तो हो सकता है जिनको इन बातों से निश्चिन्ताई हो वह किसी के मरने पर शम करें या किसी के पैदा होने से आनंद करें तो हो होसक्ता है परन्तु संसारी मनुष्यों में कोई ऐसा भी मनुष्य है जो अपने परलोक से निश्चिन्त होचु काहो सरस्वती अपनी सुधि लो और परलोक के हेतु सामान करो कि जहां सिबाय अमल के कुछ काम न आयेगा और परमेश्वर से विनती करो कि वह हम सबका अंजाम बख़ैर करे ॥

इति स्त्री दर्पण समाप्तः ॥

SPS

891.2 M 26 S



6543

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
रामायण नाना रथे नौ स-	भगवद्गीता दिव्य सहस्रना-	भाषा महाभारत विजय
झुहावली	व्यसहित	मुक्तावली
दूसरी पुस्तक रामायण माला	भरतरी गीत	प्रगार प्रकाश
तीसरी रामायण गीताष्टक	देवी भागवत नागरी	दोहावली रत्नावली
चौथी ज्ञान दोहावली	कल्पसूत्र	समर विहार विन्नावन
पांचवी रस सारिणी	विहारोत्तम सद्सटीक	रसलसार
छठी तिथि बोध	विश्राम सागर	कथाचित्र गुप्त
सातवी पुस्तक मातृदत्त कृत	राम लगन	कायस्थ दर्पण
सत्य नारायण की कथा स०	मनुस्मृति उर्दू टीका सहित	कृष्ण बाल लीला
शनिश्चर की कथा	वैष्णवी संध्या	गीत गोविन्द सटीक
राम कलेवा	यान्त बल्क्य भाषा टीका स०	रामाभिवेक नाटक
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	दुन्दुभ भागवती
कविकुल कल्पतरु भाषा	आनन्दऽस्मृत वर्षिणी	सिंहासन बन्नीसी
प्रेमरत्न	निर्मय सिन्धु	शुक बहत्तरी
बनयात्रा	ज्ञान माला	अपूर्व कथा अन्त्यात् गुल-
भजनावली	दैवशा भरणा	वकावली
बारह मासा फकीर अल्ला	ज्ञान चालीसी	गुलसनोबर नागरी
वरदा	शङ्कर दिग्विजय भाषा	चित्र चन्द्रिका
बारह मासा बलदेव प्रसा-	योग बाशिष्ठ देव नागरी में	छन्दोगी विपिङ्गल
दकृत	मार्कण्डेय पुराण	हिदायत नामा माला गुजरी
कृष्ण सागर	वैताल पञ्चीसी	हिदायत नाम बन्दोबस्त
हारीत स्मृति नागरी	दान लीला नागलीला	विराट्थी की प्रथम पुस्तक
भगवद्गीता सटीक नागरी	सभा विलास	बाला बोध
रामायण राम विलास	विक्रम विलास	कानून ॥
यमुना लहरी	दुन्दुजाल नागरी	ताजी रात हिन्द अन्त्यात्
षट्पञ्चाशिका	कायस्थ कुल भास्कर	एक ४५ मन् १०५३ ई०
कल्पसूत्र भाषा	क्रिस्न गोपी चन्द भरतरी	एक २५ मन् १०६६ ई०
विनय पत्रिका सटीक	बहार विन्नावन	जाबिते फौजदारी
किताब पटवारी ४ भाग	पद्यावती खण्ड आलखंड	मजमूदा एक लगान अ-
रस राज	ल्लाघनी वशेर बनारसी	वध जिसके साथ नीचे लि-
कृष्ण प्रिया	युगल विलास	खेहुये एक संयुक्त हैं ॥
ज्ञान स्वरोदय	जनक पञ्चीसी	एक २४ मन् १०६५ ई०

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
एक २० सन् १८७० ई० जर्दीद	भाषा चन्द्रोदय	आराय काण्ड
एक १६ सन् १८६९ ई०	दुर्गिनरतन का दुर्गिहास	किष्किन्धा काण्ड
एक १० सन् १८६६ ई०	गरिमत लता १ भाग	सुन्दर काण्ड
एक २० सन् १८६६ ई०	तथा २	लंका काण्ड
एक २४ सन् १८७० ई०	तथा ३	उत्तर काण्ड
एक १० सन् १८५६ ई०	गरिमत प्रकाश १ भाग	अक्षरारम्भ
एक ५ सन् १८६१ ई०	तथा २	भाषा तत्त्व दीपिका
एक १० सन् १८६२ ई०	तथा ३	बाला भूषण
एक २६ सन् १८६७ ई०	तथा ४	हिदायत नामा मुदरिसा-
एक १० सन् १८६७ ई०	शिशु बोध	न हलकह बन्दी
एक १० सन् १८६७ ई०	पशुचिकित्सा	शिक्षा बत्नी
एक १० सन् १८६७ ई०	क्षेत्र चन्द्रिका १ भाग	भोज प्रबन्ध सार
एक १८ सन् १८६८ ई०	तथा २	राजनीति
एक १८ सन् १८७१ ई०	रेखा गरिमत १ भाग	स्त्रियों की हितोपविका
अर्थात् काच जल गान	तथा २	अवध भूगोल
मुमकिन कमार बी वशि-	सरज पुर की कहानी	कवित्व रत्नाकर
मास्ती	विद्या चक्र	भूगोल दर्पण
एक १२ सन् १८७४ ई०	भूगोल तत्त्व	बीज गरिमत १ भाग
एक १० सन् १८७२ ई०	पदार्थ विद्या सार	तथा २
सरिमत तालीम की पुस्तकें	बर्ण प्रकाशिका १ भाग	क्षेत्र व्यवहारिक तत्त्व
विद्या की नेव नागरी अक्षरों में	तथा २	महा भारत भाषा छन्द प्र-
विद्या की नेव कैथी अक्षरों में	वर्ण प्रकाशिका कैथी	बन्ध में जो श्री मन्महा राजा
भाषा लघु व्याकरण	१ भाग	धि राज उदित नारायण मिं
१ भाग	तथा २	हजी काशी नरेशने गो कुल
तथा २	मंगल कोष	नाथादिक वी श्रुओं मे रचना
धात्वर्त्तव	पत्र दीपिका	कराय कलकत्ते में छपाया
अक्षरा बत्नी	भारत खण्डिका	था वही श्री युत माधव सिंह
अक्षर दीपिका	क्षेत्र प्रकाश	गढ़ अमेठी नरेश की सहाय
विद्यातुर	पत्र हिनेषिणी	तां और अनुशासक इत्य
बाल बोध	रामायण सार काण्ड	चालय में अत्युत्तम देप के
	बाल काण्ड	पुस्तक कर्म में १६ पर्व बड़ी
	अयोध्या काण्ड	शुद्धता में छपा है ॥

metric
gr



